# लीडरशिप अकादमी म.प्र.

# (SCERT M.P.)

प्रधानाध्यापकों के प्रशिक्षण पश्चात विद्यालय में हुये
समेकित सार्थक बदलाव की कहानियाँ

# कहानी संग्रह

# E- Flip Book



राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल, मध्य प्रदेश

# आमुख

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं बेहतर शाला नेतृत्व एवं प्रबंधन हेतु, मध्यप्रदेश में विगत 3-4 वर्षों में राज्य स्तर पर, प्रधानाध्यापक नेतृत्व विकास प्रशिक्षण आयोजित किये गए हैं। शाला नेतृत्व एवं प्रबंधन कौशलों के विकास हेतु राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा विभिन्न चरणों में आयोजित 16 दिवसीय और 10 दिवसीय ये प्रशिक्षण, NCERT तथा NCSL NIEPA के मार्गदर्शन और गाइडलाइन के आधार पर संचालित किये गए। फलस्वरुप विद्यालयों में शैक्षिक गुणवत्ता के विभिन्न क्षेत्रों और आयामों मे सार्थक बदलाव हुए हैं।

इन प्रशिक्षणों में, राष्ट्रीय स्तर के विशेषज्ञ, श्री शिव कुमार (बिहार राज्य) NCERT & NIEPA और राज्य स्त्रोत समूह के विशेषज्ञ एवं कार्यक्रम प्रमुख श्री प्रकाश देव द्वारा MSC प्रशिक्षण एवं गाइडलाइन के अनुसार प्रत्येक जिले से डाईट एवं प्रधानाध्यापकों के दल को राज्य स्तर पर सघन उन्मुखीकरण प्रदान किया गया। विषेषज्ञों द्वारा, लीडरशिप अकादमी एवं राज्य द्वारा प्रदान किये गये लर्निंग आउटकम, दक्षता उन्नयन तथा शाला प्रधानाध्यापक जैसे पूर्व प्रशिक्षणों के आधार पर विद्यालयों में आये सार्थक बदलावों को सफलता की कहॉनियों के रुप में तैयार करने हेतु प्रधानाध्यापकों को प्रेरित किया गया। नतीजन अधिकांश प्रधानाध्यापकों द्वारा अपने विद्यालय की सफलता की कहानियां तैयार की गई।

प्रधानाध्यापकों के द्वारा विद्यालय स्तर पर सबसे सार्थक बदलाव **(Most Significant Change)** प्रशिक्षण आधारित, सफ़लता की कहानी एवं वीडियो का प्रस्तुतिकरण अपने-अपने ज़िले में डाइट स्तर पर किया गया। ज़िला कोर समूह द्वारा डाइट स्तर पर चयनित सर्वश्रेष्ठ 3 कहानियों का प्रस्तुतीकरण राज्य स्तरीय समिति के समक्ष किया गया। विषय मर्मज्ञ श्री प्रकाश देव की अध्यक्षता में गठित राज्य स्तरीय चयन समिति में पूर्व यूनिसेफ कंसलटेंट सुश्री ज्योति भाटिया, श्रीमती करिश्मा बाजपेई, श्री अश्विनी त्रिपाठी एवं लीडरशिप एकेडमी की रिसोर्स पर्सन तथा एजुकेशन एक्सपर्ट श्रीमती शीतल शर्मा, श्री शैलेन्द्र आचार्य, श्री सुरेन्द्र भदौरिया, श्री सज्जाद अहमद कुरैशी, श्री राकेश देवांग, श्री ताज फराज खान, श्री मनोज़ मांझी जैसे अनुभवी शामिल थे। समिति द्वारा 3 दिनों तक लगातार परखने और विचार मंथन के पश्चात, सर्वश्रेष्ठ 70 कहानियों तथा 15 वीडियोज़ का चयन किया गया।

इसके पश्चात तात्कालीन संचालक राज्य शिक्षा केन्द्र श्रीमती आईरीन सिंथिया, अपर संचालक श्री ओ.एल. मण्डलोई, श्री अशोक पारीक तथा श्री अतुल डनायक एवं नियंत्रक शिक्षक प्रशिक्षण तथा नोडल अधिकारी श्री उस्मान खान एवं प्रशिक्षण सलाहकार डॉ. प्रमिला सिंह और स्त्रोत्र दल सदस्य श्री राकेश देवांग के मार्गदर्शन में अंतिम रूप से 34 कहानियों तथा 5 वीडियोज़ का चयन किया गया। इन्हीं सफ़लता की कहानियों को एक साथ संकलित करके, राज्य शिक्षक प्रशिक्षण प्रकोष्ठ एवं लीडरशिप एकेडमी द्वारा राज्य स्त्रोत समूह के विशेषज्ञों के सहयोग से इस डिज़िटल फ्लिप बुक का निर्माण किया गया है। फ्लिप बुक के निर्माण कार्य को मूर्त रुप प्रदान करने में सुश्री नेहा साबरे के विशेष सहयोग से श्रीमती शीतल शर्मा एवं श्रीमती करिश्मा बाजपेई द्वारा सार्थक प्रयास किया गया।

इस डिज़िटल फ्लिप बुक को NCSL NIEPA को प्रेषित कर दीक्षा पोर्टल पर ऑनलाइन उपलब्ध कराये जाने के प्रयास हैं। जिससे देश के ह्रदय प्रदेश, मध्यप्रदेश से उपजी ये सफलता की कहॉनिया, संपूर्ण राष्ट्र में विस्तारित हो सकें। शिक्षा और शैक्षिक प्रबंधन से जुड़े कुछ गिनती के लोग भी अगर इन प्रेरक प्रसंगों से अनुप्राणित हो सकें, तो यह इस प्रयास की सफलता होगी। इसी आशा के साथ यह डिजिटल क़िताब आपके सम्मुख है।

लोकेश कुमार जाटव,IAS
आयुक्त,
राज्य शिक्षा केन्द्र
स्कूल शिक्षा विभाग

Government of Madhya Pradesh
Rajya Shiksha Kendra,
School Education Department

# संदेश

विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना और उनका सर्वांगीण विकास हमारा लक्ष्य है। इस लक्ष्य पूर्ति में प्रधानाध्यापकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। मध्यप्रदेश में राज्य शिक्षा केंद्र ने इस दिशा में पिछले कुछ वर्षों में शिक्षा की गुणवत्ता सुधार हेतु कई कदम उठाए हैं। राज्य में शिक्षक शिक्षा प्रणाली को मजबूत करने पर विशेष ध्यान दिया गया है । जिसके तहत राज्य शिक्षा केन्द्र /एस.सी.ई.आर.टी; अंतर्गर्त (नीपा) स्थापित लीडरशिप अकादमी म.प्र. द्वारा राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान दिल्ली, नीपा, राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व विकास केंद्र, (एन सी एस एल) और राष्ट्रीय लीडरशिप अकादमी के सहयोग से वर्ष 2015 से लगातार सरकारी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को नेतृत्व क्षमता संवर्धन के उद्देश्य से गहन रुप से प्रशिक्षित किया गया है जिससे वे अपने विद्यालयों को उत्कृष्टता के केंद्र में रूपांतरित कर सकें।

यह कार्यक्रम केवल एक बार का प्रशिक्षण कार्यक्रम न होकर विद्यालय प्रमुखों के साथ निरंतर व गहन संलग्नता बनाए हुए है । जो विद्यालय नेतृत्व विकास हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में उल्लेखित सात मुख्य क्षेत्रों को आधार मानते हुए संचालित किया जा रहा है। जिसका उद्देश्य विद्यालय रूपांतरण हेतु विद्यालय प्रमुखों में ज्ञान,कौशल तथा नेतृत्व दृष्टिकोण को विकसित करना है।

मध्यप्रदेश में राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा विशेषज्ञों एवं राज्य स्त्रोत दल द्वारा वर्ष 2015 से लगातार जिला स्त्रोत दल और डाइट के स्टाफ को राज्य स्तर पर प्रशिक्षित किया जा रहा है। साथ ही जिला स्तर पर प्रधानाध्यापकों के साथ सतत् प्रशिक्षण कार्यशालाओं की श्रृंखला,रिफ्रेशर वर्कशॉप और अकादमिक चर्चा आयोजित की जाती हैं। जिसके परिणाम स्वरूप विद्यालयों में कई सार्थक बदलाव हुए है।

इस दस्तावेज़ में मध्य प्रदेश के प्रधानाध्यापकों द्वारा किये गये प्रयासों से विद्यालयों में हुए सार्थक बदलावों की कहानियों को नीपा ,एन.सी.एस.एल द्वारा निर्धारित प्रक्रिया और मापदंडों से चिन्हित किया है। इस प्रयास में डॉ. सुनीता चुग , डॉ. चारु स्मिता मलिक एन.सी.एस.एल नीपा एवं विशेषज्ञों के सहयोग व मार्गदर्शन में राज्य स्तर पर लीडरशिप अकादमी द्वारा बनाए गए सबसे सार्थक बदलाव (एम.एस.सी). कोरग्रुप के सदस्यों द्वारा दिए गए विशेष तकनीकी सहयोग से इसे मूर्त रुप प्राप्त हो सका है।

आशा है प्रदेश के प्रधानाध्यापकों द्वारा किये गये सार्थक बदलावों की ये कहानियाँ ,मध्यप्रदेश तथा देश अन्य राज्यों के प्रधानाध्यापकों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी।

शुभकामनाओं सहित,

(लोकेश कुमार जाटव)

## निर्देशन

श्रीमती आईरीन सिंथिया **जे.पी**

तत्कालीन संचालक

राज्य शिक्षा केन्द्र म.प्र.

## मार्गदर्शन

**श्री ओ.एल. मण्डलोई,** अपर संचालक, राज्य शिक्षा केन्द्र

**श्री पंकज मोहन,** नियंत्रक वित्त, राज्य शिक्षा केन्द्र

**डॉ. अशोक पारीक,** नियंत्रक पाठ्यक्रम, राज्य शिक्षा केन्द्र

**श्री अतुल डनायक,** नियंत्रक शिक्षक शिक्षा, राज्य शिक्षा केन्द्र

## सफलता की कहानी कार्यक्रम प्रमुख

**श्री प्रकाश देव**, शिक्षा विशेषज्ञ

## समन्वय

**श्री उस्मान खान,** नोडल अधिकारी ,लीडरशिप अकादमी

एवं नियंत्रक शिक्षक प्रशिक्षण, राज्य शिक्षा केन्द्र

## सह समन्यक

**डॉ. प्रमिला सिंह**, राज्य शिक्षा केन्द्र

**श्री राकेश देवांग**, स्त्रोत् समूह सदस्य

## संपादन

**श्री अमिताभ अनुरागी,** मीडिया समन्वयक, राज्य शिक्षा केन्द्र

## कंपोजिंग

**सुश्री नेहा साबरे**, राज्य शिक्षा केन्द्र

## फिलिप बुक निर्माण विशेषज्ञ दल

**श्री अश्विनी त्रिपाठी, सुश्री ज्योति भाटिया, श्रीमती करिश्मा बाजपेई, श्रीमती शीतल शर्मा, श्री सुरेन्द्र भदौरिया, श्री शैलेन्द्र आचार्य, श्री सज्जाद अहमद कुरैशी, श्री ताज फराज खान और श्री मनोज़ मांझी**

## आयाम


विद्यालय नेतृव्व का अभ्यास एवं दृष्टिकोण:- ( आयाम 1) 5

1. शासकीय माध्यमिक विद्यालय क्रमांक 51, कुलकर्णी भट्टा विकासखण्ड - इंदौर शहरी, जिला- इंदौर ,मध्यप्रदेश 6-10
2. शासकीय माध्यमिक विद्यालय जनकपुर,विकासखण्ड – बाड़ी, जिला – रायसेन, मध्यप्रदेश 11-14
3. शासकीय माध्यमिक शाला कुकडोल विकासखंड - गोगांवा, जिला - खरगोन ,मध्यप्रदेश 15-19
4. शासकीय माध्यमिक विद्यालय गेंहूखेड़ी विकासखंड नरसिंहगढ़, जिला राजगढ़ (म.प्र.) 20-27
5. शासकीय माध्यमिक शाला ,रातातलाई विकासखण्ड हरदा, जिला-हरदा (म.प्र.) 28-33
6. शासकीय माध्यमिक विद्यालय भीलखेड़ा विकासखंड- बड़वानी, जिला – बड़वानी, मध्य प्रदेश 34-36
7. शासकीय माध्यमिक शाला कुमड़ी विकासखण्ड - औबेदुल्लागंज, जिला- रायसेन मध्य प्रदेश 37-40
8. शासकीय माध्यमिक शाला खामखेड़ा विकासखंड – देवरी, जिला - सागर मध्य प्रदेश 41-44
9. शासकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय खिरकिया विकासखंड – खिरकिया , जिला – हरदा (म.प्र.) 45-49
10. शासकीय माध्यमिक विद्यालय पिपरिया (भाण्डी) विकासखण्ड - वारासिवनी जिला – बालाघाट 50-53
11. शासकीय प्रवीण कुमारी कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय क्रमांक 1 विकासखंड – रीवा, जिला – रीवा (म.प्र.) 54-59

विद्यार्थियों के लिए शिक्षण, अधिगम प्रक्रिया:- (आयाम-2) 60-61

1. शासकीय माध्यमिक शाला, सोनोरा विकासखंड मुलताई - जिला-बैतूल, मध्य प्रदेश 62-65
2. शासकीय माध्यमिक विद्यालय, भलमुड़ी विकासखंड – कोतमा ,जिला - अनुपपुर ,मध्यप्रदेश 66-70
3. शासकीय माध्यमिक विद्यालय मिन्डलाखेड़ा विकासखंड मल्हारगढ़ जिला- मंदसौर, मध्यप्रदेश 71-74
4. शासकीय माध्यमिक विद्यालय कुमरयाना मवई, विकासखंड – टीकमगढ़ ,जिला- टीकमगढ़ मध्यप्रदेश 75-83

विद्यार्थी सकेंद्रित शिक्षा : (आयाम – 3) 84

1. शासकीय माध्यमिक विद्यालय मेवासा विकासखंड – शाजापुर, जिला- शाजापुर 85-90
2. शासकीय माध्य मिक विद्यालय बरहा विकासखंड – गौरिहार, जिला छतरपुर 91-94
3. शासकीय माध्य–मिक विद्यालय बेरजा विकास खण्ड् मुरार ग्रामीण्, जिला-ग्वालियर 95-100
4. शासकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय क्रमांक 1 हाथीखाना विकासखंड – दतिया , जिला – दतिया 101-103
5. शासकीय कन्या माध्यलमिक विद्यालय कान्ही वाड़ा विकासखंड – सिवनी , जिला – सिवनी 104-108
6. शासकीय माध्यमिक विद्यालय बोरखेड़ी काँवल विकासखंड – सुसनेर, जिला- आगर- मालवा 109-111
7. शासकीय प्राथमिक विद्यालय सिगुड़ी विकासखण्ड मानपुर,जिला उमरिया 112-116
8. शासकीय प्राथमिक विद्यालय चम्पी विकासखंड – नीमच , जिला – नीमच 117-119

अधिगम के लिए समाज व विद्यालय का सहसंबंध : (आयाम – 4) 120

1. शासकीय कन्या माध्यमिक शाला, माधवगंज शेरपुरा विकासखंड – विदिशा, जिला- विदिशा, मध्यप्रदेश 121-124
2. शासकीय संजय माध्यमिक विद्यालय, पुलिस लाइन नरसिंहपुर विकासखंड - नरसिंहपुर,जिला – नरसिंहपुर,मध्यप्रदेश 125-129
3. शासकीय माध्यमिक शाला खमरिया विकासखंड- नरसिंहपुर, जिला – नरसिंहपुर 130-134
4. शासकीय माध्यमिक शाला सहजपुर, विकासखंड - शहपुरा ,जिला - जबलपुर, मध्य प्रदेश 135-138
5. शासकीय माध्यमिक विद्यालय ,अनुराधागली विकासखंड – गुना ,जिला – गुना, मध्यप्रदेश 139-141
6. शासकीय माध्य-मिक विद्यालय आयपा,खपरिया विकासखंड – सिवनी मालवा ,जिला – होशंगाबाद , मध्य प्रदेश 142-145
7. शासकीय पूर्वमाध्यमिक विद्यालय टिकुरी विकासखंड -रायपुर कर्चुलियान, जिला-रीवा ,मध्यप्रदेश 146-150
8. शासकीय माध्यमिक विद्यालय, भोलहरा विकासखंड – ब्यौसहारी,जिला-शहडोल,मध्यप्रदेश 151-155

# विद्यालय नेतृव्व का अभ्यास एवं दृष्टिकोण : आयाम – 1

हार्वर्ड के प्रध्यापक रिचर्ड एलमर लिखते हैं " नेतृव्व का उदेश्य शैक्षणिक प्रथाओं और प्रदर्शन में सुधार करना हैं।" इसी तरह अमेरिका में ए.एस.सी.डी. द्वारा किए गए अध्ययन दिखाते हैं कि "बच्चों की शिक्षा पर सबसे अधिक प्रभाव कक्षा मे होने वाली पढ़ाई के अलावा, स्कूल के नेतृव्व का ही पड़ता हैं। बेहतरीन प्रदर्शन करेन वाले प्रधानाध्यापक विद्यार्थी के सीखने में 20 प्रतिशत अंकों का अन्तर ला सकते हैं"

एक महत्वपूर्ण में नेतृत्वशैली से संबंधित कुछ विशेषताए होनी चाहिए। जिन्हें वह विभिन्न परिस्थितियों में उपयोग कर सकें, जैसे-

- अंतदृष्टि- एक नेतृत्वकर्ता अपने साथ काम करने वालों की जरूरतों को समझने में सक्षम होना चाहिए।
- लचीनापन- एक नेतृत्वकर्ता को विभिन्न स्थिति में निर्णय लेने और उसे बदलने में सक्षम होना चाहिए।
- भरोसा- एक नेतृत्वकर्ता को साथ काम करने वालों पर भरोसा और दृढ़ विश्वास होना चाहिए।
- समस्या समाधान- एक नेतृत्वकर्ता में समस्या की पहचान करना और उसका प्रभावी समस्या समाधान करने में सक्षम होना चाहिए।
- मूल्यांकनकर्ता - एक नेतृत्वकर्ता को साथ काम करने वालों की परिवक्ता और योग्यता का सटीक मूल्यांकन करने में सक्षम होना चाहिए।

यह संकलन दूसरी शालाओं व शिक्षकों की स्वंय की कार्य श्रमताओं को बेहतर बनाने में मददगर

आयाम-1 कहानी क्रमांक-1

# विद्यालय नेतृत्व का दृष्टिकोण

## शासकीय माध्यमिक विद्यालय क्रमांक 51, कुलकर्णी भट्टा

## विकासखण्ड- इंदौर शहरी, जिला- इंदौर ,मध्यप्रदेश

## यू-डाईस -23260101601

| | |
|---|---|
|  |  |
| विद्यार्थियों का शैक्षणिक सत्र में स्वागत | लाइब्रेरी में अध्यनरत विद्यार्थी |

जहाँ विद्यार्थी हँसते हैं, वहाँ भगवान बसते हैं| ऐसी ही एक सोच के साथ काम करने वाला विद्यालय हैं शासकीय माध्यमिक विद्यालय क्रमांक 51, कुलकर्णी भट्टा जोकि माँ अहिल्या की नगरी इंदौर जिले में एक छोटी सी बस्ती में स्थित हैं| इंदौर जिले को अब स्वच्छता के लिए भी सम्पूर्ण देश में जाना जाता हैं| यह बस्ती सामाजिक व आर्थिक रूप से अत्यंत पिछड़ी हुई हैं लेकिन यहाँ का मजदूर पालक भी अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा दिलवाने के लिए अशासकीय विद्यालयों में पढ़ने के लिए भेजते हैं| जिस कारण इस बस्ती के आस - पास बहुत से छोटे - छोटे अशासकीय विद्यालय खुल गए हैं| वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए, इस विद्यालय का ध्येय हैं कि शासकीय विद्यालयों की खोयी हुई गरिमा को पुन: स्थापित किया जाए| जहाँ शैक्षिक, भौतिक व भावनात्मक ढाँचे को मजबूती प्रदान की जा सके|

प्रधानाध्यापक द्वारा महसूर किया गया कि शासकीय विद्यालयों की साख को बचाने के लिए सबसे जरुरी हैं शिक्षकों और विद्यार्थियों के भावनात्मक पहलु पर काम करना| जैसा कि हम सभी जानते हैं कि शासकीय विद्यालयों को लेकर कई सारी भ्रांतियाँ हैं जिसमें शिक्षक या बच्चों को जाने - अनजाने

में किए गए बातों और कामों द्वारा भावनात्मक रूप से ठेस पहुँचाई जाती हैं जैसे - सारे कंकड़ - पत्थर हमारे हिस्से आते हैं, आप कुछ नहीं कर पाएंगे, सारे कुएँ में भांग मिली हैं, तुम कमज़ोर हो, तुम्हारा कुछ नहीं हो सकता, पढ़-लिख कर कौन से कलेक्टर बन जायेंगे, **सरकारी स्कूलों में तो ऐसा ही होता हैं|** इसी मजबूत सोच से एक बार ये मजबूत दीवारें टूट जायें, शिक्षक, विद्यार्थी व विद्यालय अपनी सीमित सीमाओं से बाहर निकल जायें तो कुछ किया जा सकता हैं| अब एक नवीन विद्यालय, नवीन विचार, नवीन दृष्टिकोण का निर्माण करना आवश्यक था|

वर्षों के अथक प्रयासों में एक सबसे महत्वपूर्ण प्रयास हैं पालक शिक्षक मीटिंग जिसे हमने प्रतिष्ठित बड़े पब्लिक विद्यालयों की तर्ज पर नाम दिया हैं **ओपन हाउस मीटिंग|** जो बदलाव का प्रतीक भी बना, जिसके लिए योजनानुसार माह के अंतिम कार्य दिवस को चुना गया| इस हेतु प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय में दर्ज सभी 449 बच्चों के पालकों को विधिवत पत्र देकर आमंत्रित किया गया एवं ससम्मान आग्रह किया गया कि अंतिम कार्य दिवस में उन्हें कक्षाओं में जाकर विद्यार्थियों के प्रदर्शन का जायज़ा लेना हैं|

प्रारम्भ में सब कुछ इतना आसान नहीं था| पालकों को विश्वास में लेना, उनका विश्वास जीतना तथा उन्हें समझाना कि अपने बच्चों के लिए काम के बीच में से थोड़ा समय निकालना कितना महत्वपूर्ण हैं, प्रधानाध्यापक के विद्यालय नेतृत्व के दृष्टिकोण का और सभी 12 शिक्षकों द्वारा किए गए साझे, लंबे व निरंतर प्रयास का| ओपन हाउस मीटिंग में अब लगभग 80 से 90 प्रतिशत पालक पहुँचने लगे| परिणाम स्वरूप बच्चों का प्रदर्शन बेहतर होकर उनकी उपस्थिति का प्रतिशत भी बढ़ा हैं| पालकों की संतुष्टि बढ़ने के साथ शासकीय विद्यालय पर भरोसा भी बढ़ा हैं| गत वर्ष लगभग 200 प्रवेशित बच्चों में से 90 विद्यार्थी अशासकीय विद्यालयों से थे|

अगला प्रयास था, हाउस निर्माण - विद्यार्थियों की सोच, परिवेश अथवा परिस्थितियाँ भिन्न होते हुये भी बच्चों को समान संकल्पना से प्रेरणा मिले ऐसा प्रयास किया गया| विद्यार्थी, विद्यालय में आपस की प्रतिस्पर्धा से सीखेंगे, तत्पश्चात अंतर्विद्यालय, जिला स्तरीय, राज्य स्तरीय व आगे की प्रतिस्पर्धाओं के लिए तैयार हो सकेंगे| ऐसी सोच के साथ चार हाउस का निर्माण किया गया एवं उनके नाम दिये गए, **ऑनेस्ट** (HONEST- ईमानदार), **पोलाइट** (POLITE-विनम्र), **पंक्चुअल** (PUNCTUAL-समय का पाबंद) एवं **डिसिप्लिण्ड** (DISCIPLINED- अनुशासित)

विद्यार्थियों की बैठक व्यवस्था भी कक्षा में हाउस अनुसार ही की गई ताकि कक्षा में गतिविधि व खेल करवाने में सुविधा हो| प्रोजेक्ट कार्य, कक्षा कार्य व गृहकार्य, जाँच कार्य में सुविधा हो| विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन सामान्य तरीके से हो| विद्यार्थी को अपने हाउस के नाम पर गर्व हो एवं उस का महत्व समझे साथ ही उस नाम के अनुरूप बनने की कोशिश करे|

हमेशा से ही शासन की समस्त योजनाओं जैसे - हेड स्टार्ट, मॉडल क्लस्टर, विज़न, ए एल एम, शाला सिद्धि, दक्षता उन्नयन, आस-पास कि खोज आदि को तन - मन से निर्वाह करना हमारी प्राथमिकता रही हैं| समय-समय पर प्राप्त प्रशिक्षण **विशेषकर प्रधानाध्यापकों का नेतृत्व क्षमता प्रशिक्षण** बहुत उपयोगी रहा हैं|

सबसे विशेष एवं मज़बूत पक्ष जो बदलाव के लिए ज़िम्मेदार हैं वह हैं समय विभाग चक्र में अध्ययन के अतिरिक्त 30 मिनट की **प्रार्थना-सभा गतिविधि** जिसमें संगीत एवं वाद्य यंत्रों के साथ प्रार्थना, बच्चों द्वारा समाचार वाचन, सुविचार, 15 मिनट का शिक्षकों के द्वारा लिया जाने वाला **समूह शिक्षण** प्रभावी रहा जिसका बहुत ज़्यादा सकारात्मक प्रभाव पड़ा हैं|

विशेष ध्यान रखा गया कि एक घंटे की अन्य व्यावसायिक गतिविधियाँ व खेलकूद विद्यार्थियों के सम्पूर्ण शारीरिक व मानसिक विकास के लिए अनिवार्य हो| इस सोच के साथ कि पढ़ाई लिखाई के साथ स्वास्थ्य एवं रचनात्मक विकास, दिये गए पाठ्यक्रम के अतिरिक्त महत्वपूर्ण हैं| जो विद्यार्थियों में भीड़ से हट कर ज़िंदगी निर्वाह करने के अनेक विकल्प प्रदान करते हैं| इन गतिविधियों को बचपन से अपनी दिनचर्या में शामिल करके हम बच्चों में डॉक्टर और इंजीनियर बनने के अतिरिक्त नामी कलाकार, खिलाड़ी और एक बेहतर इंसान बनने की भी क्षमता उत्पन्न करते हैं|

**प्रारम्भ से ही** इस सोच के साथ कि बच्चों को अभिव्यक्ति की सम्पूर्ण आज़ादी हो| विद्यालय उनका हैं एवं प्रत्येक वस्तु का उपयोग वे निःसंकोच कर सकते हैं, की परम्परा का भी विकास किया गया| साथ ही अनुशासन, नियमितता, समय की पाबंदी, व्यवस्था, दृढ़ता, विनम्रता, सबसे बढ़कर धैर्य जैसी आदतें विकसित की एवं कराई गई|

शिक्षक एवं अन्य सहकर्मी साथियों के सहयोग से योजनाओं का निर्माण व बच्चों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास का संकल्प लिया गया| भवन को साधन-सम्पन्न व् आकर्षक बनाना, बाउंड्री वाल रिपेयरिंग, पौधारोपण, कंप्यूटर कक्ष, स्मार्ट क्लास, सुसज्जित पुस्तकालय, विज्ञान प्रयोगशाला, वर्कशॉप कक्ष, न्यूज़ पेपर पत्र-पत्रिकाएँ स्टैंड, खेलकूद सामग्री, संगीत यंत्र, भोजन कक्ष, स्वच्छ पेयजल, बालक-बालिकाओं हेतु पृथक प्रसाधन आदि सम्पूर्ण सुविधाएँ जुटाने का एक बड़ा लक्ष्य था|

सुविधाएँ जुटाने के पश्चात विदयार्थियों को पुस्तकों से दोस्ती करना सिखाया गया| इसके लिए पुस्तकालय में सभी प्रकार की पुस्तकों का सृजन एवं उन्हे पृथक-पृथक सुसज्जित किया गया जिससे बच्चों को पुस्तकों का चुनाव करने में आसानी होती गई, साथ ही पुस्तकालय पंजी तथा बच्चों द्वारा ही पुस्तकें प्राप्त करने एवं जमा करने की सुविधा भी विकसित की गई|

विद्यार्थी तकनीकी रूप से स्मार्ट बने, स्वयं लैपटॉप का प्रयोग करें, इंटरनेट पर ज्ञान और दुनिया को खोजें, उसके निरंतर प्रयास किए गये| स्मार्ट कक्षा में डिजिटल लेसन तथा वीडियोज़ के माध्यम से सीखना-सिखाना सुगम हो गया हैं एवं इन सभी प्रयासों का फल हैं कि इस शाला के विद्यार्थी जिला और राज्य स्तरीय प्रतिस्पर्धाओं में भाग ले कर सफलता प्राप्त कर रहे हैं|

| | |
|---|---|
|  |  |
| **वार्षिक उत्सव** | **पलक संघ बैठक** |

हमने विद्यार्थियों के लिए उनकी अपनी पसंद के अनुसार कार्यशाला कक्ष का सृजन सभी सहकर्मी शिक्षकों के सहयोग से किया| सप्ताह में एक बार संगीत का कालखंड भी लगता हैं| विद्यार्थी गीत, संगीत, वंदना, प्रार्थना के साथ वाद्य यंत्र बजाना भी सीखते हैं | साथ ही सभी आवश्यक उपकरणों से लैस प्रयोगशाला को भी विकसित किया गया हैं जिससे विद्यार्थियों में काल्पनिक क्षमता व वैज्ञानिक जिज्ञासा पैदा हुई हैं|

शारीरिक खेलों जैसे बैडमिंटन, खो खो, दौड़ के साथ ही आंतरिक खेल जैसे की शतरंज, स्क्रेबल, भारत एवं मध्य प्रदेश के नक्शों के पज़ल आदि के बड़े बड़े बोर्ड बनाए हैं जिससे बच्चों का मानसिक बल और सशक्त बने|

बाल कैबिनेट,जिसे की पूर्व में छात्र संघ के नाम से जाना जाता था, को अत्यंत सशक्त बनाकर नेतृत्व क्षमता का गुण प्राथमिकता से लिया गया हैं| बाल कैबिनेट का कार्य विभाजन दिनवार व समूहवार किया गया हैं| प्रत्येक समूह में 12 से 14 सदस्य होते हैं| जो प्रार्थना सभा व शाला अनुशासन से लेकर मध्यान्ह भोजन एवं अन्य सभी कार्य संपादित करते हैं|

विद्यालय में प्रतिवर्ष होने वाला वार्षिकोत्सव जो बड़े अशासकीय विद्यालयों की तर्ज पर आयोजित किया जाता हैं, जिसमें शास्त्रीय नृत्य, वाद्य यंत्र, लोक नृत्य, गीत, कव्वाली इत्यादी

विधाओं का बच्चों द्वारा उच्च-स्तरीय मंच प्रदर्शन किया जाता हैं जिसमें मंच संचालन स्वयं बच्चों द्वारा करवाया जाता हैं| जिसका संदेश बस्ती में दूर-दूर तक पहुँचा हैं व आकर्षण भी बढ़ा हैं एवं लगातार जारी हैं|

अशासकीय विद्यालयों जैसी गणवेश में बैग लटकाए विद्यार्थी विद्यालय समय से पहले ही प्रतिदिन गेट पर लाइन लगाए नज़र आते हैं, और इसका पूरा श्रेय इन छोटी - छोटी कोशिशों को जाता हैं| इन सभी प्रयासों से विद्यार्थियों की उपस्थिति, सीखने एवं प्रदर्शन में दृश्यमान परिवर्तन आया हैं|

**अनुलता सिंह**
**प्रधानाध्यापक**
**शासकीय माध्यमिक विद्यालय क्रमांक 51, कुलकर्णी भट्टा**
**विकासखण्ड- इंदौर शहरी, जिला इंदौर मध्यप्रदेश**

आयाम-1 कहानी क्रमांक-2

# शासकीय माध्यमिक विद्यालय जनकपुर,
# विकासखण्ड - बाड़ी, जिला - रायसेन ,मध्यप्रदेश
# यू - डाईस - 2334011170

| | |
|---|---|
|  |  |
| विद्यालय परिसर | शैक्षणिक भ्रमण शौर्य स्मारक - भोपाल |

भारत वर्ष की हृदय स्थली मध्यप्रदेश राज्य के विश्व धरोहरों (यूनेस्को द्वारा घोषित सांची बौद्ध स्तूप एवं भीम बैठका शैलाश्रय) से समृद्ध जिला रायसेन से 95 कि.मी. दूर एक छोटा सा ग्राम जनकपुर हैं, जो आर्थिक रूप के बहुत पिछड़ा हुआ हैं। समुदाय अन्य पिछड़ा वर्ग बाहुल्य हैं, जिसकी जीविकोपार्जन का मुख्य साधन कृषि, मजदूरी एवं सब्जियाँ उत्पादन हैं। ग्राम में शासन द्वारा वर्ष 1961 में प्राथमिक विद्यालय की स्थापना की गयी, जिसका वर्ष 2003 में माध्यमिक विद्यालय में उन्नयन किया गया।

ग्रामीण अंचल एवं आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण विद्यार्थी अपने अभिभावकों के व्यवसाय में हाथ बंटाते थे जिससे विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति अनियमित बनी रहती थी। विद्यालय व उसके आसपास का परिवेश अस्वच्छता से परिपूर्ण था शौचालय का अभाव, विद्यार्थियों में नैतिक शिक्षा, अनुशासन, उचित बैठक व्यवस्था, शिक्षण अधिगम सामग्री, विज्ञान, गणित किट का पूर्ण अभाव, विद्यालय पहुंच मार्ग सुलभ नहीं था। समुदाय की शिक्षा के प्रति अरूचि विद्यार्थियों को विद्यालय आने के प्रति आकर्षित नहीं कर पा रही थी। समुदाय की आर्थिक - सामाजिक स्थिति विद्यार्थियों को शिक्षा की मुख्य धारा से नहीं जोड़ पा रही थी। जिससे शिक्षण कार्य प्रभावित होता था।

प्रधानाध्यापक ने समस्त शिक्षकों के साथ मिलकर विचार किया कि जीवन को बदलने वाली शिक्षा को समग्र बनाना होगा। विषम परिस्थितियाँ होने के बाद भी समुदाय, शाला प्रबंधन समिति व शिक्षकों के सहयोग से विद्यालय परिसर का परिवेश सुन्दर, स्वच्छ व आकर्षक बनाया। इसके साथ ही विद्यालय प्रबंधन को भी सुदृढ़ किया। आज विद्यालय में सुरक्षित, सुन्दर परिवेश के लिए आकर्षक बाउण्ड्री वॉल निर्माण, उचित बैठक व्यवस्था हेतु 33 सेट फर्नीचर निर्माण, सुन्दर वृक्षारोपण, नियमित साफ - सफाई रखने हेतु सफाई कर्मचारी की व्यवस्था आदि सभी कार्य प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों के अथक प्रयासों से किये गए |

विद्यार्थियों को प्रार्थना सभा में स्वच्छता से होने वाले लाभों को बताते हुए स्वच्छता बनाये रखने के लिए प्रेरित किया जाता हैं | इसके साथ - साथ ही विद्यार्थियों में नेतृत्व कौशल विकसित करने और अपने जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक करने के लिए प्रतिवर्ष विद्यालय में बाल केबिनेट का गठन कर विद्यार्थियों को पदानुसार कार्य वितरित किये जाते हैं तथा उन्हे अपने विद्यालय के प्रति जिम्मेदारियों का अहसास कराकर भविष्य में एक जिम्मेदार नागरिक बनाने का प्रयास सतत् जारी हैं।

आज विद्यालय में एक अच्छा सुसज्जित पुस्तकालय, शिक्षण अधिगम सामग्री की उपलब्धता, रीडिंग कार्नर, लर्निंग कार्नर, रसोई घर, शौचालय, स्वच्छ पेयजल, हवादार शिक्षण कक्ष, गतिविधि कक्ष, बिजली की नियमित आपूर्ति, सरस्वती माता का सुन्दर मंदिर, विद्यालय पहुंच सहज सुलभ मार्ग हैं। प्रधानाध्यापक एवं विद्यालय परिवार के सभी शिक्षकों के सार्थक प्रयासों से विद्यालय को इतना आकर्षक बनाया हैं कि विद्यार्थी स्वत: विद्यालय आने को लालायित रहते हैं तथा प्रकृति से भी जुड़े रहते हैं। इन सभी प्रयासों से विद्यालय को सुचारू रूप से संचालित करने वाली इकाई के रूप में बदला हैं।

| | |
|---|---|
|  |  |
| **पुस्तकालय** | **गतिविधि कक्ष** |

प्रधानाध्यापक एवं साथी शिक्षकों के अथक प्रयासों से विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति में सुधार के लिए विद्यार्थी पोर्टफोलियो फाईल का संधारण, एनेकडॉटल रिकार्ड, मासिक मूल्यांकन, दक्षता उन्नयन, प्रतिभा पर्व, बाल सभा, रंगोली, मेहंदी प्रतियोगिता, खेल महोत्सव, प्रश्न मंच, नैतिक शिक्षा कहानी प्रतियोगिता, शैक्षणिक भ्रमण(आसपास की खोज), विज्ञान मित्र क्लब, विभिन्न राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय प्रतियोगिता जैसे-हिन्दी, गणित ओलंपियाड, मीन्स-कम-मेरिट छात्रवृत्ति परीक्षा, मोगली उत्सव, इंस्पायर अवार्ड प्रदर्शनी में विद्यार्थियों की सहभागिता करवाकर उनकी प्रतिभा को निखारा हैं। शाला प्रबंधन समिति के माध्यम से पालक-शिक्षक बैठक का निरंतर आयोजन विद्यालय में कर विद्यार्थियों की प्रगति, स्वच्छता, आदत, व्यवहार से अवगत कराते हैं। जिसके सार्थक परिणाम विद्यार्थियों की उपलब्धि के रूप में प्रतिवर्ष प्राप्त हो रहे हैं। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण विद्यालयन (डाईट) जिला - रायसेन के संकाय ने भी विद्यालय में परिवर्तन लाने हेतु विद्यालय प्रमुख द्वारा किये गये प्रयासों की सराहना की।

शैक्षणिक भ्रमण और संचालित अन्य गतिविधियों से विद्यालय परिवार समुदाय और विद्यार्थियों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने में सफल रहा हैं | विद्यालय में नियमित उपस्थिति बढ़ी हैं जिसके सुखद परिणाम विद्यार्थियों के राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर की परिक्षाओं, प्रतियोगिताओं में चयन के रूप में सामने आ रहे हैं। जिससे विद्यालय जिले एवं राज्य स्तर पर पहचान बनाने में सफल रहा हैं।

प्रधानाध्यापक नेतृत्व क्षमता विकास प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरान्त विद्यालय परिवार द्वारा शाला सिद्धि के 7 आयामों एवं 46 मानकों पर उत्कृष्ट कार्य किया | दक्षता उन्नयन अंतर्गत गणित एवं हिन्दी में विद्यार्थियों की मूलभूत दक्षताओं को 90 प्रतिशत प्राप्त करने पर विद्यालय राज्य स्तरीय वॉल ऑफ फेम 2018-19 में गोल्ड पुरस्कार के लिए चयनित हुआ। शून्य निवेश नवाचार पर विद्यालय के शिक्षकों द्वारा टीएलएम निर्माण कर नवाचार प्रदर्शनी में सहभागिता की जिसके लिए विद्यालय के शिक्षकों को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। प्रधानाध्यापक को शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर जिला प्रशासन द्वारा गणतंत्र दिवस 2019 के अवसर पर माननीय विद्यालय शिक्षा मंत्री मध्यप्रदेश शासन एवं कलेक्टर रायसेन द्वारा सम्मानित किया गया।

| क्र. | वर्ष | विद्यालय उपलब्धि क्षेत्र |
|---|---|---|
| 1. | 2017-18 | शाला सिद्धि में उत्कृष्ट कार्य हेतु विकासखण्डस्तरीय प्रथम पुरस्कार |
| 2. | 2018-19 | राज्य स्तरीय वॉल ऑफ फेम 2018-19 गोल्ड में विद्यालय का चयन |
| 3. | 2018-19 | विद्यालय प्रमुख को उत्कृष्ट कार्य हेतु जिला स्तरीय शिक्षक पुरस्कार |
| 4. | 2019-20 | विद्यालय प्रमुख को शून्य निवेश नवाचार प्रदर्शनी में उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित किया गया |



**विद्यालय को प्राप्त उपलब्धियाँ**

वर्तमान समय को देखते हुए विद्यालय परिवार का प्रयास हैं कि ग्रामीण समुदाय एवं विद्यार्थियों में पर्यावरण को स्वच्छ रखने के प्रति जागरूकता आए, इसके लिए विद्यालय में बच्चों के साथ पर्यावरण सम्बन्धी विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की जायेंगी| इसके साथ ही आज के परिवेश में शिक्षा के महत्व को देखते हुए अभिभावकों में बच्चों को पढ़ाने की जागरूकता बढ़ी हैं| एवं विद्यार्थियों में शिक्षा प्राप्त करने की उत्सुकता बढ़ी हैं।

**आगामी योजना**

- विद्यार्थियों को आधुनिक शिक्षण पद्धति की उपलब्धता जैसे - शिक्षण के लिए स्मार्ट क्लास रेडियो, टीवी, ऑनलाइन संसाधनों का उपयोग |
- विद्यालय परिसर में खेल मैदान की कमी हैं जिसे विद्यालय परिवार द्वारा निकट भविष्य में शासन के सहयोग से प्राप्त करने का प्रयास हैं।
- विद्यालय की विभिन्न सह- शैक्षिक गतिविधियाँ जैसे -बालसभा,प्रार्थना सभा का नियमित संचालन किया जाएगा |

**राकेश कुमार वर्मा**
**माध्यमिक शिक्षक**
**शासकीय माध्यमिक विद्यालय, जनकपुर**
**जिला - रायसेन ,मध्यप्रदेश**

आयाम-1 कहानी क्रमांक-3

# शासकीय माध्यमिक शाला कुकडोल
## विकासखंड - गोगांवा, जिला - खरगोन ,मध्यप्रदेश
## यू - डाईस- 23271004501

सरकारी विद्यालय एक ऐसी जगह हैं जहाँ गाँव, छोटे कस्बों, फलियों और शहरों के उन बच्चों के सपने पल रहे हैं, जिनकों वाकई सतत मदद सहयोग प्रोत्साहन और प्रेरणा की जरूरत हैं, ताकि सपनों के फूल मुरझाने की बजाय फिर से जीवित हो उठे, सक्रिय हो उठे, और जीवन की चुनौतियों को अवसर के रूप में स्वीकार करने के लिए प्रतिबद्धता के भावों से भर उठे | ऐसे ही माहौल में संचालित हैं खरगोन जिले के विकासखंड गोगांवा में शासकीय माध्यमिक विद्यालय, कुकडोल |

विद्यालय में किसी भी विद्यार्थी को उसकी पारिवारिक और सामाजिक पृष्ठभूमि के कारण हीन भावना से नहीं देखा जाता| इस विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थी भी उतना ही स्नेह और सम्मान के हकदार हैं, जितने किसी कान्वेंट या किसी नामी गिरामी विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थी हैं | उनके सवाल उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने कि किसी अन्य बच्चों के हैं | उनकों भी शिक्षक के ध्यान और दुलार पाने का अधिकार मिलता हैं जितना किसी अन्य बच्चों को | क्योंकि वे भी भारत के नन्हें नागरिक हैं जो भविष्य में अपनी जिम्मेदारी के माध्यम से देश को आगे ले जाने में अपनी भूमिका चुनेंगे और उसका निर्वाह करेंगे |

खरगोन जिला मुख्यालय से 8 किलोमीटर दूर बिस्टान रोड पर ग्राम जामली से 2 किलोमीटर अन्दर इस ग्राम की कुल आबादी 3700 के लगभग हैं | जो मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर हैं | कुकडोल एक बड़ा ग्राम हैं | यहाँ पर शैक्षणिक योग्यता के अनेक आयाम हैं | इस ग्राम की प्रमुख फसल गेंहूँ, कपास, ज्वार, मक्का, सोयाबीन आदि हैं |

हमारी शाला कुकडोल जन शिक्षा केंद्र उमारखली विकासखंड गोगावां के अंतर्गत आती हैं | इस जन शिक्षा केंद्र में कुल 20 प्राथमिक विद्यालय, 7 माध्यमिक शाला, 3 हाई विद्यालय, 1 हायर सेकंडरी विद्यालय और 6 अशासकीय विद्यालय हैं |

माध्यमिक विद्यालय कुकडोल में सत्र 2019 - 20 में कक्षा 6, 7 एवं 8 में 76 छात्र - छात्राएँ दर्ज थे| कक्षा 6 वीं में दर्ज 21 विद्यार्थियों को शिक्षकों द्वारा घर - घर जाकर चिन्हित कर उनका प्रवेश सुनिश्चित किया | शाला में विद्यार्थियों के लिए विभिन्न शासकीय योजनाएँ संचालित की जा रही हैं जैसे - निः शुल्क पाठ्यपुस्तक, रुचिकर मेनू अनुसार मध्यान्ह भोजन, गणवेश राशि आदि | सभी विद्यार्थियों के लिए विद्यालय में बैठने के लिए कुर्सी - टेबल की व्यवस्था हैं| विद्यालय में शिक्षकों द्वारा समय - समय पर शाला प्रबंधन समिति की बैठक में विद्यार्थियों को नियमित रूप से विद्यालय भेजने, गणवेश बनवाने का प्रस्ताव रखा गया हैं| साथ ही विद्यार्थियों के शैक्षणिक स्तर में आ रहे बदलाव को चिन्हित कर पालकों को साझा किया जाता हैं| इसी का परिणाम हैं कि आज विद्यालय में शत - प्रतिशत विद्यार्थी गणवेश पहनकर नियमित रूप से विद्यालय में समय से पहले आते हैं| मध्यान्ह भोजन की बात करें तो सभी विद्यार्थियों पंक्ति में बैठकर एक साथ भोजन ग्रहण करते हैं| विद्यालय परिसर में ही बालक और बालिका के लिए अलग - अलग शौचालय बने हैं|

किसी विद्यालय को लगातार सीखते रहने के लिए यह आवश्यक हैं कि उस विद्यालय का हर व्यक्ति सीखता रहे, अन्यथा  विद्यालय वहीं की वहीं स्थिर हो जायेगा और फिर उसका विकास रुक जाएगा| इसके लिए व्यक्तिगत विकास आवश्यक हैं| इस बात को समझने के लिए हम विद्यालय के एक दिन की दिनचर्या पर नज़र डालते हैं| इस विद्यालय में सभी विद्यार्थी समय से आधा घंटा पहले विद्यालय पहुँच जाते हैं, साथ ही सभी शिक्षक भी समय से पहले पहुँच जाते हैं| सभी विद्यार्थी प्रार्थना सभा में भाग लेते हैं| सत्र 2016 -17 में प्रधानाध्यापक क्षमता विकास प्रशिक्षण के बाद  विद्यार्थी केन्द्रित आयाम पर सबसे अधिक ध्यान दिया| शाला में एक प्रधान पाठक, एक उच्च श्रेणी शिक्षक और एक अतिथि शिक्षक कार्यरत हैं| जिन्होंने विद्यार्थी केन्द्रित आयाम पर कार्य करते हुए वर्ष 2017-18 व 2018-19 में अप्रैल में पूरे माह प्रतिदिन विद्यार्थियों के साथ विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ संचालित की गईं, जिससे बच्चों में पढ़ाई के प्रति रूचि जागृत हुई|

**समस्या एवं समाधान -**

विद्यालय प्रमुख रूप से दो समस्याओं से जूझ रहा था

- बच्चों का लगातार पलायन|
- बच्चों के सीखने का स्तर को बनाये रखना |

इस हेतु प्रधानध्यापक द्वारा विद्यालय सदस्यों के साथ मिलकर क्रमशः समस्याओं को पहचानने और उसके समाधान के लिए काम किये |

विद्यालय अपनी पहली चुनौती से लगातार जूझ रहा था और वह था बच्चों का पलायन | पलायन भी दो तरह का - एक जो कि शहर / राज्य से बाहर का था और दूसरा शहर के अन्दर का | दोनों ही तरह के पलायन से निपटने के लिए बाल केबिनेट के सदस्यों की मदद ली , जिसके बाद कक्षा 7 वीं में अध्ययनरत छात्रा कु. सावित्री पिता नेपाल जो कई दिनों से विद्यालय नहीं आ रही थी उसे प्रधानाध्यापक ने बाल केबिनेट व स्टाफ की मदद से वापस विद्यालय लाया गया| लेकिन यह आसान नहीं था हर बार उसके घर ताला लगा मिलता था| जब पड़ोसियों से बात की तो पता चला कि वह अपने मजदूर माता - पिता के साथ मजदूरी के लिए गुजरात गई हैं| एक माह बाद जब विद्यालय के बच्चों से पता चला कि सावित्री आ गई हैं तो वैसे ही प्रधानाध्यापक अपनी बाल केबिनेट की टीम के साथ बेटी सावित्री के घर पहुँचे| सावित्री के पिता नेपाल ने बताया कि "गरीबी के कारण हम लोग मजदूरी करने के लिए गुजरात चले गए थे| बच्ची छोटी हैं किसके भरोसे छोड़ जाते? इसलिए साथ ले गए थे, लेकिन अब सावित्री को रोज विद्यालय भेजेंगे|" इसके बाद सावित्री भी ख़ुशी - ख़ुशी विद्यालय आने लगी| सावित्री का विद्यालय के बच्चों ने तालियाँ बजाकर स्वागत किया| यह कहानी अकेले सावित्री की नहीं बल्कि विद्यालय के अन्य उन बच्चों की भी हैं जो खेतों में अपने माता - पिता के साथ मजदूरी करने जैसे कपास बीनने, मिर्ची तोड़ने या अन्य कामों से चले जाते हैं| ऐसे बच्चों के पालकों से बाल केबिनेट के सदस्य एवं शिक्षक संपर्क कर बच्चों को विद्यालय लाने के लिए प्रेरित करते हैं| लेकिन जो अपने माता - पिता के साथ गुजरात या अन्यत्र जगह पर पलायन कर जाते हैं ऐसे बच्चों को शाला से जोड़ना एक चुनौती पूर्ण कार्य होता हैं| इस प्रकार बाल केबिनेट एवं शिक्षकों के लगातार प्रयासों से विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति बढ़ने लगी|

विद्यालय पलायन के अलावा एक और समस्या से जूझ रहा था वह थी बच्चों के सीखने का स्तर इसके लिए विद्यालय में ही एक लाइब्रेरी बनाई गई| जिसका उद्देश्य बच्चों में पढ़ने - लिखने को लेकर रूचि पैदा करना, विद्यालय में पुस्तकालय को जीवित कर उसे सीखने - सिखाने की प्रक्रिया का हिस्सा बनाना, कक्षा में कहानियाँ, कवितायें आदि पढ़ना और उन पर कार्य करना, विद्यार्थियों को समालोचनात्मक चिंतन करने के अवसर देना व रूचि जगाना, बच्चों विभिन्न में भाषाई कौशलों का विकास करना हैं| इन उद्देश्यों को लेकर प्रारम्भ की गई लाइब्रेरी से विद्यार्थी स्वयं अपनी - अपनी पसंद की पुस्तकें , पत्रिकाएँ आदि पढ़ने के लिए चुनते हैं| साथ ही विद्यार्थी इन पुस्तकों, पत्रिकाओं को घर भी ले जाते हैं| वर्तमान में इस विद्यालय में लगभग 150 पुस्तकें हैं| इन पत्रिकाओं में जैसे- नंदन, चंपक, नन्हें सम्राट, लोट-पोट एवं अन्य बाल कहानियों की पुस्तकें रखी गई हैं अधिकांश पुस्तकें प्रधानाध्यापक के निरंतर प्रयास और संवाद द्वारा खरगोन के स्थानीय लाइब्रेरी द्वारा उपलब्ध कराई गई हैं |

विद्यार्थी भोजन अवकाश के समय लाइब्रेरी में बैठकर इन पुस्तकों को पढ़ते हैं एवं इन्हें पढ़कर विद्यार्थी बाल सभा में कहानी सुनाना या रोल प्ले / नाटक आदि की प्रस्तुतियां देते हैं|

विद्यालय को स्वयंसेवी विद्यालय से "झोला पुस्तकालय" की सुविधा दी गई हैं, जिसमें एक झोले में कक्षा 1 से 4 स्तर तक की पुस्तकें प्रदान की जाती हैं| यह झोला विद्यालय में 15 - 20 दिन की अवधि के लिए दिया जाता हैं| जिसका इस्तेमाल शिक्षक - शिक्षिकाएं विद्यार्थियों को पढ़ना सिखाना व पढ़ने के लिए करते हैं| इस अवधि के बाद हमारी विद्यालय में दूसरा झोला विद्यालय के द्वारा उपलब्ध करवाया जाता हैं| जिसमें विभिन्न प्रकार की कहानियाँ , पुस्तकें उपलब्ध होती हैं इस विद्यालय में प्रत्येक शनिवार बाल सभा का आयोजन किया जाता हैं| विद्यार्थियों की बाल संसद भी बनाई गई हैं| बाल सभा में छात्र - छात्राएँ अपनी पसंद के गीत - कविता सुनाते हैं, जिससे उनके मौखिक भाषाई कौशल तथा कला का भी विकास हुआ हैं| वर्ष 2018 - 19 में ब्लॉक स्तरीय "कहानी उत्सव" प्रतियोगिता में इस विद्यालय की कुमारी सारिका ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया एवं जिला स्तर पर आयोजित प्रतियोगिता में भी सहभागिता की|

विद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के लिए कई अन्य प्रयास भी किये हैं जैसे - विद्यार्थियों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करना जिसके बाद विद्यार्थी प्रतिदिन स्नान करके विद्यालय आने लगे हैं | विद्यार्थियों के नाख़ून विद्यालय में ही काटे जाते हैं| मध्याहन भोजन के पूर्व भी सभी विद्यार्थी साबुन से हाथ साफ़ करते हैं| भोजन के पश्चात् भी अपने हाथ साफ़ करते हैं|

विद्यालय ने नवाचार करते हुए विश्व हाथ धुलाई दिवस के अवसर पर एक साबुन बैंक की स्थापना की हैं| जिसमें विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थी अपने जन्मदिन पर विद्यालय को एक साबुन भेंट करते हैं|

इसी तरह विद्यालय परिसर में चारों-ओर हरियाली का नज़ारा देखने को मिलता हैं| यहाँ के शिक्षक एवं विद्यार्थीयों द्वारा समय - समय पर पौधारोपण किया जाता हैं| ग्राम पंचायत द्वारा भी परिसर में करीब 500 पौधे लगाये गए हैं| जिसका परिणाम यह हैं कि आज विद्यालय परिसर में अमरुद, करंज, कन्हेर, नीम, पीपल सहित विभिन्न किस्म के पेड़ पौधे लहलहा रहें हैं| परिसर की साफ-सफाई एवं सुन्दरता बनाये रखने के लिए यहाँ ग्राम पंचायत से नल कनेक्शन लिया गया हैं| जिससे विद्यालय का स्टाफ एवं विद्यार्थी मिलकर पौधों को पानी देते हैं| विद्यालय में ही एक खोया पाया बॉक्स रखा गया हैं जिसमें विद्यालय परिसर में अगर किसी विद्यार्थी की कोई वस्तु जैसे पेन, कॉपी, पेंसिल इत्यादि गुम जाती हैं और यदि वह वस्तु किसी अन्य विद्यार्थी को मिल जाती हैं तो वे विद्यार्थी इस सामग्री को खोया-पाया बॉक्स में डाल देते हैं| प्रतिदिन प्रार्थना के समय उस बॉक्स

को खोलकर संबंधित विद्यार्थी को वह वस्तु वापस कर दी जाती हैं| इस प्रकार विद्यार्थियों में ईमानदारी और सत्यनिष्ठा की भावना भी जागृत हो रही हैं|

**आगामी योजना**

- विद्यालय का सोचना हैं कि आने वाले समय में उन्हें कुछ प्रमुख कामों को करना हैं जैसे - विद्यार्थी नियमित रूप से विद्यालय आएँ, इसके लिए बाल कैबिनेट के सदस्यों के साथ पालकों से लगातार संपर्क करना होगा | शिक्षा में नवाचार के प्रयोग करके ग्राम के अन्य
- निजी स्कूलों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को हमारी विद्यालय के प्रति आकर्षित करना होगा|

**रामकृष्ण महाजन**
**प्रधानाध्यापक**
**शासकीय माध्यमिक विद्यालय कुकडोल**
**विकासखंड - गोगांवा,जिला - खरगोन, मध्यप्रदेश**

आयाम-1 कहानी क्रमांक-4

## माध्यमिक विद्यालय गेंहूखेड़ी
## विकासखंड - नरसिंहगढ़ ,जिला- राजगढ़, मध्यप्रदेश
## यू डाईस - 23300310904

मध्यप्रदेश के आकांक्षी जिला राजगढ़ के नरसिंहगढ़ विकासखंड के दूरस्थ संकुल केंद्र शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,तलेन के अंतर्गत एक छोटे से गांव गेहूंखेड़ी के माध्यमिक विद्यालय की। जिससे ग्रामवासियों की आशा टूट चुकी थी, शिक्षा का मार्ग शासकीय विद्यालय से विमुख होकर अशासकीय विद्यालय की अंधाधुंध दौड़ की ओर अग्रसर हो चुका था। लेकिन सफलता का मिलना तो तय हैं, हमें सिर्फ अपने संघर्ष की क्षमता बढ़ानी पड़ती हैं। इसी भाव के साथ विद्यालय को हर क्षेत्र में सफल बनाने के लिए सतत प्रयास किए।



ग्राम में पालक सम्पर्क अभियान ⬆



टी.एल.एम. का प्रस्तुतिकरण ⬆

विभिन्न प्रशिक्षणों जैसे "प्रधानाध्यापक नेतृत्व क्षमता विकास प्रशिक्षण" में दिए गए मार्गदर्शन के अनुसार, विभिन्न नवाचार, गतिविधियां विद्यालय में प्रारंभ की क्योंकि उस विद्यालय में हमें अपने बाल्यकाल का स्मरण हुआ जो प्रेरित कर रहा था रुख मोड़ने एवं विद्यालय के शैक्षणिक स्तर को श्रेष्ठता प्रदान करने के लिए। हम नहीं चाहते थे कि हमारे विद्यालय में पढ़ने वाले छात्र, अशासकीय विद्यालय से किसी भी क्षेत्र में पीछे रहे। इसी संकल्प शक्ति से एकाग्र चित्त होकर प्रयास आरंभ किए। चुनौतियां बहुत थी, कम से कम संसाधनों में कैसे बेहतर शैक्षिक वातावरण हो, इसी के

क्रियान्वयन में साथी शिक्षकों से तालमेल बैठाकर लगातर प्रयास प्रारंभ किए। परिणाम स्वरूप हमारी शाला ने जिले के श्रेष्ठ विद्यालय का पुरस्कार प्राप्त किया|

**प्रमुख चुनौतियाँ :**

**शैक्षणिक चुनौतियाँ** :- कुल दर्ज 31 छात्र छात्राओं का अनियमित विद्यालय आना, नामांकन की कमी, शिक्षकों की कमी, वर्तमान में केवल 2 पदस्थ, उपस्थित छात्र-छात्राओं के निम्न शैक्षणिक स्तर को सुधारना आदि।

**भौतिक चुनौतियाँ**:- कीचड़ युक्त विद्यालय पहुंच मार्ग, गड्डे युक्त उबड़ - खाबड़ खेल मैदान, विद्यालय परिसर की बदतर स्थिति,शौचालय की अव्यवस्था, पीने के पानी का अभाव, बाउंड्रीवाल आदि।

**सामुदायिक चुनौतियाँ** :- अभिभावकों एवं ग्रामीणजनों का विद्यालय से जुड़ाव न होना, प्रमुख चुनौतियां रही। इन सभी चुनौतियों का बिंदुवार समाधान की अलग-अलग योजना बनाकर कार्य प्रारंभ किया, जिसमें ग्रामीणजनों, अभिभावकों,स्थानीय ग्राम पंचायत एवं शाला प्रबंधन समिति ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

**चुनौतियों के समाधान हेतु प्रयास:-**

सन 2015 में विद्यालय प्रभारी के रूप में कार्यभार ग्रहण करने के बाद हमने छात्रों की नियमित उपस्थिति पर कार्य योजना बनाई। घर-घर संपर्क कर अभिभावकों को, अपने बच्चों को नियमित विद्यालय पहुंचाने के लिए प्रेरित किया, यह कार्य इतना आसान नहीं था। लेकिन संकल्प था, जब तक विद्यार्थियों को विद्यालय में गुणवत्ता युक्त शिक्षा मिलना शुरू नहीं हो जाती तब तक सतत प्रयास करना होगा। विद्यार्थी नियमित विद्यालय आएँ, इस हेतु प्रतिदिन विद्यालय आने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहन स्वरूप सम्मानित किया जाने लग|

जिससे अन्य विद्यार्थी प्रेरित होकर नियमित विद्यालय आने लगे, इन्हीं प्रयोगों में एक प्रयोग सभी विद्यार्थियों को गणवेश के साथ पुरस्कार के रूप में स्वेटर वितरित किए। ऐसे अनेक प्रयोगों से विद्यार्थियों में निरंतर उत्साह, उमंग और सकारात्मकता का संचार होने लगा। इन प्रयोगों में स्थानीय लोगों और संस्थाओं से सहयोग लिया गया|

**शैक्षणिक स्तर बढ़ाने के लिए नवाचार:-**

शिक्षा एवं विद्यालय के सबसे महत्वपूर्ण केंद्र बिंदु, विद्यार्थियों पर ध्यान केंद्रित कर, उन्हें अच्छी और गुणवत्ता युक्त शिक्षा देने का लक्ष्य सर्वोपरि रखा। विद्यार्थियों की शाला में अधिक से अधिक उपस्थिति रहे इस हेतु प्रत्येक कक्षा के सभी विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा की सकारात्मक भावना का

विकास किया। इसके लिए उत्तर को याद करने की अपेक्षा, प्रत्येक कक्षा में छात्रों के अलग-अलग समूह बनाकर प्रत्येक समूह को पढ़ाए गए पाठ के प्रश्नों को बनाकर लाने का कार्य दिया गया। इस नवाचार से विद्यार्थी पाठ को पढ़कर, उसमें से कठिन प्रश्नों का चयन कर, उत्साह से शाला में उपस्थित होते | प्रत्येक समूह कई-कई बार पाठ पढ़कर प्रश्न छांटते ताकि दूसरे समूह से जीत सकें, प्रश्न छांटने के इस छोटे से नवाचार द्वारा "करके सीखने की समझ" विकसित होती गयी| साथ ही वह पाठ उन्हें मौखिक भी याद होते गए, जिससे विद्यालय के शैक्षणिक स्तर में सुधार होता गया। इस नवाचार से प्रत्येक छात्र उत्तर याद करने की उत्कंठा से मुक्त होकर स्वतः ही समझकर सीखने लगे|

**गतिविधि आधारित शिक्षण एक नवाचार :-**

शाला में अध्ययनरत प्रत्येक छात्र अपनी अपेक्षित दक्षता पूर्ण करें, इस हेतु एक-एक विद्यार्थी के सीखने के स्तर पर ध्यान केंद्रित किया गया , उनकी समस्याओं के सरलीकरण एवं अवधारणा को स्पष्ट करने हेतु रोचक गतिविधियां करवाई गई।

| | |
|---|---|
|  |  |
| **टी.एल.एम्  आधारित गतिविधि** | **समूह गतिविधि** |

कमजोर छात्रों को समूह में बैठाकर सीखने में कठिनाई के स्तर को चिन्हित किया। शून्य बजट पर आधारित छोटी-छोटी गतिविधियां जैसे कंकड़-पत्थर, कार्ड शीट, कागज, पुराने पेन, चाबी के गुच्छे आदि के माध्यम से की गई। पाठ्यक्रम एवं दक्षता संबंधित हर कठिनतम बिंदु को सरलतम टी.एल.एम. के माध्यम से समझाया गया। प्रत्येक विषय को प्रयोग आधारित बनाने हेतु शून्य बजट से टी.एल.एम. का निर्माण किया। जिसके माध्यम से विद्यार्थी खुद करके सीखने लगे, उनके कठिन प्रश्नों का हल वे स्वयं खोजने लगे। उनका आत्मविश्वास बढ़ने लगा। यह अपने आप में अकल्पनीय रहा। जो अवधारणा हम सामान्य रूप से बच्चों को समझाने में सफल नहीं हो पा रहे थे, उसे विद्यार्थी टी.एल.एम. द्वारा आसानी से सीख रहे थे। बेसलाइन टेस्ट में जो छात्र जोड़ की संक्रिया नहीं सीख पा रहे थे, टी.एल.एम. के द्वारा विभिन्न अभ्यास एवं गतिविधियाँ करवाने से , भाग तक के प्रश्न हल करने लगे। हिंदी में अक्षर पहचान से आगे निकलकर कहानी पढ़ने तक पहुंच गए।

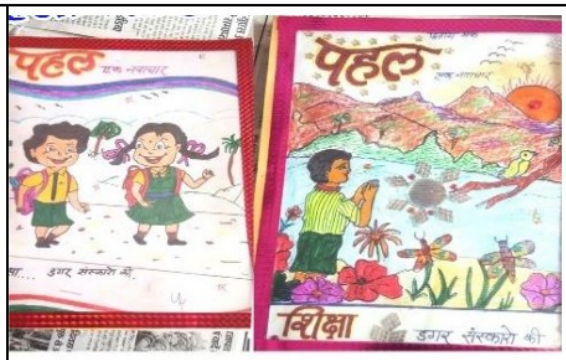
परिणामस्वरुप हमारे विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों में से लगभग 99 % छात्र अपेक्षित मूल-भूत दक्षता पूर्ण कर चुके हैं। एक नवाचार के रूप में प्रतिवर्ष विद्यालय में, वर्ष भर में निर्मित टी.एल.एम. की प्रदर्शनी आयोजित की जाती हैं। इसका अवलोकन संकुल केंद्र, विकासखंड, एवं जिले के सम्माननीय अधिकारियों के साथ अभिभावकों द्वारा किया गया| प्रदर्शनी में, विद्यार्थियों द्वारा टी.एम.एम. का विषय की आवश्यकता आधारित प्रस्तुतीकरण किया गया। इससे विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में वृद्धि के साथ-साथ नेतृत्व क्षमता का भी विकास हुआ।

**बालसभा के माध्यम से शैक्षिक व मानवीय गुणों के साथ-साथ प्रस्तुतीकरण एवं नेतृत्व क्षमता विकसित करने का प्रयास** :-

बालसभा प्रत्येक शनिवार को परंपरागत ढंग से होती आ रही थी, परंतु उसको रुचिकर बनाने व उसे वास्तविक उद्देश्यों से जोड़ने हेतु प्रयास किए, बालसभा को रुचिकर बनाने हेतु बाल कैबिनेट व बच्चों से विचार जाने गए। साथी शिक्षक के साथ मिलकर बालसभा को शासन की मंशा अनुरूप वास्तविक रूप दिया गया, जिसमें सर्वप्रथम साउंड सिस्टम का क्रय किया, हर बालसभा को समय अनुरूप विषय प्रदान किए जैसे - सत्र प्रारंभ के समय बाल सभा में विद्यार्थियों के बस्ते पूर्ण हो, पुस्तकों पर कवर, गणवेश का महत्व, बारिश से सुरक्षा के उपाय पर वाद-विवाद, नए सत्र में की जाने वाली तैयारियों के साथ नियमितता बनाए रखें, इस हेतु कार्यक्रम बालसभा में करवाएं। जिससे नवप्रवेशी विद्यार्थी विद्यालय में शीघ्र ही घुल-मिल सकें| विभिन्न त्योहारों के समय छात्र-छात्राओं को उनके महत्व से परिचित करवाया गया। राष्ट्रीय पर्व, महापुरुषों की जयंतियों के साथ ही बालकों द्वारा स्वरचित कविताएं, नाटक इत्यादि के कार्यक्रम आयोजित किए जाने लगे। इससे उनमें ज्ञान, मानवीयता, दया, साहस, और सम्मान की भावना सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ विकसित होने लगी। इससे विद्यार्थियों में प्रस्तुतीकरण की क्षमता के साथ ही नेतृत्व क्षमता का विकास होने लगा। परिणाम स्वरूप शाला के वार्षिकोत्सव,सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि में मंच संचालन का कार्य छात्र स्वयं करने लगे। आगामी समय में बाल सभा को और रुचिकर व मौलिकता प्रदान करने हेतु प्रयास किया जाएगा।



खेल-खेल में शिक्षा ⬆




हस्तलिखित वार्षिक पत्रिका पहल ⬆

**खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की नियमितता:-**

संवेगात्मकता एवं संवेदनशीलता को बढ़ाने, शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास हेतु विद्यार्थियों के स्वास्थ्य को दृष्टिगत रखते हुए खेलकूद में सहभागी बनाया गया। समय-समय पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया, जिससे उनकी नियमितता एवं नेतृत्व क्षमता के साथ-साथ सहयोग की भावना का निरंतर विकास होने लगा। खेल-खेल में शिक्षा के माध्यम से बच्चों को शिक्षा में आने वाली कठिनाइयों को सरल तरीके से उनके स्तर के अनुसार समझाया गया , इससे बच्चों को सीखने में आसानी हुई।

**पुस्तकालय का विशेष आकर्षण:-**

शैक्षणिक स्तर व बच्चों के मनोभाव को सकारात्मक उच्चता प्रदान करने हेतु ज्ञानवर्धक पुस्तकों का संग्रहण कर पुस्तकालय स्थापित किया गया। बच्चों का मानसिक व शैक्षिक विकास रुचिकर हो सके, इसके लिए उनके आयु वर्ग को ध्यान में रखते हुए रोचक व प्रभावपूर्ण पुस्तकों का चयन कर उपलब्धता सुनिश्चित की गई| इन विभिन्न शिक्षाप्रद पुस्तकों को पढ़ने हेतु अवसर प्रदान किए। जिसके माध्यम से उनके स्वाध्याय का अभ्यास बढ़ा और कल्पना शक्ति का विकास हुआ| साथ ही मासिक पत्रिका व दैनिक समाचार पत्रों का समावेश किया, जिससे उन्हें जिले सहित देश-विदेश की जानकारी अर्जित करने में आसानी हुई। भविष्य में ई- पुस्तकालय की योजना प्रस्तावित हैं।

**लेखन क्षमता हेतु नवाचार:**

विद्यार्थियों को विभिन्न शैक्षिक व सह-शैक्षिक गतिविधियों में अवसर प्रदान करने एवं लिखित रूप में भावाभिव्यक्ति प्रदान करने हेतु, प्रतिवर्ष बच्चों के द्वारा पत्रिका का लेखन और सम्पादन किया जाता हैं। जिसके द्वारा स्वयं सीखने की प्रवृत्ति, स्वलेखन क्षमता का विकास, भाषाई कौशल व

मौलिकता को बढ़ावा मिलता हैं । प्रतिवर्ष हस्तलिखित पत्रिका का विमोचन वार्षिक उत्सव में सम्माननीय अधिकारियों द्वारा किया जाता हैं ।

**टेबलेट द्वारा स्मार्ट क्लास का संचालन:**

विद्यार्थियों को टेक्नोलॉजी द्वारा आधुनिक शिक्षा पद्धति से जोड़ने हेतु, टेबलेट के माध्यम से स्मार्ट क्लास का संचालन किया जाता हैं। विद्यार्थियों को स्पष्ट दिखे इस हेतु टैबलेट में मैग्नीफायर स्क्रीन का उपयोग किया जाता हैं। इसके माध्यम से सभी विषयों के पाठ्यक्रम के कठिन अवधारणा बिन्दुओं को सरल विधि से समझाने का प्रयास किया जाता हैं| साथ ही सामान्य-ज्ञान का भी शिक्षण करवाया जाता हैं। इससे विद्यार्थियों में उत्सुकता, जिज्ञासा के साथ सीखने की प्रवृत्ति में विकास हुआ हैं।

**विद्यालय की भौतिक स्थिति जो छात्रों की नियमित उपस्थिति में थी बाधक** :-

कीचड़ युक्त विद्यालय पहुंच मार्ग एवं खेल मैदान के बड़े-बड़े गड्ढे विद्यार्थियों को नियमित विद्यालय आने में बहुत बड़ी बाधा थी। बारिश में कीचड़ होने से विद्यार्थी नियमित विद्यालय नहीं आ पा रहे थे। इस हेतु जनसहयोग से मुरम एवं पत्थरों से रास्ता बनवाया व इस समस्या के स्थायी समाधान हेतु कार्य योजना भी बनाई। शाला प्रबंधन समिति एवं अभिभावकों की बैठक आयोजित की, जिसमें सर्वसम्मति से प्रस्ताव बनाकर ग्राम पंचायत के सरपंच, सचिव, सहायक सचिव से संपर्क कर विद्यालय भवन तक सड़क मार्ग के लिए निवेदन किया, जिस पर ग्राम पंचायत द्वारा विद्यार्थियों के हित में सकारात्मक पहल करते हुए एक सुंदर सीमेंट की सड़क का निर्माण कर बच्चों को सुविधा प्रदान की गई।

| | |
|---|---|
|  |  |
| **विकासखंड में सर्वश्रेष्ठ विद्यालय पुरस्कार** | **जिलास्तरीय शिक्षक सम्मान** |

**गुणवत्तापूर्ण भोजन एवं स्वच्छ जल की उपलब्धता हेतु प्रयास:-**

- प्रतिदिन हाथ धुलाई हेतु पानी की टंकी खरीद कर, हैंडवाश यूनिट का निर्माण करवाया। बंद पड़े हैंडपंप को पीएचई विभाग से संपर्क कर दुरुस्त करवाया।
- सभी विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण भोजन,शुद्ध पीने का पानी, स्वछंद एवं भयमुक्त वातावरण मिले इस हेतु सार्थक प्रयास किए, परिणाम स्वरूप विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति बढ़ने लगी।

**सामुदायिक सहभागिता:-**

विद्यालय एवं समुदाय एक-दूसरे के पूरक के रूप में कार्य करते हैं। समुदाय की सहभागिता के बिना, छात्रों का नियमित विद्यालय आना, उत्कृष्ट शैक्षिक स्तर एवं विद्यालय का विकास संभव नहीं होगा। इसी सोच के साथ शाला प्रबंधन समिति की नियमित बैठकें, अभिभावक सम्मेलन एवं मातृ सम्मेलन का आयोजन किया। परिणामस्वरूप वर्तमान में ग्राम के 95% छात्र हमारे शासकीय विद्यालय में अध्ययन कर रहे हैं। विद्यालय परिसर की स्वच्छता बनाए रखने में पूर्व छात्रों से सहयोग लिया गया। पर्यावरण संतुलन हेतु लगाए गए पौधों की सुरक्षा के लिए ग्राम पंचायत द्वारा ट्री गार्ड लगाए गए।

|   |   |
|---|---|
| अभिभावक सम्मेलन | पुरस्कार वितरण |

**विशेष उपलब्धियां:-**

प्रतिवर्ष हमारे विद्यालय से राष्ट्रीय मीन्स-कम-मेरिट परीक्षा में विद्यार्थी सफलता प्राप्त कर रहे हैं। जो हमारे विद्यालय के शैक्षणिक स्तर को प्रदर्शित करता हैं। विद्यार्थियों के शैक्षणिक स्तर, विद्यालय प्रबंधन, शाला परिसर की स्वच्छता, शौचालय रखरखाव, सुंदर कक्षा-कक्ष एवं व्यवस्थित पुस्तकालय के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के फलस्वरूप 15 अगस्त 2017 को जिला

स्तरीय समारोह में तत्कालीन जिलाधीश द्वारा सम्मानित किया गया। 5 सितंबर 2019 को जिला स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में श्रीमान संभागायुक्त एवं माननीय कलेक्टर द्वारा शॉल, श्रीफल एवं सम्मान पत्र से सम्मानित किया गया।

**स्थायी बदलाव**

- शैक्षणिक स्तर पर वृद्धि हुई ।
- स्वयं करके सीखने से छात्रों की समझ विकसित हुई।
- नेतृत्व क्षमता एवं प्रस्तुतीकरण का विकास हुआ ।
- अभिभावकों का विद्यालय के प्रति विश्वास बढ़ा ।

**आगामी लक्ष्य :-**

विद्यालय को सर्व संसाधन युक्त, उत्कृष्ट विद्यालय बनाने की योजना बनाई जा रही हैं। गांव के 100% विद्यार्थी शासकीय विद्यालय में अध्ययन करें, इस हेतु ग्रामीण जन एवं अभिभावकों के साथ कार्य योजना बनाई गई हैं विद्यालय को स्मार्ट क्लास, युक्त एवं कम्प्यूटर शिक्षा देने हेतु भी कार्ययोजना बनाई जा रही हैं जिसे निकट भविष्य में पूर्ण करने की ओर विद्यालय परिवार अग्रसर हैं

**मनमोहन विश्वकर्मा**
**प्रधानाध्यापक**
**शासकीय माध्यमिक विद्यालय गेंहूखेड़ी**
**विकासखंड नरसिंहगड़ जिला राजगढ़, मध्यप्रदेश**

आयाम-1 कहानी क्रमांक-5

## शासकीय माध्यमिक शाला ,रातातलाई
## विकासखण्ड - हरदा, जिला-हरदा ,मध्यप्रदेश
## यू. डाईस कोड- 23360106102

गाँव रातातलाई की जनसंख्या 2730 हैं, जिसमें सभी जाति वर्ग के लोग निवास करते हैं| यहाँ का प्रमुख व्यवसाय कृषि मजदूर हैं| इस गाँव में स्थित माध्यमिक विद्यालय, विकासखण्ड मुख्यालय से 26 कि. मी. की दूरी पर स्थित हैं| हाँलाकि गाँव सड़क मार्ग से जुड़ा हैं किन्तु आवागमन के साधन नहीं हैं। विद्यालय में सभी वर्ग के विधार्थी अध्ययन करते हैं, जिनके पालक बच्चों की शिक्षा पर कम ध्यान दे पाते हैं| गाँव में औषधालय हैं, एक ऑगनवाड़ी केन्द्र एक अशासकीय विद्यालय था जो पिछले सत्र में बंद हो चुका तथा ग्राम पंचायत भवन हैं|



बालिका शिक्षा पर मार्गदर्शन



सामूहिक भोज

**विद्यालय की समस्या**

विद्यालय की मुख्य रूप से दो समस्याएँ थीं , जिन्हें दूर करने पर अन्य सभी समस्याएँ क्रमबद्ध रूप से हल हो सकती थी :

1. विद्यार्थीयों का छुआछूत की भावना से ग्रसित होना|
2. बालिकाओं के प्रति संकुचित विचार धारा एवं पुरानी रूढ़िवादिता|

उपरोक्त दो समस्याएँ विद्यालय के लिए अभिशाप थी, जिस कारण विद्यालय में विद्यार्थियों की

कम उपस्थिति, अनियमितता एवं पालकों की बालिका शिक्षा के प्रति रूचि नहीं थी।

**प्रधानाध्यापक द्वारा मुख्य रूप से किये गये कार्य:**

बतोर प्रधानाध्यापक कार्य करते हुए यह पाया| कि विद्यालय में विद्यार्थियों की नियमित उपस्थित एक बड़ी समस्या थी| इसके साथ ही जो विद्यार्थी विद्यालय आ रहे थे, वह अपने अलग - अलग समूह में रह कर अध्ययन करते थे और अपने समूह में ही भोजन करते थे| खेल एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में एक साथ भाग नहीं लेते थे। बालिकाएँ एक निश्चित उम्र के बाद विद्यालय छोड़ देती थीं क्योंकि वो विद्यालय में अपनी समस्या किसी को नहीं बता पाती थीं| पालक भी अशिक्षित होने से उनकी शिक्षा का महत्व समझ नहीं पाते थे और बीच में ही उनकी पढ़ाई बंद कर देते थे। उपरोक्त समस्याओं का प्रभाव शिक्षा की गुणवत्ता पर पड़ रहा था जो विद्यालय के लिए ठीक नहीं था तब हमने उपरोक्त समस्याओं को दूर करने का पूर्ण संकल्प लिया और रणनीति बनाई |

| | |
|---|---|
|  |  |
| **बच्चो को विद्यालय आने के लिए प्रेरित किया** | **घर घर सम्पर्क** |

सर्वप्रथम साथी शिक्षकों से इस विषय में चर्चा की तथा उनके विचार सुने| साथी शिक्षकों के सुझाव पर विधार्थियों से चर्चा की गई, उन्हें शिक्षा का महत्व समझाया गया तथा छुआछूत एक सामाजिक बुराई हैं, इस पर बात की गई| बात-चीत के दौरान यह पाया गया कि उनके मन में यह बात अपने घर से ही बैठी हैं| माता-पिता ने उनके मन में यह भावना शुरू से ही बैठा दी हैं जिसे दूर करना बहुत जरूरी था।

बालिकाओं से चर्चा करने पर यह पता चला कि उनके पालक उन्हें पढ़ाना ही नहीं चाहते थे| हमने यह निष्कर्ष निकाला की सबसे बड़ी समस्या छुआछूत एवं सामाजिक रूढ़ीवादिता हैं| इस समस्या को दूर करने के लिए लगातार प्रयत्न किया गया|

| | |
|---|---|
|  |  |
| **शपथ ग्रहण** | **एकता का महत्व समझाया** |

पालकों को विद्यालय से जोड़ने के लिए उन्हें विद्यालय में आमंत्रित किया गया किन्तु कुछ ही पालक विद्यालय पहुँचे, उनसे चर्चा की गई, उन्हें शिक्षा का महत्व समझाया, छुआछूत एक सामाजिक बुराई हैं, बताया गया किन्तु ज्यादा सफलता नहीं मिल सकी।

अधिकतर पालक मजदूरी करते थे और गाँव से दूर खेतो में निवास करते थे, जिनसे सम्पर्क करना कठिन था| इसके लिए गाँव के कुछ लोगों को तैयार किया गया और इस सामाजिक बुराई को मिटाने का संकल्प कर घर-घर जाकर पालकों से सम्पर्क किया गया| उन्हें महापुरूषों के जीवन परिचय से अवगत कराया गया, राष्ट्रीय पर्वों पर विद्यालय में आमंत्रित किया गया| डॉ भीमराव अम्बेडकर के जीवन परिचय एवं उनके चरित्र तथा उनके द्वारा किये गये कार्यों से परिचित कराया गया, इन बातों का पालकों पर बहुत प्रभाव पड़ा|

विद्यालय में बालिका शिक्षा पर कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, उसमें पालकों को समझाया की इस भाम्रक रूढीवादिता के चलते बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकेंगें और वर्तमान में चल रही विकासशील योजनाओं का उन्हें कोई लाभ नहीं मिल सकेगा। पालकों से सतत् सम्पर्क के लिए गाँव के कुछ युवाओं से भी सहयोग प्राप्त किया गया एवं समय-समय पर उनके घर पँहुच कर चर्चाएँ की गई|

विद्यालय में विधार्थियों को रहने एवं एक साथ भोजन करने तथा साथ-साथ खेलने की सामूहिक व्यवस्था की गई, जिसमे शिक्षकों ने भी समय- समय पर उन्हें समझाइश दी। जेसे - सूर्य सभी को एक साथ प्रकाश देता हैं, पेड़-पौधे सभी को छाया देते हैं, पवित्र जलाशय से सभी जल ग्रहण करते हैं तो हम कैसे किसी के साथ भेद-भाव कर सकते हैं| इस प्रकार धीरे-धीरे विधार्थियों के मन से भेद-भाव, छुआछूत की भावना दूर होने लगी| विधार्थियों की शिक्षा एवं विद्यालय के प्रति रूचि बढ़ने

लगी| शाला प्रबंधन समिति एवं बाल केबिनेट के माध्यम से भी पालकों एवं विधार्थियों को मार्गदर्षन दिया जाने लगा|

सभी विद्यार्थियों को शाला में दर्ज करवाने एवं नियमित विद्यालय लाने हेतु, शाला भवन एवं परिसर को रोचक बनाया गया| विधार्थियों को घर से अच्छा माहौल प्रदान किया गया एवं विद्यालय में सामूहिक, सांस्कृतिक एवं खेल गतिविधियों का समय- समय पर आयोजन किया गया जिससे विधार्थियों में एकता तथा विद्यालय के प्रति रूचि बढ़ी।

| | |
|---|---|
|   |  |
| **जन जाग्रति एवं स्वच्छता रैली** | **वृक्षा रोपण** |

इसी प्रयास को आगे बढ़ाते हुए विधार्थियों के साथ मिलकर पर्यावरण संरक्षण हेतु मिशन 100 चलाया गया| उसके तहत विद्यालय में जितने विद्यार्थी दर्ज थे, प्रत्येक विद्यार्थी से एक-एक पौधा विद्यालय प्रांगण में लगवाया गया तथा उसकी देख-भाल की जबाबदारी भी सौंपी गई। ऐसा नियम बनाया गया की जो विद्यार्थी विद्यालय में प्रवेश लेंगें उन्हें सर्व प्रथम प्रांगण में एक पौधा लगाना होगा, जिससे विद्यालय के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी| वह जब तक विद्यालय में रहेगा, उसकी देख भाल करेगा| इन मिशन अंतर्गत अभी तक विद्यालय में 200 पौधे लगे हुए हैं , उसमें अधिक्तर फलदार एवं छायादार पौधे हैं| यह क्रम लगातार जारी रहेगा तथा जो पौधे लगे हुऐ हैं वो स्थायी रहेंगें क्योंकि उनकी सुरक्षा एवं सिंचाई पर पूर्ण ध्यान दिया जा रहा हैं।

आंगनवाड़ी कार्यकर्ता की मदद से ग्राम की महिलाओं को आमंत्रित कर सांस्कृतिक कार्यकमों का आयोजन कर बालिका शिक्षा पर चर्चा एवं शासकीय योजना से अवगत कराया गया, साथ ही महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा मार्गदर्शन भी दिया गया|



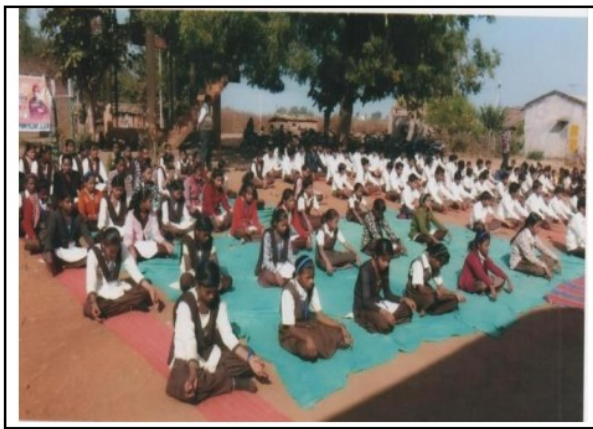

शिक्षक सम्मान समारोह




प्रशस्ति-पत्र

विद्यालय को सम्मानित किया गया| विद्यालय में किये गए नियमित प्रयासों से विद्यार्थी एवं पालकों की विद्यालय तथा शिक्षा के प्रति रूचि जाग्रत हुई हैं। वर्तमान में विद्यालय ही नहीं, पूरे ग्राम से छुआछूत नामक सामाजिक बुराई दूर हो चुकी हैं, सभी समुदाय के लोग सामाजिक आयोजनों में एक-साथ भाग लेते हैं। विद्यालय में भी सभी विद्यार्थी एक दूसरे से परिवार के सदस्य जैसा व्यवहार करते हैं।

गाँव की सभी बालिकाएँ विद्यालय में दर्ज हैं जो कक्षा 10 उर्त्तीण होने के बाद ही विद्यालय से विदा लेती हैं और इससे आगे की शिक्षा ग्रहण करने की उनके मन में जिज्ञासा रहती हैं| सभी विद्यार्थी नियमित शाला आते हैं बालिकाओं को भी बिना संकोच शाला में घर से भेजा जाता हैं।



योगाभ्यास



बालिका सम्मान

**विद्यालय में बदलाव :**

विद्यालय में बच्चे छुआछूत जैसी कुरितियों से ग्रसित थे किन्तु अब उनके मन से यह भावना दूर हो चुकी हैं| जिसका परिणाम यह हैं की वे एक-साथ बैठकर भोजन करते हैं और अध्यापन तथा खेल एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेते हैं।

1. विद्यालय में बालिकाओं की उपस्थिति कम रहती थी अब सभी बालिकाएँ समय पर विद्यालय पँहुच जाती हैं और नियमित अध्ययन करती हैं, पढ़ाई के प्रति उनकी रूचि बढ़ी हैं|

**विद्यालय की आगामी योजना**

उपरोक्त सार्थक बदलाव के बाद विद्यालय की एक मुख्य समस्या हैं, शिक्षकों की कमी, जिसे आने वाले समय में उच्च अधिकारियों से सम्पर्क कर दूर करने का प्रयास किया जाएगा |

**नर्मदा प्रसाद गौर**
**प्रधानाध्यापक**
**शासकीय माध्यमिक शाला ,रातातलाई**
**विकासखण्ड -हरदा ,जिला- हरदा,मध्यप्रदेश**

आयाम-1 कहानी क्रमांक-6

# शासकीय माध्यमिक विद्यालय भीलखेड़ा
## विकासखंड- बड़वानी, जिला - बड़वानी, मध्यप्रदेश
## यू-डाईस - 23280306903

मध्यप्रदेश के बड़वानी जिले से 5 किलोमीटर दूर एक छोटा सा गाँव भीलखेड़ा हैं। यह गाँव कल-कल बहती माँ नर्मदा के तट पर स्थित हैं। गाँव भीलखेड़ा में अधिकतम भीलाला जनजाति के लोग निवास करते हैं। गाँव में रियासतकालीन छत्रीयाँ निर्मित हैं जो राजा के द्वारा उनके शासन काल में निर्मित की गई थी। इस गाँव की कुल आबादी 1750 के आसपास हैं। गाँव में पंचायत के पास ही शासकीय माध्यमिक विद्यालय संचालित होती हैं। शासकीय माध्यमिक विद्यालय भीलखेड़ा में सुसज्जित भवन बना हुआ हैं, जिसमें 6 कमरों के अलावा एक प्रधानाध्यापक कक्ष हैं| इस विद्यालय में वर्ष 2019-20 में 107 विद्यार्थी दर्ज थे जिसमें 65 छात्र एवं 42 छात्राएँ अध्ययनरत थीं। विद्यालय में एक हेड स्टार्ट कक्ष जिसमें 6 क्रियाशील कम्प्यूटर तथा एक स्मार्ट क्लास भी संचालित हैं| जिसमें 43 इंच एलसीडी के माध्यम से बच्चों को वीडियो दिखाकर कठिन अवधारणाओं को समझाया जाता हैं | विद्याल में पीने के पानी की एक टंकी हैं जो नर्मदा के जल से भरी जाती हैं| इसके अलावा विद्यालय में बालक तथा बालिकाओं के लिए पृथक - पृथक क्रियाशील शौचालय हैं|

**चुनौतियां**

विद्यालय में समस्त भौतिक संसाधन एवं मानवीय संसाधन होने के बाद भी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थीयों की उपस्थिति में लगातार गिरावट होने लगी तथा अनियमितता की समस्या बढ़ने लगी| एक समय ऐसा आया कि विद्यालय में दर्ज का प्रतिशत 60 तक आ गया। जिसे विद्यालय स्टॉफ ने बड़ी ही गंभीरता दिखाते हुए आपस में बैठक कर समस्या की तह तक जाने के लिए विद्यार्थियों से बातचीत एवं पालक संपर्क करने का निर्णय लिया। विद्यार्थियों से बातचीत के दौरान यह समस्या सामने आई कि विद्यालय में कठिन अवधारणाओं को समझने में उन्हे कठनाई आ रही हैं तथा पालकों ने बताया कि विद्यालय से आने के पश्चात उनके बच्चों को घर पर अध्ययन करने को कहा जाता हैं तो बच्चें कहते थे कि उन्हें विद्यालय में पढ़ाया हुआ समझ में

नही आता।यह बोलकर अधिकांश बच्चे अपने माता - पिता के साथ खेतों में काम करने चले जाते तथा कुछ बच्चों का समय अपने छोटे भाई - बहन को घर पर संभालने में निकल जाता ।

इस प्रकार की समस्या ज्ञात होने पर सर्वप्रथम विद्यालयीन स्टॉफ द्वारा यह विचार किया गया कि कठिन अवधारणाओं को कुछ नए माध्यम से समझाया जाये। इसके लिए विद्यालय में वही पूराने ढर्रे से हो रही शिक्षण व्यवस्था को भी बदला गया। शिक्षकों द्वारा अपनी शिक्षण पद्धति को बदलकर एक नवाचार को अपनाया गया। शिक्षको द्वारा कठिन अवधारणाओं को स्मार्ट क्लास के माध्यम से समझाया जाने लगा। शिक्षकों द्वारा नवाचार के रूप में कठिन विषय-वस्तु को पढ़ाते समय स्वंय के छोटे - छोटे शिक्षण विडियो बनाये गये तथा उसे आवश्यकतानुसार स्मार्ट क्लास में बच्चों को दिखाए गए, जिससे बच्चों को कठिन अवधारणाओं या विषय-वस्तु को समझने में आसानी होने लगी| परिणामस्वरूप विद्यालय में विद्यर्थीयों की संख्या बढती गई एवं अनियमित विद्यार्थी भी प्रतिदिन विद्यालय आने लगे। विद्यालय में प्रतिदिन विद्यार्थीयों की 90 प्रतिशत उपस्थिति रहने लगी एवं विद्यार्थी बड़ी ही रूचि से शिक्षण गतिविधयों में अपनी सहभागिता भी निभाने लगे। गणित, विज्ञान या अंग्रेजी की कठिन अवधारणाओं को अपने शिक्षक की आवाज में सुनकर एवं देखकर वह उस विषय वस्तु को आसानी से समझने लगे तथा पालकों द्वारा भी यह बतलाया गया कि अब उनके बच्चें घर पर आकर अपना अध्ययन स्वंय करने लगे हैं| वे अब बिना कोई बहाना बनाये विद्यालय जाने को तैयार हो जाते हैं। सभी विद्यार्थी नियमित शाला आते हैं बालिकाओं को भी बिना संकोच शाला में घर से भेजा जाता हैं।



**स्मार्ट क्लास में शिक्षण**

इस प्रकार विद्यालय निरन्तर नवनीत प्रयासों के फलस्वरूप विद्यालय की दर्ज संख्या व उपस्थिति में निरन्तर बढ़ोत्तरी हुई| साथ ही पालकों का भरपूर सहयोग भी मिलने लगा । पालकों द्वारा बच्चों से अन्य कोई कार्य न करवाकर केवल विद्यालय द्वारा दिये गये गृह-कार्य करने को बढ़ावा देने में

मदद की। विद्यालयीन शिक्षकों का यही प्रयास रहेगा कि विद्यालय की यह व्यवस्था निरन्तर बनी रहे तथा दर्ज संख्या  में निरन्तर वृद्धि होती रहे।

विद्यालय के प्रयासों से विद्यार्थी शिक्षण के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी अपनी प्रतिभा दिखाने लगे । राष्टीय मीन्स-कम-मेरिट परीक्षा में दो बच्चों का चयन पिछले वर्ष हुआ हैं| जिसमें एक छात्र का नाम चन्दन अवास्या हैं तथा दूसरे छात्रा का नाम खूशबू अवास्या हैं। इसके अलावा इंस्पायर अवार्ड के अंतर्गत कक्षा 8वी के छात्र बबलु मेहरा का चयन राज्य स्तर तक हुआ। प्रतिवर्ष कक्षा 8 वीं से उत्तीर्ण विद्याथीर्यों में से कुछ बच्चों का चयन उत्कृष्ट विद्यालय में प्रवेश परीक्षा के आधार पर कक्षा 9 वीं में चयन होने लगा। कहानी उत्सव के अंतर्गत भी विद्यालय की कु. तमन्ना कनोजे का चयन जिले स्तर पर हुआ।

विद्यालय को जनसहयोग के माध्यम से स्वच्छ एवं हरा भरा रखने के फलस्वरूप जिला, जल एवं स्वच्छता मिशन के तहत जिला पंचायत बड़वानी द्वारा प्रंशसा पत्र प्रदान किया गया तथा जिला शिक्षा केन्द्र द्वारा भी विद्यालय को उत्कृष्टता प्रमाण पत्र वर्ष 2014 - 15 में प्रदान किया गया हैं|

वर्तमान में विद्यालय को उत्कृष्ट श्रेणी में बनाए रखने के लिए निरन्तर प्रयास जारी हैं । जिससे विद्यालय की दर्ज संख्या  में प्रतिवर्ष निरन्तर वृद्धि हो सके | विगत पांच वर्षों में विद्यालय में दर्ज संख्या  में निरंतर वृद्धि देखी जा रही हैं | परन्तु वर्ष 2015-16 में विद्यालय की दर्ज संख्या तुलनात्मक रूप से कम हो (98 से 72 दर्ज संख्या  हो गई थी) गई थी परन्तु निरंतर प्रयासों एवं समुदाय के सहयोग के फलस्वरूप विद्यालय में प्रतिवर्ष विद्याथियों की संख्या  में इजाफा भी होता गया, जिसको बनाए रखने के लिए लगातार प्रयास जारी हैं|

**मनीष जोशी**

**प्रधानाध्यापक (प्रभारी)**

**शा.मा. विद्यालय भीलखेड़ा**

**विकासखंड- बड़वानी जिला बड़वानी,मध्यप्रदेश**

आयाम-1 कहानी क्रमांक-7

# शासकीय माध्यमिक शाला कुमड़ी
## विकासखण्ड - औबेदुल्लागंज, जिला- रायसेन, मध्यप्रदेश
## यू-डाईस कोड - 23340414603

मध्यप्रदेश के रायसेन जिले के ओबेदुल्लागंज विकासखण्ड में विश्व धरोहर भीम बैठका से 5 किलोमीटर की दूरी पर घने जंगल के पास प्रकृति की गोद में बसा ग्राम कुमड़ी जिसमें स्थित हैं शासकीय माध्यमिक शाला कुमड़ी। अनुपम छटा बिखेरता सुन्दरता का पर्याय पहाड़ की तलहटी में स्थित विद्यालय का नजारा बड़ा ही मनोरम हैं। यह कि शिक्षा की एक मिसाल के तौर पर भी रायसेन जिले में जाना जाता हैं।

ग्राम कुमड़ी यू तो एक छोटा सा गॉव हैं परन्तु अपनी प्राकृतिक सुन्दरता व शिक्षा की अलख के चलते आस पास के सभी गॉवों के लिए एक मिसाल बन चुका हैं इसकी प्रमुख वजह हैं कि यहाँ के विद्यालयीन शिक्षक-समुदाय की दृढ़- इच्छाशक्ति सहभागिता व मेहनत का ही परिणाम हैं।

**विद्यालय में सुन्दर परिसर के लिए किया गया बदलाव :**

सर्वप्रथम विद्यालय परिसर को स्वच्छ बनाया जिसके अंतगर्त शाला में शिक्षक समुदाय द्वारा वृक्षारोपण कर ट्री.गार्ड लगवाया गया तथा उसको सुरक्षित रखने के लिए शिक्षक, बच्चे और समुदाय द्वारा शपथ ली गई| स्थानीय ग्रामीण समुदाय के प्रयास से तारफेन्सिंग का निर्माण कराया गया दीवारों पर सुन्दर लेखन आदि कार्य करवाए गए। पारंपरिक शिक्षण प्रक्रिया को छोड़कर सभी शिक्षकों ने कक्षाओं में नवाचारी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की शुरूआत की, जिसके अच्छे परिणाम विद्यालय को प्राप्त हुए।

**विद्यालयीन गतिविधियों में किए गए बदलाव की झलकियाँ :**

| | |
|---|---|
|  |  |
| **मध्यान्ह भोजन व्यवस्था** | **प्रतियोगिता** |

| | |
|---|---|
|  |  |
| **लाइब्रेरी में अध्ययन** | **पेय जल के व्यवस्था** |

**मुख्य समस्याए :**

- विद्यालय परिसर के चारों ओर बाउंड्री वॉल नहीं होने के कारण परिसर में स्वच्छता नहीं रहती थी| जानवर व मवेशी परिसर में घूमते और गंदगी करते थे। विद्यालय की खिड़कियाँ व दरवाज़ें टूटे हुए थे| विद्यालय के चारों ओर असुरक्षित वातावरण था।
- विद्यालय कक्षा- कक्ष में सहायक शिक्षण सामग्री (टी.एल.एम) की कोई व्यवस्था नही थीं जिसके कारण शिक्षण कार्य में विद्यार्थियों को शिक्षण से जोड़ने में कठिनाई आती थीं, और उनका शैक्षणिक स्तर कमज़ोर था।
- विद्यालय में पृथक-पृथक शौचालय न होनें के कारण विद्यार्थियों का नामांकन व उपस्थिति बहुत कम रहती थीं तथा ग्राम के अधिकांश विद्यार्थी अशासकीय विद्यालयों में जाते थे|

**समस्या समाधान की रणनीति एवं प्रक्रिया :**

- जब हम विद्यालय में उपस्थित होते थे तब बाउण्ड्री वॉल न होने के कारण हमें वहॉ पर आवारा पशु बैठे हुये दिखाई थे और गंदगी भी दिखती थी। हम सभी शिक्षकों ने मिलकर बाउण्ड्री वॉल बनवानें के विषय पर विचार किया इसके लिए हमनें कई लोगों से संपर्क किया लेकिन हमें किसी से भी कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिला। तत्पश्चात हम सभी ने विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों से बाउण्ड्री वॉल के संबंध में चर्चा की तो चर्चा में एक बात निकलकर आई कि हम सभी आपसी सहयोग से न केवल तारफेसिंग करवाएंगे बल्कि विद्यालय परिसर को सुंदर एवं आकर्षक बनाने के लिए परिसर में छोटी-छोटी क्यारियाँ बनाकर उनमें गैंदें, गुलाब, चमेली, सुरजमूखी के पौधे लगवायेगे। तभी से एक नई शुरूआत हो गयी और आज हमारा विद्यालय परिसर बहुत ही सुंदर व आकर्षक लगने लगा हैं।

- जब मेरी विद्यालय में नियुक्ति हुई तो कोई टी.एल.एम की व्यवस्था नही थीं। विद्यार्थियों व शिक्षकों के सहयोग से टी.एल.एम स्वंय बनाया। विज्ञान संबंधी टी.एल.एम बनाये गये व खरीदें गये जिससे विद्यार्थियों के शिक्षण में रोचकता आई।
- पुस्तकालय कार्नर की व्यवस्था भी विद्यालय में नही थीं| विद्यालयीन शिक्षकों और समुदाय के सहयोग से पुस्तकालय की व्यवस्था की गई, जिससे विद्यार्थियों में नैतिक शिक्षा ज्ञानवर्धक कहानियों व सामान्य ज्ञान के साथ कौशल विकास हुआ।
- लर्निंग कार्नर का निर्माण करवाया गया।
- विद्यालय के प्रत्येक कक्षा-कक्ष में कुड़ेदान की व्यवस्था की गई।
- विद्यालय में पृथक- पृथक शौचालय नहीं होने के कारण विद्यार्थियों का नामांकन व उपस्थिति बहुत ही कम रहती थी। हम विद्यालयीन समुदाय के सदस्यों के द्वारा इस पर गहन चिंतन किया गया। एक दिन अभियंता विद्यालय मे आए, वहॉ पर हमने उनसे इस बारे में चर्चा की जिससे इस समस्या का निराकरण हुआ| हमारे विद्यालय में उच्च स्तरीय शौचालय का निर्माण हुआ।

| | |
|---|---|
|  |  |
| **हाथ धुलाई यूनिट की व्यवस्था** | **गतिविधि कक्ष** |

**स्थिरता की स्थिति .:**

- पर्यावरण के प्रति जागरूकता- बदलते हुए परिवेश का देखते हुए हमारा प्रयास यह रहा हैं कि ग्रामीण समुदाय पालको एवं विद्यार्थियों को पर्यावरण के प्रति जागरूक किया, इससे विद्यालय एवं ग्राम में जो वृक्षारोपण किया हैं| स्वच्छ परिवेश् हमेशा बना रहेगा ओर निकट भविष्य में जो अधिक उन्नत बनाने का प्रयास विद्यार्थी समुदाय करेंगे समस्त शिक्षकों के द्वारा वृक्षारोपण का कार्य स्वंय का पौधा लगाकर ट्री-गार्ड लगाया गया और इसकी स्थाई व्यवस्था की शपथ भी ली गई |

- शिक्षा के प्रति जागरूकता आज के परिवेश मे शिक्षा के महत्व को देखते हुए ग्रामीण समुदाय एवं विद्यार्थियों में शिक्षकों द्वारा शिक्षा प्राप्त करने की उमंग जगाई हैं वह निश्चित ही आने वाली पीढ़ी में भी स्थिर बनी रहेगी।

**आगामी कार्ययोजना**

- कोई भी विद्यार्थी प्राइवेट विद्यालय न जाये।
- "एक परिसर एक शाला" के अंतगर्त प्राथमिक विद्यालय को भी उन्नत बनाना ताकि प्राथमिक विद्यालय से भी शत-प्रतिशत दक्ष मेरिट विद्यार्थी आए।
- विद्यालय को विभिन्न कार्यक्रमों के लिए माइक सेट की व्यवस्था करना।
- उन्नत शिक्षा हेतु प्रोजेक्टर की व्यवस्था करना।
- राष्ट्रीय मीन्स-कम.मेरिट परीक्षा ओलंपियाड परीक्षा में अधिकतम बच्चों का चयन प्रतियोगिता परीक्षा हेतु विद्यार्थियों को तैयार करना।
- बच्चों को खेलकूद हेतु झूला फिसल पट्टी की व्यवस्था करना।
- बच्चों को अंग्रेजी बोलना सिखाना व टीचर ड्रेस कोड लागू करना।
- पूर्ण विद्यालय परिसर को पॉलीथीन मुक्त करना।
- विद्यालय के सभी विद्यार्थियों के लिए सर्दी के मौसम में गर्म कपड़ों की व्यवस्था करना।

विद्यालय के समस्त विद्यार्थी अपने विचारों को स्वतंत्रतापूर्वक व्यक्त कर सकें इस लिए विद्यालय में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा|

**मुकेश कुमार जैन**
**प्रधानाध्यापक**
**शासकीय माध्यमिक शाला कुमड़ी**
**विकासखण्ड - औबेदुल्लागंज जिला- रायसेन, मध्यप्रदेश**

आयाम-1 कहानी क्रमांक-8

# शासकीय माध्यमिक शाला खामखेड़ा
## विकासखंड - देवरी, जिला - सागर ,मध्यप्रदेश
## यू-डाईस कोड - 23110619802

| | |
|---|---|
|  |  |
| स्व-अध्ययन करते हुए विद्यार्थी | लाइब्रेरी में समूह अध्ययन करते विद्यार्थी |

"यदि आप एक लड़के को शिक्षित करते हैं तो आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं लेकिन आप यदि एक लड़की को शिक्षित करते हैं तो एक पूरे परिवार को शिक्षित करते हैं|"

विद्यालय के आस-पास ग्राम वासियों के घर हैं सामाजिक स्थिति अच्छी हैं, यहाँ की संस्कृति भी एकता प्रदर्शित करती हैं अधिकांश ग्रामवासी किसानी पर निर्भर रहकर अपना जीवन यापन करते हैं। इस ग्राम में अधिकांश जातियाँ- गौंड, लोधी, दांगी हैं एंव अन्य जाति के लोग नगण्य ही हैं। यहाँ के अधिकांश लोगों की वार्षिक आय 5 से 10 लाख तक हैं इस ग्राम में एक आंगनबाड़ी केन्द्र एवं कक्षा 1 से 8 तक शिशु मंदिर भी हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बदलाव जिसने छात्राओं का रुझान शिक्षा की ओर बढ़ाया। लगभग 75 विद्यार्थियों को हिन्दी की किताब अच्छे से पढ़ने आने लगी हैं। भयमुक्त वातावरण मिलने से छात्राओं के मन से डर निकल गया और प्रत्येक गतिविधियों में उन्होंने भाग लिया। कुछ परिवर्तन भी हुये जो इस प्रकार हैं:-

- सर्वप्रथम सभी कक्षाओं में विद्यार्थियों को बैठने के लिये एक स्वस्थ्य वातावरण का निर्माण किया गया ।
- विद्युत व्यवस्था पंचायत के सहयोग से निःशुल्क प्रदान की गई, जिससे विद्यार्थियों को गर्मी से राहत प्रदान हुई।

- विद्यार्थियों की निम्न आर्थिक स्थिति के कारण, ठण्ड में उन्हें विद्यालय द्वारा गर्म कपड़ों का वितरण किया गया।
- शाला के अच्छे वातावरण के कारण छात्राओं की उपस्थिति में वृद्धि हुई हैं।
- पढ़ने के लिए पुस्तकालय के लिये अलग से एक कमरे में पुस्तकों की व्यवस्था की जिसमें विभिन्न नाटक, कहानी ,कविताओं की पुस्तकें उपलब्ध करवाई गई|
- शाला में खेल सामग्री क्रय की गई। जिससे विद्यार्थियों का स्वच्छ वातावरण में मानसिक तनाव दूर हो सके। जब बच्चा खेलों में भाग लेता हैं तो उनमें सामाजिक कौशल का विकास होता हैं।
- विद्यालय में खेलने का मैदान उपयुक्त नहीं था, तो जनपद सदस्य के सहयोग से 3 डम्पर डस्ट डलवाकर मैदान को समतल और खेलने लायक बनाया गया।

विद्यालय को बालिकाओं के अनुकूल बनाने के लिए उनकी जीवन शैली को समझा और आवश्यक बदलाव हेतु प्रोत्साहित किया| जिसके फल स्वरुप प्रत्येक कार्यक्रम में बालिकाओं की शिक्षा में गाँव के लोगों की सोच में परिवर्तन हुआ और उन्होंने भी बालिकाओं को पढ़ाने का संकल्प लिया तथा बालिकाओं को उच्च शिक्षा के लिये गाँव से बाहर भी भेजा जाने लगा।

विद्यालय की तरफ से प्रत्येक विद्यार्थी को हर संभव मदद करने का प्रयास किया गया।

**समस्याएँ:**

बदलाव लाने की प्रक्रिया के दौरान बहुत सारी समस्याएँ सामने आई, लेकिन हमने बदलाव करने की दृढ़ इच्छा शक्ति को नहीं छोड़ा जिससे प्रत्येक समस्या का समाधान मिलता गया। कुछ समस्याएँ निम्न थीं.

- गाँव के लोगों को बालिका शिक्षा के प्रति जागरूक करना।
- संसाधनों का अभाव।
- लड़कियों के प्रोत्साहन व आत्म विश्वास में कमी।

विद्यालय में अन्य समस्यायें भी थी ,पर जो सबसे बड़ी समस्या थी वो गाँव के लोगों की सोच में परिवर्तन लाना तथा संसाधनों को एकत्र करना था|

विद्यालय के निरंतर प्रयास से हम इन समस्याओं को हल करने में सफल भी हुये।

**समस्या समाधान की रणनीति एवं प्रक्रिया -**

प्रधानाध्यापक के पद पर रहते हुए अपने शिक्षकों के साथ मिलकर ग्राम वासियों को अपने विश्वास में लेकर प्रत्येक के घर जाकर उनसे मिले एवं उनके बच्चों को प्रतिदिन विद्यालय भेजने के लिए अनुरोध किया गया| परन्तु पालकों द्वारा कहा गया की शाला में आवश्यक सुविधायें नहीं हैं| पालकों के द्वारा बतायी गयी समस्या के हल के लिए सभी शिक्षकों ने आपसी विचार-विमर्श किया और यह समझा कि शाला में व्यवस्थायें जुटाना आसान नहीं हैं| लेकिन फिर भी सभी शिक्षकों के अथक प्रयासों से विद्यालय के लिए आवश्यक संसाधन एकत्रित किये गए|

तत्पश्चात विभिन्न गतिविधियों जैसे - बाल सभा, शाला प्रबंधन समिति की बैठक , बाल- मेला एवं अन्य कार्यक्रम आयोजित कर अभिभावकों को शाला की व्यवस्थाओं का अवलोकन कराया गया जिसे देखकर उन्होंने अपने बच्चों को शाला भेजने पर पूर्ण सहयोग किया| यह सब कार्य कार्य करने में " **प्रधानाध्यापक क्षमता विकास प्रशिक्षण**" में सीखे गए तौर-तरीके प्रभावी और सहायक सिद्ध हुए ,जिसमें शिक्षकों की शैक्षणिक बैठकें और सामुदायिक गतिविधियाँ प्रमुख रहीं| जिसके बाद शिक्षकों में भी विश्वास बढ़ा और उन्होंने योजनाबद्ध तरीके से बच्चों को प्रतिदिन गृह कार्य दिया| जिसकी नियमित जांच पालकों और शिक्षकों द्वारा की जाने लगी|

इन सभी गतिविधियों के माध्यम से लगातार अभिभावक संपर्क बढ़ता गया|जिसके परिणामस्वरूप विद्यालय में संचालित सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं राष्ट्रीय त्योहारों में अभिभावक बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने लगे|

पुस्तकालय का उपयोग प्रतिदिन एक कक्षा के विद्यार्थी, अपने स्तर और रूचि के अनुसार पुस्तकों का चुनाव कर पढ़ते हैं| पुस्तकालय का संचालन बाल कैबिनेट के सदस्यों एवं प्रभारी शिक्षक आपसी ताल-मेल से किया जाता हैं| पुस्तकालय में विभिन्न प्रकार की पुस्तकें कहानी, कविता, नाटक आदि उपलब्ध हैं| मुंशी प्रेमचंद कहानीकार से लेकर विदेशी लेखकों जैसे- लियो टालस्टाय और विलियम शेक्सपियर की किताब उपलब्ध हैं|

**विद्यालय लीडरशिप**

विद्यालय में बच्चों को सिखाने का तरीका भी बदला गया और नया लुक दिया गया। थ्योरी की अपेक्षा प्रेक्टिकल पर ज्यादा ध्यान दिया। बच्चों को किसी चीज के विषय में जानकारी देने के साथ उसमें उस चीज का प्रदर्शन भी करवाया जैसे- यदि विज्ञान विषय में बच्चों को चुम्बक, लिटमस

पेपर, चुम्बकीय सुई, आदि के विषय में पढ़ाया जाता हैं तो इन सामग्रीयों का उपयोग कर बच्चे गतिविधियाँ करते हैं , जिससे उनकी विषयगत समझ बेहतर बनती हैं

समय- समय पर बच्चों द्वारा किए गए कार्य का अवलोकन भी किया जाता हैं| मासिक मूल्यांकन, गृहकार्य आदि के द्वारा उनके स्तर की जाँच की जाती हैं।

**आगामी योजना**

- सभी विद्यार्थियों को भयमुक्त वातावरण प्रदान करना।
- सभी कक्षाओं के परीक्षा परिणामों को बेहतर करेंगे।
- विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति 100 प्रतिशत लाने का लक्ष्य |
- शिक्षा को दैनिक जीवन से जोड़ना और व्यवसायिक शिक्षा प्रदान करना।
- कोई भी विद्यार्थी शारीरिक, सामाजिक व आर्थिक स्थिति के कारण शिक्षा से वंचित नहीं रहे इस पर विशेष ध्यान दिया जायेगा।

**श्रीमती अनीता कुमार**
**प्रधानाध्यापक**
**शासकीय माध्यमिक शाला खामखेडा**
**विकासखंड - देवरी, जिला - सागर, मध्यप्रदेश**

आयाम-1 कहानी क्रमांक-9

**शासकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय खिरकिया**
**विकासखंड - खिरकिया , जिला - हरदा,मध्यप्रदेश**
**यू डाईस कोड- 23360316405**

इस विद्यालय में सभी जाति, वर्ग एवं सभी धर्मों की छात्राएँ अध्ययनरत हैं। यह क्षेत्र निमाड़ और भुआणा की संस्कृति वाला क्षेत्र हैं इस विद्यालय में अध्यनरत छात्राओं की आर्थिक स्थिति निम्न हैं, किन्तु नगर के लोगों की स्थिति मध्यम वर्गीय हैं| यहाँ का व्यवसाय - व्यापार कृषि एवं मजदूरी हैं| यहाँ पर पाँच राष्ट्रीकृत बैंक, एक शासकीय अस्पताल 15 अशासकीय विद्यालय, 6 शासकीय विद्यालय एक निजी महाविद्यालय एक डाक घर एवं एक पुलिस थाना हैं।

हमारे विद्यालय में नगर के 10 वार्डों की छात्राएँ अध्ययनरत हैं| जिनमें से अधिकांश छात्राओं के माता -पिता मजदूरी करते हैं, जिस कारण छात्राओं को घरेलू कार्य जैसे- झाड़ू - पौंछा बर्तन साफ करना , खाना बनाना छोटे भाई - बहनों की देखभाल करना आदि काम करना होते हैं। ऐसी विषम परिस्थिति में हमारे पूरे स्टाफ के सदस्यों शाला प्रबंधन समिति के सदस्यों एवं बाल केबिनेट के सदस्यों ने अनेक प्रयास जैसे - पालकों की बैठक, पालकों के घर - घर जाकर सम्पर्क आदि किए, किन्तु हमें आंशिक सफलता ही मिल पाई। हमारे सभी प्रयासों के उपरांत भी विद्यालय की औसत उपस्थिति 65 प्रतिशत से अधिक नहीं हो पाती थी। हम लोग हमेशा चिंतित रहते थे क्योंकि छात्राओं की नियमितता से ही शिक्षा के समस्त लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता हैं। छात्राओं की अनियमितता के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं -

- ❖ छात्राओं की घरेलू कार्य की जिम्मेदारियाँ।
- ❖ छात्राओं का अचानक मासिक धर्म आ जाना।
- ❖ छोटे भाई बहनों को संभालना।
- ❖ पालकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता का अभाव।
- ❖ कम उम्र में छात्राओं का विवाह करना।

अतः हमारे स्टाफ के सदस्यों ने उपस्थिति को प्रोत्साहित करने हेतु कुछ नवाचार प्रारंभ किये।

| | |
|---|---|
|  |  |
| **पालकों से घर जाकर किया सम्पर्क** | **शाला प्रबंधन समिति की बैठक** |

**बदलाव**

- जनसमुदाय के सहयोग से सेनेटरी पैड की वेन्डिंग मशीन लगवाना|

इस विद्यालय में 11 से 17 आयु वर्ग छात्राएँ अध्ययनरत हैं इस आयुवर्ग की छात्राओं में विद्यालय में अचानक मासिक धर्म आने से छात्राएँ असहज महसूस करती थीं तथा मासिक धर्म की सम्भावित तारीख के पूर्व से ही विद्यालय आना बंद कर देती थीं । हमारे विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं ने छात्राओं से इस समस्या को समझा तथा उनकी समस्या को स्थानीय माहेश्वरी महिला मंडल को अवगत कराया गया उनके द्वारा इस विषय पर गंभीरता से विचार कर सेनेटरी वेन्डिंग मशीन विद्यालय दान में दी गई तथा सेनेटरी पैड के उपयोग से होने वाले लाभ छात्राओं को बताये गये। छात्राओं में अचानक मासिक धर्म आने पर वह विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं के सहयोग से वेन्डिंग मशीन से सेनेटरी पैड निकालकर इस्तेमाल करने लगीं। इससे उनके मन में झिझक और शंका का निदान हुआ ओर छात्राएँ नियमित विद्यालय आने लगीं जिससे विद्यालय में छात्राओं की उपस्थिति एवं ठहराव में सुधार हुआ।

| | |
|---|---|
|  |  |
| **माहेश्वरी महिला मंडल खिरकिया द्वारा सेनेटरी पैड वेन्डिंग मशीन भेंट** | **विद्यालय की छात्रा वेन्डिंग मशीन का उपयोग करते हुए** |

उपरोक्त प्रयासों से निम्लिखित बदलाव भी परिलक्षित हुए -

- नियमित उपस्थिति में वृद्धि
- विद्यालय की औसत उपस्थिति में वृद्धि
- छात्राओं का शाला की ओर झुकाव
- शैक्षणिक गुणवत्ता में वृद्धि
- पालकों का शाला से जुड़ाव
- प्रतिमाह शत-प्रतिशत उपस्थिति वाली छात्राओं को पुरुस्कृत करना

इस विद्यालय में सत्र 2017 -18 से प्रत्येक माह शत-प्रतिशत उपस्थित रहने वाली छात्राओं को माह के अंतिम कार्य - दिवस पर पुरुस्कृत करने का कार्य प्रारंभ किया तथा उन छात्राओं के नाम विद्यालय के मुख्य सूचना पटल पर पूरे माह के लिए अंकित कर प्रोत्साहित किया। साथ ही शत-प्रतिशत उपस्थिति रहने वाली छात्राओं के फोटो एवं समाचार, समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई जिससे छात्राओं एवं उनके पालक प्रोत्साहित हुए। छात्राओं को पुरस्कार प्रदान करने में नगर के समाज सेवियों का योगदान रहा। इन बदलावों से छात्राओं की उपस्थिति में धीरे-धीरे वृद्धि हुई तथा विद्यालय आने के प्रति छात्राओं में रूचि जागृत हुई, पालकों में छात्राओं को शाला भेजने हेतु समझ विकसित हुई। इस विद्यालय में छात्राओं की विगत वर्षो में उपस्थित 55 से 65 प्रतिशत तक ही रहती थी वह बढ़कर 70-80 प्रतिशत तक हो गई।



शत-प्रतिशत उपस्थिति वाली छात्राओं को पुरुस्कृत करते अतिथिगण



छात्राओं को पुरुस्कृत करते हुए अधिकारी



छात्राओं को पुरुस्कृत करते हुए डाईट प्राचार्य

- प्रार्थना सभा में विभिन्न कार्यों की जिम्मेदारी छात्राओं को देना।

इस विद्यालय में एक और नवाचार प्रारंभ किया गया वह हैं प्रार्थना सभा की जिम्मेदारी छात्राओं को देना। इस विद्यालय में प्रातःकालीन प्रार्थना सभा में निम्न आठ कार्य किये जाते हैं। जैसे- सरस्वती वंदना ,राष्ट्रीय गीत , मध्यप्रदेश गान , शाला प्रतिज्ञा , आज का पंचाग , आज के समाचार , आज का सुविचार ,जन्म दिवस मनाना|

उपर्युक्त कार्यों की जिम्मेदारी एक दिन पूर्व बाल केबिनेट के द्वारा छात्राओं दी जाती हैं तथा इस का भी विधिवत रिकार्ड संधारित किया जाता हैं इस कार्य से भी छात्राओं की प्रतिभा में निखार आता हैं उनके मन की झिझक दूर होती हैं तथा उनमें अपनी जिम्मेदारी का अहसास होता हैं कि आज की प्रार्थना सभा में हमारा भी एक अहम रोल हैं। इस कार्य से भी विद्यालय में उपस्थिति के प्रतिशत में वृद्धि हुई हैं।

हमारे विद्यालय में उपर्युक्त नवाचार करने से इस विद्यालय की औसत उपस्थिति वृद्धि हुई हैं | विगत वर्षो  में धार्मिक त्यौहार वाले महीनों में यह उपस्थिति थोड़ी सी कम हो जाती थी क्योंकि पालकों द्वारा धार्मिक त्यौहार की तैयारियाँ छात्राओं से कराई जाती हैं। किन्तु फिर भी विगत तीन वर्षो में छात्राओं की उपस्थिति किसी भी माह में 75 प्रतिशत से कम नहीं हुई हैं। उपस्थिति में वृद्धि के परिणाम स्वरुप हमारे विद्यालय की छात्राओं ने शैक्षणिक गुणवत्ता के साथ -साथ पाठ्य सहगामी क्रियाएँ जैसे- कहानी उत्सव, मोगली उत्सव आदि में भी जिला तथा राज्य स्तर तक शाला का प्रतिनिधित्व किया हैं। इसके साथ ही प्रतियोगी परीक्षाएँ जैसे नेशनल मेरिट-कम-मीन्स परीक्षा हिन्दी ओलंपियाड गणित ओलंपियाड, विज्ञान प्रश्नमंच  आदि में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की।

**मोगली उत्सव में विद्यालय का प्रदर्शन**

- विकासखण्ड स्तरीय मोगली उत्सव में कु.रानी बरजोर कक्षा 8 वीं ने प्रथम स्थान प्राप्त किया एवं जिला स्तरीय मोगली उत्सव में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
- विकासखण्ड स्तरीय मोगली उत्सव में कु.उमा संतोष सेन कक्षा 7वीं ने प्रथम स्थान एवं जिला स्तरीय मोगली उत्सव में जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया एवं मढ़ई में आयोजित राज्य स्तरीय मोगली उत्सव में जिले का प्रतिनिधित्व किया।
- 2018-19. विकासखण्ड स्तरीय मोगली उत्सव में कु.जयश्री लक्ष्मीनारायण निकुम कक्षा 8वीं ने प्रथम स्थान प्राप्त किया एवं जिला स्तरीय मोगली उत्सव में द्वितीय स्थान प्राप्त किया|

**आगामी योजना**

हमारी आगामी योजना यह हैं कि विद्यालय में औसत उपस्थिति जो वर्तमान मे 75 से 80 प्रतिशत हैं इसमें वृद्धि कर 100 प्रतिशत हो। इस हेतु हमारे द्वारा इस विद्यालय में अध्ययनरत सभी छात्राओं के पालकों के मोबाईल नम्बर लिये जायेंगे एवं जिन पालकों के पास मोबाइल नम्बर नहीं हैं,उनके पड़ोसी या रिश्तेदार के मोबाइल नम्बर लिये जाएंगे, जिससे विद्यालय नहीं आने वाली छात्राओं की प्रतिदिन मोबाईल के माध्यम से उनके पालकों से संवाद किया जा सके तथा उनकी समस्या को समझकर उसका निदान करने का प्रयास कर सकें। इससे पालकों से भी संवाद होगा तथा उनमें विद्यालय एवं शिक्षा के प्रति सकारात्मक सोच उत्पन्न होगी।

हमारी अपेक्षा हैं कि धार्मिक त्यौहारों के समय पालकों द्वारा छात्राओं को नियमित विद्यालय भेजा जाएगा| इसके लिये हमारा शाला परिवार पालकों से संवाद कर उनमें शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास करेंगे तथा विद्यालय में प्रत्येक धर्म के त्यौहारों का आयोजन करने का प्रयास करेंगे। जिससे सभी धार्मिक त्यौहार के बारे में सभी छात्राओं की समझ विकसित होगी एवं आपसी सौहार्द्र कायम होगा।

हमारा लक्ष्य हैं कि विद्यालय की सभी छात्राएँ प्रतिभा पर्व तथा वार्षिक मूल्यांकन में ए ग्रेड प्राप्त करें।

**प्रदीप कुमार रिछारिया**
**प्रधानाध्यापक**
**शासकीय कन्या माध्यमिक शाला खिरकिया**
**विकासखंड - खिरकिया जिला-हरदा,मध्यप्रदेश**

आयाम-1 कहानी क्रमांक-10

## शासकीय माध्यमिक विद्यालय पिपरिया (भाण्डी)

## विकासखण्ड- वारासिवनी, जिला - बालाघाट

## यू डाईस कोड -.23450708101

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि प्रधानाध्यापक की लगन, मेहनत, सामंजस्य, दूरदर्शिता विद्यालय की सफलता के मुख्य स्रोत हैं। ऐसा ही एक उदाहरण हमें शासकीय माध्यमिक विद्यालय पिपरिया (भाण्डी) में देखने को मिलता हैं, जहाँ के विद्यालय प्रधानाध्यापक ने "शाला प्रधानध्यापक क्षमता विकास प्रशिक्षण" से प्रभावित होकर "स्वंय का विकास" आयाम से नेतृत्व क्षमता को बढ़ाने में मदद मिली| जिसने पालक, शिक्षक, विद्यार्थी, गणमान्य नागरिकों आदि सभी से वांछित सहयोग की अपेक्षा के लिए अपील की गई| जिसके बाद अधिकारियों से सम्पर्क कर कार्यक्रम की पृष्ठभूमि से अवगत कराया और शून्य निवेश नवाचार के काम को पूर्ण किया| जिसके फलस्वरूप विद्यालय लगातार उन्नति की ओर अग्रसर हैं।

माध्यमिक विद्यालय पिपरिया (भांडी) में कुल दर्ज संख्या 163 हैं, जिसमें 84 बालक एवं 79 बालिकाएँ हैं।

**समस्या:-**

- विद्यालय में नामांकन में गिरावट होना
- विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति का कम होना
- शाला में संसाधनों की कमी एवं पालकों का सहयोग न मिल पाना

**बदलाव:.**

- विद्यालय में दर्ज संख्या बढ़ी उपस्थिति बढ़ी जनसहयोग प्राप्त हुआ।
- अशासकीय शालाओं से हमारी शाला में विद्यार्थी दर्ज हुए।
- विद्यार्थी श्रमोदय विद्यालय के लिए चयन हुए मेरिट कम मीन्स छात्रवृत्ति के लिए चयन हो न रहा हैं। हिन्दी गणित ओलम्पियाड में चयन हुआ।

- कौन बनेगा नॉलेज विनर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। बस्ते का बोझ कम करने के लिए पुस्तक कॉर्नर बनाये गये।

**समस्या समाधान की रणनीति:.**

1. शाला प्रबंधन समिति की लगातार मीटिंग का आयोजन बाल केबिनेट का गठन विज्ञान मित्र क्लब का गठन कर समस्या समाधान की रणनीति तैयार की गयी।

2. प्रति शनिवार बाल सभा के समय कौन बनेगा नॉलेज विनर प्रतियोगिता पूर्णत: कौन बनेगा करोड़पति की तर्ज पर कम्प्यूटर, स्पीकर, माईक के.बी.के. बॉक्स रजिस्टर विद्युत सुविधांए प्राप्त कर सभी शिक्षकों के सहयोग से एवं पुरस्कार वितरण करने के लिए जन सहयोग प्राप्त कर आयोजन किया जाने लगा तो विद्यालय आकर्षण का केन्द्र बना।

3. विद्यालय में बस्ते का बोझ कम करने के लिए पुस्तक कॉर्नर तैयार किए गए। जिससे विद्यार्थी पुरानी पुस्तकों से विद्यालय में अध्ययन कार्य करने लगे एवं नई पुस्तकों से घर पर अध्ययन कार्य किया जाने लगा इस तरह से विद्यार्थियों को पुस्तकें लाने.जाने का भार कम हुआ।

4. प्रतिदिन विद्यालय में हाथ धुलाई कार्यक्रम, स्वच्छ पेयजल व्यवस्था, पुस्तकालय का उपयोग, नियमित खेलकूद, कार्यक्रम योगाभ्यास, रूचिकर मध्यान्ह भोजन, शासन से मिलने वाली सर्व सुविधाओं का लाभ व उपलब्धता सुनिश्चित की गयी।

5. विद्यार्थियों की दक्षता बढ़ाने के लिए सभी विद्यार्थियों एवं पालकों को व्हाट्सअप ग्रुप के माध्यम से अवगत कराया जाने लगा। एवं विद्यालय में दक्षता परिणाम का निरंतर प्रदर्शन किया जाने लगा| जिसके फलस्वरूप विद्यालय में एण्ड लाईन टेस्ट परिणाम 97 प्रतिशत तक पहुँचा।

| | |
|---|---|
|  |  |
| **शाला प्रबंधन समिति एवं शिक्षक संघ की बैठक** | **बाल केबिनेट की बैठक** |

6. कौन बनेगा नॉलेज विनर प्रतियोगिता (के.बी.के) के लिए जन सहयोग प्राप्त कर विद्यार्थियों को शैक्षणिक सामग्री पुरस्कार के रूप में देकर मदद की गयी। इस तरह के.बी.के के आयोजन के लिए किसी भी राशि का उपयोग न होना शून्य निवेश नवाचार बना एवं बाल सभा के कार्यक्रम में आयोजित करने से समय का दुरूपयोग भी नहीं हुआ।

7. विद्यार्थियों में सामान्य ज्ञान की वृद्धि तर्क शक्ति का विकास खोजी प्रवृत्ति का विकासए आत्मविश्वास की बढ़ोत्तरी मंच संचालन की भावना का विकास प्रतियोगिता की भावनाओं का विकास प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी, विषयों से संबंधित ज्ञान पढ़ाई में रोचकता विद्यालय में उपस्थिति की बढ़ोत्तरी पालकों को शाला से जोड़ने का प्रयास शिक्षकों की सहभागिता अनुशासन एवं नियमों का पालन, स्वस्थ मनोरंजन एवं शैक्षणिक सामग्री पुरस्कार के रूप में देकर विद्यार्थियों की मदद करना |

8. कौन बनेगा नॉलेज विनर प्रतियोगिता की सफलता में एम.पी.एजुकेशन न्यूज पोर्टल मीडिया ग्रुप, पत्रकार, वाट्सअप, यूट्यूब, फेसबुक एवं उच्च अधिकारियों का सहयोग प्राप्त हुआ।

**शाला में संचालित गतिविधियों की एक झलक:**




**स्थिरता :** उपरोक्त सभी कामों को करने के बाद विद्यार्थियों में सीखे गए ज्ञान से उनका आगे का सीखना निरंतर जारी रहेगा, और बच्चों की उपस्थिति भी बढ़ेगी |

**आगामी योजना** : कौन बनेगा नॉलेज विनर प्रतियोगिता का आयोजन लगातार संचालित होता रहेगा| बस्ते का बोझ कर करने की दिशा में पहल जारी रहेगी एवं विद्यालय में पूर्व संचालित सभी कार्यक्रम निरंतर संचालित होते रहेंगे ।

**टी.एल.भालेकर**
**प्रधानाध्यापक**
**शासकीय माध्यमिक विद्यालय**
**विकासखंड- वारासिवनी,जिला-बालाघाट, मध्यप्रदेश**

आयाम-1 कहानी क्रमांक-11

# शासकीय प्रवीण कुमारी कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय क्रमांक 1
## विकासखंड - रीवा, जिला - रीवा ,मध्यप्रदेश
## यू-डाईस कोड - 23323140123711

रीवा शहर के मध्य एक ऐसा ही शिक्षा का मंदिर हैं जो राजतंत्र के जमाने से आज तक ज्ञान की सुरभि किरणें बिखेर रहा हैं जिससे समाज विवेकशील होकर प्रकाशमान हो रहा हैं। शिक्षा ज्ञान का प्रकाश लाती हैं तो अपने साथ बदलाव की बयार भी लाती हैं। इस बदलाव में न केवल शिक्षक अपितु छात्र एवं जन सामान्य को भी समय की कसौटी पर खरा उतरना होता हैं। इन्हीं चुनौतियों का सामना कर सिरमौर चौराहा रीवा स्थित शासकीय प्रवीण कुमारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अपने बदलाव की कहानी खुद ही लिख रहा हैं।

यहाँ की प्राचीन इमारत में गढ़े गए ईंट पत्थर और गारे से बनी नक्काशी और झरोखे ककहरा (वर्णमाला) से लेकर इमला (श्रुतलेख) तक ए.बी.सी.डी. से लेकर पोयम (कविता) तक अंक जोड़ घटा गुना भाग तक और उसके आगे की भी कहानी यहाँ के शिक्षकों की जुबानी कह रहे हैं। वास्तव में अच्छी शिक्षा अनमोल होती हैं क्योंकि शिक्षा के द्वारा ही संसार के विषय - वस्तुओं से इंसान का परिचय संभव होता हैं।

पुनर्गठन में मध्यप्रदेश की स्थापना 01 नवम्बर 1956 को हुई। विद्यालय का उन्नयन हाई विद्यालय एवं हायर सेकेण्ड्री के रूप में हुआ और उसी समय से विद्यालय का नामकरण शासकीय प्रवीण कुमारी कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय रीवा के नाम से किया गया। विद्यालय का नामकरण महाराजा गुलाब सिंह के पुत्र तत्कालीन महाराजा मार्तण्ड सिंह जू देव की धर्म पत्नी महारानी प्रवीण कुमारी जू देई के नाम से किया गया। विद्यालय के भवन में ही अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय की स्थापना की गई और विद्यालय के साथ-साथ विश्वविद्यालय की गतिविधियाँ भी संचालित होती रहीं। लोकतंत्र की कच्ची पगडण्डियों से चलते हुए शनैः - शनैः विद्यालय की आधारभूत संरचनायें विकसित होती रही और विद्यालय रीवा शैक्षणिक गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु रहा। विद्यालय में कक्षा-1 से 8वी तक को-एजुकेशन और 9वीं से 12वीं तक छात्राओं के अध्ययन की स्वीकृति तत्कालीन प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा प्रदान की गई थी। लगभग 80 के दशक में विद्यालय पूर्ण रूप से बालिकाओं के अध्ययन अध्यापन के लिये पृथक किया गया जो कक्षा 1 से

12वीं तक संचालित हैं| विद्यालय चूंकि शिक्षा जगत का मुख्य केन्द्र बिन्दु रहा हैं इसलिए यहाँ अध्ययन - अध्यापन का कार्य कुशल शिक्षकों द्वारा किया जाता रहा और इस विद्यालय से महान विभूतियाँ निकली जो अलग-अलग क्षेत्रों में कार्य कर देश प्रदेश का नाम रोशन कर रही हैं।

रीवा रियासत के वैभव की बानगी देता पुराना भवन धीरे-धीरे जर्जर हो चला था, परंतु विद्यार्थियों की बढ़ती संख्या के दवाब में जर्जर भवन पूर्णतः छोड़ पाना संभव नहीं हो पा रहा था। बरसात के दिन थे, लगातार बरसते पानी से पुराने भवन की जर्जरता ने हमें आशंकित करना शुरू कर दिया| भवन में 24 इंच की दिवारे मजबूती से खड़ी थीं पर सरई के गोले पर टिकी पटिया की छत जैसे गिरने ही वाली थी। आशंकाओं से घिरे मस्तिष्कों में विकल्प की तलाश चल रही थी।

शिक्षकों में आपसी सहमति से निर्णय लिया कि भवन के जीर्णोधार का इतने बड़े भवन की छत को बदलना आसान नहीं हैं। अनुमानित व्यय राशि 10 लाख रूपये जुटाने के रास्ते समझ नहीं आ रहे थे। प्राचार्य प्रधानाध्यापक और शिक्षकों ने मिलकर शाला प्रबंध समिति की बैठक में समस्या को रखने का निर्णय लिया। इस बैठक में निम्नलिखित निर्णय लिए गए -

- शाला प्रबंधन समिति की बैठक में आवश्यकता और योजना विस्तृत चर्चा |
- भवन की छत में लकड़ी के गोले निकाल कर लोहे के गाटर लगाना।
- दीवारों पर प्लास्टर कराना।
- गिट्टी की छत बनाना।
- बिजली की फिटिंग कराना।
- पूरे कार्य के लिये अनुमानित व्यय राशि एकत्रित करना |

उपरोक्त सभी कामों को पूरा करना बहुत बड़ा लक्ष्य था, पंरतु बदलाव की चाह और राजसी भवन के प्रति भावात्मक लगाव ने निर्णय को पूर्णता तक पहुँचाया। अभिभावकों गणमान्य नागरिकों भूतपूर्व विद्यार्थियों एवं तत्कालीन जिला शिक्षा अधिकारी एवं संयुक्त संचालक लोक शिक्षण रीवा संभाग के सम्माननीयगणों के सहयोग से लगभग 1 वर्ष की अवधि में रंगा - पुता भवन पुनः अपनी शान में लौट आया| विद्यालय भवन का हाथी दरवाजा पुनः अपने आकर्षक डिजाइन में स्वागत के लिये तैयार हो गया था।

विद्यालय रीवा रियासत की दो मंजिल इमारत थी जिसमें पत्थर के ढोके की दीवार 24 ईंच मोटी बनी हुई हैं पत्थर की पटिया की छत सरई के गोले से निर्मित छत जर्जर हो चुकी थी। जिसके कायाकल्प हेतु शाला प्रबंधन समिति, प्राचार्य प्रधानाध्यापक शिक्षक समुदाय के लोगों ने बढ़ - चढ़

कर भाग लिया। विद्यालय के सभी गोले स्थानान्तरित कर लोहे के गाटर, प्लास्टर, गिट्टी की छत बिजली की फिटिंग कराई गई। जिसे कुशल कारीगरों ने एक वर्ष में तैयार किया।

विद्यालय के प्राचीन भवन से संलग्न आधुनिक साज-सज्जा के साथ माध्यमिक विभाग को राज्य शिक्षा केन्द्र से प्राप्त राशि से नये शौचालय का निर्माण भी कराया गया। विद्यालय का प्राचीन भवन ऐतिहासिक होने के कारण पहले से ही बहुत सुन्दर भवन था जिसमें रंग, पेन्ट, पुताई हो जाने के कारण बहुत ही आकर्षक एवं सुन्दर दिखने लगा। विद्यालय का मुख्य द्वार हाथी दरवाजे के नाम से प्रसिद्ध हैं जिसमें दोनों तरफ हाथियों की मूर्ति स्थापित हैं जिसके कारण मुख्य द्वार बहुत ही आकर्षक लगता हैं।



निःशुल्क पुस्तक वितरण


रीवा फ्रंट पेज

80 साल पुरानी बिल्डिंग में फिर लगेंगी कक्षाएं

समाचार पत्र में प्रकाशित स्कूल जीर्णोधार की खबर

विद्यालय एक बार फिर अपनी नियमित दिनचर्या में लौटने लगा। पुस्तकालय स्मार्ट क्लास सुविधा,समूह, शिक्षण, रोटेशन पर आधारित बैठक व्यवस्था,विज्ञान मित्र क्लब,विज्ञान क्लब का गठन, बाल कैबिनेट का गठन, अनुशासन समिति, सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति, गणवेश का वितरण, निःशुल्क पुस्तक वितरण, वार्षिक-उत्सव, मिल- बांचे, उपहार योजना जैसी गतिविधियों में विद्यालय को कभी पीछे मुड़कर देखने की जरूरत नहीं पड़ी।

उक्त योजना अन्तर्गत तत्कालीन ऊर्जा एवं खनिज मंत्री म.प्र. शासन कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि छात्राओं के साथ सुरूचि भोज में सम्मिलित होने हेतु उपस्थित हुये थे। उन्हें विद्यालय की समस्या से अवगत कराया गया कि विद्यालय का हॉल जर्जर हैं

जबकि विद्यालय के पास पर्याप्त जमीन हैं उन्होंने कार्यक्रम के दौरान ही पुराने जर्जर हाल को पी.डब्ल्यू.डी. प्रशासनिक अधिकारियों को निर्देशित किया कि हॉल का निर्माण एक महीने के अंदर हो

जाए और एक बागीचा 06 महीने में निर्मित कर दिया जायेगा और नगर निगम रीवा द्वारा नव निर्मित हॉल तत्काल विद्यालय को सुपुर्द किया जाए।

तत्काल कार्यवाही होकर विद्यालय के पुराने हॉल का निर्माण 06 महीने के अंदर एक सुन्दर अटल वाटिका लगभग 3 एकड़ में एवं नगर निगम रीवा ने सुसज्जित हॉल विद्यालय को सुपुर्द किया गया।

उपहार योजना के अन्तर्गत शाला प्रबंधन समिति के समक्ष प्रधानाध्यापक ने बैठक में जानकारी दी कि कुछ छात्राओं के साथ कापी- पेन का अभाव हैं जिसके कारण छात्राओं को अभ्यास पुस्तिका बनाने में दिक्कते हो रही हैं जिसके कारण गृह कार्य जैसे-महत्वपूर्ण कार्य को पूर्ण नहीं कर पा रहीं हैं। स्वयंसेवी विद्यालय से सम्पर्क किया गया और विद्यालय के द्वारा 04 सितम्बर 2019 को कॉपी,पेन, पेन्सिल, रबर, टाफी वितरित की गई। प्रधानाध्यापक द्वारा समाजसेवी विद्यालय के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया गया।

सम्मिलित प्रयास से एक बड़ी समस्या का समाधान हो चुका था किंतु अब एक नई चुनौती सामने खड़ी थी "गुणवत्तापूर्ण शिक्षा" यह शिकायत बार-बार आ रही थी कि सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले छात्र/छात्रायें 9वीं, 10वीं कक्षा में तो पहुँच जाते हैं लेकिन उन्हें लिखना-पढ़ना नहीं आता। शिक्षकों को भी आलोचना का सामना करना पड़ रहा था। किन्तु प्रवीण कुमारी विद्यालय के शिक्षकों ने इस चुनौती को भी स्वीकार किया और फिर प्रतिदिन विद्यालय में होने वाली प्रार्थना को जीवन में उतारने का संकल्प लिया|

शिक्षकों ने कागजों में किए जा रहे नवाचार को धरातल पर उतारा और फिर प्रधानाध्यापक के मार्गदर्शन में बच्चों के अनुकूल वातावरण बनाकर कार्य शुरू किया गया। जल्दी ही इसके परिणाम भी दिखने लगे। छात्रों का भी पढ़ने-लिखने में मन लगने लगा और वे शीघ्र ही वांक्षित दक्षता प्राप्त कर रहे हैं।

विद्यालय के संचालन में शिक्षक विद्यार्थी और समाज की बहुत बड़ी भूमिका होती हैं। इसी कड़ी को देखते हुए विद्यालय में पालक शिक्षक संघ का गठन किया जाता रहा जिसमें उत्कृष्ट विद्यार्थियों के अभिभावक/पालक को चुनाव के माध्यम से चयनित किया जाता रहा हैं। जिसमें अध्यक्ष उपाध्यक्ष और सदस्य मनोनीत किये जाते रहे हैं। और विद्यालय के वित्तीय और अकदमिक दायित्वों के निर्वहन में शिक्षक पालक संघ की भूमिका रहती हैं। जिसमें माह में बैठक आयोजित की जाती हैं।

जिसमें विद्यालय के शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ विद्यालय की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रस्ताव स्वीकृत हेतु शिक्षक शाला प्रबंधन समिति के समक्ष रखा जाता हैं।

शाला प्रबंधन समिति द्वारा अभिभावक सम्मेलन आयोजित कर विद्यालय के बच्चों के शैक्षणिक गुणवत्ता के प्रगति की जानकारी दी जाती हैं जिसमें आवश्यक सुधार में अभिभावकों की भूमिका क्या हो अध्यापकों द्वारा सुधार और कमियों पर चर्चा कर शिक्षको एवं विद्यालय प्रमुख द्वारा की जाती हैं। उनको फीडबैक देकर विद्यार्थियों की शैक्षणिक गतिविधियों में सुधार हेतु व्यापक स्तर पर उन कमियों को चिन्हित किया जाता हैं जिन पर सुधार की आवश्यकता होती हैं। और उन्हें पूर्ण करने के लिये अपने विषय ज्ञान के साथ-साथ कौशल विधियों का प्रयोग करते हैं

जिसके कारण विद्यार्थियों के शैक्षणिक गुणवत्ता में सुधार आ सके। इसके अपेक्षित परिणाम भी सामने आने लगे हैं| जिसमें प्रमुख रूप से विद्यालय में छात्राओं की उपस्थिति बढ़ी हैं और शाला में उपस्थित रहने वाले बच्चों में अपेक्षित सुधार हुआ हैं।

अब विद्यालय में नियत समय पर प्रार्थना सभा होती हैं। छात्राएं समाचार पत्रों का वाचन करती हैं। निर्धारित कालखण्ड में दक्षता उन्नयन एवं विषयगत शिक्षण कार्य हो रहे हैं। शिक्षकों के मार्गदर्शन में नियमित खेलकूद होते हैं। जिसकी वजह से विद्यालय की छात्राओं ने राज्य स्तरीय खेलों में भाग लिया। वहीं शैक्षणिक गतिविधियों में विद्यालय की छात्राओं ने राष्ट्रीय स्तर पर भाग लेकर विद्यालय को गौरवान्वित किया हैं। साहित्यिक गतिविधियों में भी छात्राओं ने बढ़- चढ़ कर भाग लिया। राष्ट्रीय मीन्स-कम मेरिट परीक्षा में चयनित हुई हैं। स्वच्छता के मामले में विद्यालय को स्वतंत्रता दिवस समारोह में जिले का प्रथम पुरस्कार मिला हैं, साथ ही रेडक्रास, स्काउट के परेड में छात्राओं को उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए शील्ड एवं प्रमाण पत्र मिला हैं। इन तमाम नवाचारों के लिये हाल ही में शिक्षक दिवस के मौके पर कमिश्नर रीवा एवं कलेक्टर ने प्रधानाध्यापक को पुरूस्कृत किया हैं।



**तत्कालीन रीवा कमिश्नर एवं कलेक्टर द्वारा सम्मान समारोह**

**आगामी योजना-**

- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिये शाला प्रबंधन समिति के सहयोग से आधुनिक सुविधायुक्त लाइब्रेरी का निर्माण| जिसके लिये विद्यालय परिवार समाज समुदाय के लोगों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हैं।

**अमरनाथ तिवारी**

**प्रधानाध्यापक**

**शासकीय प्रवीण कुमारी कन्या उ.मा.वि.**

**विकासखंड - रीवा, जिला - रीवा, मध्यप्रदेश**

# विद्यार्थियों के लिए शिक्षण अधिगम प्रक्रियाः- आयाम-2

शिक्षण वास्तव में एक तकनीक ही हैं प्रायः देखा गया हैं कि किसी विद्यालय में कोई शिक्षण बहुत ही लोकप्रिया होते हैं तो कोई खास प्रभावी नहीं होते।

शिक्षण यह सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार हैं कि सभी विद्यार्थियों को सीखने में पूरी तथा भावना लेने के लिए अवसर और सहायता मिले। ऐसा सभी संभव होगा यदि संसाधनों का प्रबंधन प्रभावी ढंग से और सीखने की प्रक्रिया को सुधारने के स्पष्ट प्रयोजन के साथ किया जाए। शिक्षण और अध्यक्षता की क्रिया में बहुत से कारक शामिल होते हैं। जिसमें शिक्षण का विद्यालय की स्पष्ट एवं संचार प्रोद्योगिकी का उपयोग करना प्रमुख हैं।

एक नेतृव्वकर्त्ता होने के नाते हमारी यह भूमिका महत्वपूर्ण हैं जिसमें हम शिक्षकों को इनकी कक्षाओं में प्रयोग करने और अपने कार्यभ्यास पर विचार करने में सहायता करना हैं। साथ ही भागीदारी पूर्ण पद्धतियॉ को कक्षा में संचालित करके दिखाना  भी प्रमुख हैं।

एक नेतृव्वकर्त्ता के रूप में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सहज,सरल तथा सक्षम बनाने के लिए नवीन पद्धतियॉ को अपनाना आवश्यक हैं जिसमें से कुछ इस प्रकार हो सकती है|

1.**स्थानीय परिवेष के अनुसार अनुकूलनः-**

यदि शिक्षण को शिक्षण प्रभावी बनाना हैं तो पहले उसे खुद को स्थानीय परिवेष में समाहित करना होगा जिससे वह वहॉ की भाषा  और व्यवहार के तोर तरीके समझ सकें।

2.**विद्यार्थियों को संस्कृतिक पारिवारिक परिस्थितियों को जाननाः-**

अच्छे शिक्षण के लिए जरूरी हैं कि शिक्षण विद्यार्थियों के पारिवारिक और  सांस्कृतिक माहौल की पूरी जानकारी रखें। इसका एक उदाहरण देखा गया कि एक शिक्षण ने छात्र द्वारा गृहकार्य करके न पाने पर उसे डांट दिया जिससे छात्र ने विद्यालय आना ही बंद कर दिया । जब उसने घर जाकर पता चला कि उसकी मां कुछ दिनों से बीमार थी तो उसको घर का काम करना पड़ता था जिस कारण वह गृहकार्य नहीं कर पाया था। यदि शिक्षण पूर्व से उसकी परिस्थितियों से परिचित होता तो ये स्थिति निर्मित न होती।

3. **स्थानीय जुडावः-**

शिक्षकों को चाहिए कि प्रभावी शिक्षण के लिए वो स्थानीय सामग्री से ही सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण करें क्योंकि छात्र इससे परिचित भी होते हैं तो ज्यादा प्रभाव डालती हैं।

4. **उचित समूह निर्माणः-**

प्रभावी शिक्षण हेतु जरूरी हैं कि शिक्षण कक्ष में ऐसे समूह बनाये जिसमें सभी स्तर के छात्र सम्मिलित हो और सभी को उचित अवसर भी मिलना सुनिश्चित हों।

मध्यप्रदेष में विधार्थियों के लिए शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया पर केन्द्रित होकर कई शालाओं में काम किया हैं। जिसमें से कुछ शालाओं के कार्यों को और अनुभवों को संचालित किया गया हैं। यह संकलन दूसरी शाला और शिक्षकों में स्वंय के कार्य को बेहतर बनाने में मददगार रहेगा।

आयाम-2 कहानी क्रमांक-1

# पुस्तकालय का शिक्षण-अधिगम हेतु उपयोग
## शासकीय माध्यमिक शाल, सोनोरा
## विकासखंड- मुलताई , जिला- बैतूल, मध्यप्रदेश
## यू . डाईस कोड - 23350800903

सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला में बसे बैतूल जिले के बालाजीपुरम मंदिर से 40 किलोमीटर पूर्व में ताप्ती नदी के उद्गम स्थल मुलताई से पश्चिम में बिरूलबाजार रोड़ पर 07 किलोमीटर दूर सोनोरा ग्राम में सन् 1984 में शासकीय माध्यमिक शाला सोनोरा विकासखंड मुलताई जिला .बैतूल स्थित हैं।

विद्यालय के निकट ग्रामीण अंचल की पृष्ठभूमि हैं विद्यालय का भवन पक्का हैं जिसमें 5 कमरे व छोटा सा खेल मैदान तथा चारों ओर तार फेसिंग व हरे भरे पेड़ लगे हैं।

विद्यालय में गॉव (गांव सोनोरा, आमल) के विद्यार्थी पढ़ने आते हैं। विद्यालय में अध्ययनरत 105 विद्यार्थी हिन्दी भाषी हैं। विद्यार्थियों के अभिभावक कृषि कार्य करते हैं। ग्राम में 524 पुरूष एवं 488 महिला निवासरत हैं। ग्राम की कुल जनसंख्या 1012 हैं जिसमे से में अधिकांश पिछड़ा वर्ग व अनुसूचित जाति वर्ग के हैं। जिनकी अनुमानित वार्षिक आय 50000/- रू हैं।

इस ग्राम में आंगनवाडी, उपडाकघर, उपभोक्ता भण्डार केन्द्र उपस्वास्थ्य केन्द्र की सुविधा उपलब्ध हैं।

| | |
|---|---|
|  |  |
| प्रार्थना सभा में उपस्तिथ विद्यार्थी | विद्यार्थीयों द्वारा शाला कार्यक्रम संचालन |

| | |
|---|---|
|  |  |
| **जिला स्तर पर प्रथम स्थान पर आने वाले प्रतिभागी** | **सुव्यवस्थित पुस्तकालय कक्ष** |

ग्रामीण क्षेत्र में स्थित इस शाला में अध्ययनरत विद्यार्थियों के अभिभावक शिक्षा के अभाव व आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण वे अपने विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति जागरूक नही होने के कारण हमारे द्वारा अवलोकन व अनुभव के आधार पर शासकीय माध्यमिक शाला सोनोरा में निम्नलिखित समस्याएँ चिन्हित की गयी-

- द्वारा बालसभा प्रार्थनासभा व सह-शैक्षिक गतिविधियों में कम भाग लेना।
- विद्यार्थियों का सामान्य ज्ञान कम होना।
- अत: विद्यार्थियों में पढ़ने के प्रति रूचि जागृत करने का पुस्तकालय ही बेहतर माध्यम लगा क्योंकि वहाँ पुस्तक पढ़ने की स्वतंत्रता ,मनपसंद पुस्तक व टापिक पढ़ने की छुट व पढ़ने के बाद किसी भी प्रकार की परीक्षा देने का भय नही रहता हैं। अत: विद्यार्थी स्वतंत्रता का अनुभव करते हैं किन्तु विद्यालय में पुस्तकालय क्रियाशील नहीं था। उपरोक्त समस्या समाधान हेतु पुस्तकालय को प्रभावी करने में प्रमुख चुनौतियॉ निम्नलिखित थी।
- पुस्तकालय हेतु पुस्तके व कमरे की व्यवस्था।
- विद्यार्थियों को पुस्तकालय से जोड़ना।
- पुस्तकालय का निर्धारित समय पर व नियमित एवं सतत् संचालन।
- पुस्तकालय में अन्य व्यवस्थाएँ ।

पुस्तकालय को प्रभावी बनाने की रणनीति के तहत सत्र 2017.-18 से कार्य प्रारंभ किया गया जिसके तहत सर्वप्रथम शिक्षकों की बैठक आयोजित की गई जिसमें पुस्तकालय को प्रभावी बनाने पर चर्चा उपरांत विद्यालय शिक्षिका को पुस्तकालय प्रभारी नियुक्त किया गया और उन्होने शाला में उपलब्ध पुस्तको की सूची बनाई। तत्पश्चात बाल केबिनेट के सक्रिय विद्यार्थियों से चर्चा कर

पुस्तकालय के महत्व व उपयोगिता को बताकर उन्हे पुस्तकालय से जोड़ा गया। इसके पश्चात एस.एम.सी. की बैठक मे शिक्षक व बाल केबिनेट द्वारा पुस्तकालय संचालन हेतु दिये गये सुझावों (पुस्तक व्यवस्था व संचालन) को रखा गया जिस पर जागरूक पालकों द्वारा सहयोग दिया गया। इसके पश्चात शिक्षक बाल केबिनेट एस.एम.सी. व पालकों की संयुक्त बैठक प्रधानाध्यापक द्वारा आयोजित की गई जिसमें शाला में उपलब्ध पुस्तको की विस्तृत जानकारी दी गई।

विद्यार्थियों की रूचिकर वांछित पुस्तके जैसे चुटकुले, गीत, लघु कहानी, कामिक्स आदि की व्यवस्था पर चर्चा की गई जिसमें शिक्षकों द्वारा घर पर दैनिक समाचार पत्र की साप्ताहिक लघु बाल पंत्रिकाओं (जैसे बाल भास्कर) को शाला में उपलब्ध कराया। इस प्रकार 50 साप्ताहिक लघु पत्रिकाएं शिक्षकों द्वारा 7 पालकों द्वारा 10 लघु कहानी व जीवनी की पुस्तके प्रधानाध्यापक द्वारा शाला को प्रदान की गईं। इस प्रकार शाला को 250 पुस्तकें शाला में उपलब्ध हो गईं।

पुस्तकालय संचालन हेतु एक अतिरिक्त कक्ष की आवश्यकता महसूस की गई| निर्माणाधीन अतिरिक्त कक्ष का निर्माण सरपंच महोदय द्वारा शीघ्रतापूर्ण पूर्ण कराकर शाला को उपलब्ध कराया गया जिससे मॉडल क्लस्टर का कक्ष पुस्तकालय हेतु उपलब्ध हो गया| तात्कालीन एस.एम.सी. अध्यक्ष द्वारा पुस्तकालय का शुभारंभ किया गया।

पुस्तकालय से विद्यार्थियों को जोड़ना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था क्योंकि बहुत कम विद्यार्थी पुस्तकालय में पुस्तके पढ़ते थे। इस चुनौती हेतु प्रधानाध्यापक द्वारा शिक्षकों एवं बाल केबिनेट के सक्रिय विद्यार्थियों के साथ रणनीति बनाकर पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों पर आधारित प्रश्नमंच अंताक्षरी पहेलियॉ कहानी व जीवनी लेखन ,चित्रकला जैसे प्रतियोगी कार्यक्रम का आयोजन कर विजेता एवं सहभागी विद्यार्थियों को पुरस्कार देकर विद्यार्थियों को पुस्तकालय से जोड़ने का प्रयास किया गया जिसमें शिक्षकों ने भी छात्र प्रतिभागी बनकर उत्साह बढ़ाने में सराहनीय कार्य किये।

**बदलाव :**

पुस्तकालय के उपयोग से छात्र-छात्राओं में आये प्रमुख बदलाव निम्नलिखित हैं -

- विद्यार्थियों का प्रार्थना सभा व बाल सभा में सहभागिता करना।
- विद्यालय में सह-शैक्षिक गतिविधियों (सांस्कृतिक, साहित्यिक) में भाग लेना।
- पढ़ाई में विद्यार्थियों का रूचि लेना।
- कार्यक्रम संचालन छात्र/छात्राओं द्वारा करना।
- प्रतियोगिताओं में भाग लेना व जिले में प्रथम स्थान प्राप्त करना।
- अपनी बात बेझिझक रखना|

प्रशिक्षण मे बताई गयी गतिविधियाँ (जैसे खजाने की खोज,समूह पाठन, आदर्श वाचन आदि) के माध्यम से बच्चों को पुस्तकालय से जोड़ने के प्रयास भी किये गये जो सार्थक रहे, जो विगत एक वर्ष से शिक्षिका के मार्गदर्शन में छात्र/छात्राएं पुस्तकालय का संचालन कर रहे हैं।

पुस्तकालय संचालन हेतु वरिष्ठ अनुभवी व कनिष्ठ विद्यार्थियों का समूह बनाया गया हैं| शिक्षक के मार्गदर्शन में व शिक्षको की अनुपस्थिति में भी विद्यार्थी पुस्तकालय का संचालन सुचारू रूप से करते हैं व पुस्तकालय का विधिवत रिकार्ड भी संधारित करते हैं| विगत दो वर्षो से पुस्तकालय सुचारू रूप से संचालित हैं।

**आगामी योजना:**

नवगठित शाला प्रबंधन समिति के सहयोग एवं भूतपूर्व विद्यार्थियों को शाला से जोड़कर उनके सहयोग से पुस्तकालय को वृहद रूप देकर विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु पुस्तको का संकलन करना।

दैनिक समाचार पत्रो से (विषयवार व सामान्य ज्ञान) की कटिंग से स्क्रेप बुक तैयार करना| विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कराना ताकि उनका आत्मविश्वास बढ़े व झिझक दूर हो| वे अपनी बातें सहपाठियों व शिक्षको से साझा कर सके एवं पुस्तक पढ़कर उसका अर्थ समझें व विभिन्न प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक सहभागिता करे।

- आगामी सत्र में शाला में स्मार्ट क्लॉस संचालन की योजना एवं प्रोजेक्टर आदि की व्यवस्था करना|
- विज्ञान वाटिका व किचन गार्डन का निर्माण करना।

सत्य कहने के लिए किसी शपथ की जरूरत नहीं होती ,नदियों को बहने के लिए किसी पथ की जरूरत नहीं होती।

**मिश्रीलाल डढ़ोरे**
**प्रधानाध्यापक**
**शासकीय माध्यमिक शाला, सोनोरा**
**विकासखंड- मुलताई ,जिला -. बैतूल, मध्यप्रदेश**

आयाम-2 कहानी क्रमांक-2

# विद्यार्थियों के लिए शिक्षण -अधिगम प्रक्रिया में सार्थक बदलाव

## शासकीय माध्यमिक विद्यालय ,भलमुड़ी

## विकासखंड -कोतमा ,जिला - अनुपपुर ,मध्यप्रदेश

## यू- डाईस कोड - 231190407801

| | |
|---|---|
|  |  |
| कक्षा शिक्षण | विद्यालय परिसर |

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था - "उठो जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाए|

यह कहानी हैं उस विद्यालय के निरंतर प्रगति और बदलाव की जो जिला मुख्यालय अनूपपुर से सड़क मार्ग से लगभग 80 किलोमीटर एवं विकासखंड मुख्यालय कोतमा से 40 किलोमीटर दूर जंगलों के बीच छत्तीसगढ़ व मध्यप्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्र में स्थित हैं विद्यालय का नाम हैं शासकीय माध्यमिक विद्यालय भलमुड़ी एवं आसपास के 2 गांवों सरिसताल और चन्द्रौठी में अधिकतर लोग अनुसूचित जनजाति के रहते हैं जहां से कक्षा 6 से 8 तक की शिक्षा ग्रहण करने के लिए लोग आते हैं| यहाँ के लोगों की अपनी संस्कृति विरासत एवं रीति-रिवाज हैं तथा यहाँ के लोग स्वभाव से अत्यंत सरल और सादा जीवन जीने वाले हैं|

अधिकांश विद्यार्थियों के माता-पिता कृषि कार्य, वनोपज संग्रह और मजदूरी से धन उपार्जन करते हैं| अभिभावक विद्यार्थियों को जानवर चराने घर की रखवाली करने या छोटे भाई बहनों की देखभाल में

व्यस्त रखते हैं| प्रधानाध्यापक की पदस्थापना के पश्चात उनके सामने एक नहीं अनेक चुनौतियां थी| विद्यालय की दर्ज संख्या 48 थी किंतु विद्यार्थियों की उपस्थिति अत्यंत कम रहती थी एक नियमित शिक्षिका साथ में 2 अतिथि शिक्षकों के साथ अध्यापन कार्य करना कठिन था अतिथि शिक्षकों में गणित विज्ञान एवं अंग्रेजी विषय का कोई शिक्षक नहीं था| आसपास के क्षेत्रों में गणित और अंग्रेजी विषय के स्नातक उपलब्ध न होने के कारण अतिथि शिक्षक का पद अधिकांशत रिक्त रह जाता हैं

दूसरी चुनौती थी विद्यार्थियों का गणवेश में विद्यालय न आना शारीरिक स्वच्छता पर ध्यान न देना और विद्यार्थियों का प्रायः विद्यालय में अनुपस्थित रहना, अधिकांश विद्यार्थी गणवेश में विद्यालय नहीं आते थे अभिभावक भी विद्यार्थियों के लिए गणवेश खरीदने में रुचि नहीं लेते थे विद्यार्थियों के कपड़े और बाल गंदे रहते थे साथ ही नाखून भी बढे रहते थे| शिक्षक द्वारा पालकों के साथ बैठकों का आयोजन कर उन्हें स्वच्छ गणवेश में विद्यालय में भेजने तथा प्रत्येक रविवार को विद्यार्थियों के बाल, नाखून काटने, शरीर व दांत की सफाई करने हेतु कहा गया| विद्यालय में भी सप्ताह के प्रथम दिवस प्रत्येक सोमवार को नियमित रूप से विद्यार्थियों की गणवेश, नाखून, बाल और दांत की जाँच प्रार्थना सभा में की जाने लगी| विद्यालय में साबुन और हैंड वाश की व्यवस्था कर शिक्षक की देखभाल एवं मार्गदर्शन में भोजन पूर्व एवं शौच के पश्चात हाथ धुलाई इकाई का उपयोग किया जाने लगा| धीरे-.धीरे विद्यार्थी स्वयं सफाई पर ध्यान देने लगे|

अब तीसरी और सबसे महत्वपूर्ण चुनौती, शिक्षकों के समक्ष थी जो शिक्षक का मूल कर्तव्य अध्ययन अध्यापन हैं इस क्षेत्र में अधिकतर लोग शिक्षित नहीं हैं और न ही शिक्षा के महत्व को समझते हैं विद्यार्थियों को विद्यालय भेजने का उद्देश्य मध्यान्ह भोजन,गणवेश, छात्रवृत्ति और साइकिल प्राप्त करना होता हैं विद्यार्थी बहुत कम सीखने का प्रयास करते थे शिक्षकों की बातों को ध्यान से नहीं सुनते थे और न ही कक्षा कार्य ,गृह कार्य में रुचि लेते थे| विद्यार्थियों की प्रगति धीमी होने पर शिक्षकों द्वारा इसका कारण जानने का प्रयास किया गया कि आखिर बच्चे क्यों नहीं सीख रहे हैं शिक्षकों को विद्यार्थियों से बात करने पर ज्ञात हुआ कि उन्हें मूलभूत दक्षताए जैसे. हिंदी पढ़ना. लिखना,जोड़-घटाना, गुणा. भाग ही नहीं आता हैं

इसके लिए अब शिक्षक को अपनी सोच और दृष्टिकोण के साथ.साथ अध्यापन विधा में परिवर्तन लाना जरूरी था| शिक्षकों का मित्रवत व्यवहार और स्नेह भाव सीखने-सिखाने में महत्वपूर्ण होता हैं इसके लिए शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों के साथ बैठकर छोटी - छोटी प्रेरणादायक कहानियां हाव-भाव के साथ सुनाई गईं| कविता गाकर विद्यार्थियों को भी कविता दोहराने हेतु प्रेरित किया गया| नई-नई गतिविधियों के साथ अपना परिचय देना और अपने बारे में खुलकर बोलने हेतु विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया गया|

इन गतिविधियों से विद्यार्थियों की  झिझक दूर हुई| कक्षा का वातावरण आकर्षक बनने लगाए बच्चे शिक्षक की बताई गई बातों को ध्यान से सुनने लगे| सीखने में रुचि लेने लगे और उनका शैक्षणिक स्तर बढ़ने लगा| विद्यार्थियों को पहले विशेष कक्षा लगाकर वर्ण,शब्द, वाक्य ,अनुच्छेद ,पढ़ना- लिखना, सिखाया गया| गणित में अंक पहचान ,संख्या  पहचान,जोड़. घटाना ,गुणा ,भाग का ज्ञान कराया गया अब बच्चे पाठ्यपुस्तक की बातें सीखने में रुचि लेने लगे हैं|

| | |
|---|---|
|  |  |
| **खेल-खेल में शिक्षा ग्रहण करते बच्चे** | **शिक्षक द्वारा टी. एल. एम. का प्रदर्शन** |

कक्षा आठवीं के छात्र ओम प्रकाश द्वारा जून 2017  में विद्यालय की कक्षा छठवीं में प्रवेश लिया गया था| प्रवेश के समय छात्र वर्ण तक नहीं पहचानता था| यदि चार्ट से देखकर लिखने को बोला जाता था तो अधिकांशत वर्णों को उल्टा लिखता था| शिक्षक द्वारा सबसे पहले छात्र को विश्वास दिलाया गया कि उसमें सीखने की क्षमता हैं और वह धीरे.धीरे सब कुछ सीख जाएगा| उसे गतिविधियों के माध्यम से पहले वर्ण फिर मात्रा और फिर शब्द सिखाया गया|  इस कार्य के लिए वर्ण कार्ड,शब्द कार्ड और चार्ट का उपयोग किया गया| पढ़ना सीखने के लिए चित्र देखकर वस्तुओं का नाम लिखना आसपास की वस्तुओं,पौधों, फलों, पक्षियों, जानवरों का नाम लिखना सीख गया| चित्र कार्ड को देखकर वाक्य लिखना सीखा और स्वतंत्र रूप से स्वयं के विचार लिखने लगा | छात्र को पुस्तकालय की पुस्तकों को पढ़ने के लिए प्रेरित किया गया विद्यालय के पुस्तकालय में रखी ज्ञानवर्धक कविताएं, कहानी,महापुरुषों की जीवनी,खेल, पर्यावरण से संबंधित पुस्तकों को पढ़ते.-पढ़ते वह धारा प्रवाह हिंदी पढ़ना सीख गया|

विद्यार्थियों को विद्यालय लाने हेतु शिक्षक द्वारा अभिभावक संपर्क पंजी बनाकर नियमित रूप से विद्यालय में उपस्थित कराने हेतु प्रेरित किया गया| इस कार्य में विद्यालय स्तर पर गठित बाल कैबिनेट का सहयोग लिया गया| अभिभावकों को विद्यार्थियों के बेहतर भविष्य के निर्माण तथा दैनिक जीवन की जिंदगी के हिसाब.किताब, लेनदेन, बैंकों के कार्य,भूमि संबंधी कार्य में शिक्षा की उपयोगिता एवं महत्व के बारे में बताया गया , जिससे पालकों का मन परिवर्तित हुआ उनका शिक्षा की ओर रुझान बढ़ा

और विद्यार्थियों को विद्यालय भेजने लगे| विद्यालय में पालक शिक्षक बैठक कर विद्यार्थियों की प्रगति से भी पालकों को अवगत कराया जाता हैं|

| | |
|---|---|
|  |  |
| **विद्यार्थी की प्रगति से पालकों को अवगत कराते हुए** | **अभिभावक संपर्क** |

कक्षा छठवीं का छात्र विक्रम सिंह विद्यालय में प्राय: अनुपस्थित रहता था| शिक्षक को अभिभावक संपर्क के दौरान ज्ञात हुआ कि छात्र की रुचि खेलने में ज्यादा हैं और वह बड़े विद्यार्थियों के साथ क्रिकेट खेलता रहता हैं| इस समस्या को ध्यान में रखते हुए शिक्षक द्वारा खेल सामग्री क्रय करते समय क्रिकेट की सामग्री को विशेष रूप से शामिल किया गया| जब छात्र को ज्ञात हुआ कि विद्यालय में भी क्रिकेट खेलने के लिए सामग्री हैं और अन्य बच्चे विद्यालय में क्रिकेट खेलते हैं तो वह भी विद्यालय आने लगा| विद्यालय में समय.समय पर खेल, चित्रकला एवं कहानी प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता हैं| पाठ्यक्रम की आवश्यकता के अनुरूप शैक्षणिक भ्रमण एवं गणित और विज्ञान किट का उपयोग कर छोट-.छोटे प्रयोग कराए जाते हैं|

| | |
|---|---|
|  |  |
| **शैक्षिक भ्रमण से पूर्व एकत्र विधार्थी** | **विज्ञान के प्रयोग** |

इस प्रकार शिक्षक के निरंतर प्रयासों से विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति में वृद्धि हुई और बच्चे सहज रूप से विद्यालय में उपस्थित होने लगे| पूर्व में जिन विद्यार्थियों को हिंदी पढ़ना लिखना नहीं आता था| गणित की मूल संक्रियाओं का ज्ञान नहीं था किंतु अब वे सभी बच्चे हिंदी पढ़.लिख लेते हैं तथा गणित की संक्रिया पर आधारित प्रश्न हल कर लेते हैं पहले बच्चे शिक्षक के समक्ष अपनी बात रखने में संकोच करते थे किंतु अब वे अपनी जिज्ञासा को शांत करने हेतु शिक्षकों से नि:संकोच प्रश्न पूछते हैं,अपनी बात रखते हैं| सभी बच्चे नियमित रूप से गणवेश में विद्यालय आते हैं| उनके नाखून दांत- बाल साफ रहते हैं भोजन के पूर्व और शौच के पश्चात विद्यालय एवं घर में भी साबुन से हाथ धोते हैं| शौचालय का उपयोग करते हैं|

गुणवत्ता में निरंतर सुधार के कारण सत्र 2018 -19 के एंडलाइन टेस्ट के परिणाम के आधार पर माध्यमिक विद्यालय भलमुडी का चयन " वाल ऑफ फ्रेम " में हुआ और राज्य शिक्षा केंद्र भोपाल द्वारा विद्यालय को स्वर्ण प्रमाण पत्र प्रदान किया गया|

**आगामी योजना:**

- विद्यार्थियों द्वारा जो सीखा गया हैं उसका उपयोग उनके द्वारा दैनिक जीवन में भी किया जाए ऐसा शिक्षकों द्वारा प्रयास किया जाएगा| विद्यार्थी इनका पालन अपने व्यावहारिक जीवन में भी करें| सीखी गई बात सिर्फ परीक्षा तक ही सीमित ना रह जाए|
- विद्यार्थियों में नैतिक गुणों का अधिक से अधिक विकास करना शिक्षकों का दूसरा प्रमुख उद्देश्य होगा घर में बुजुर्गों का सम्मान एवं उनकी सहायता करना| ईमानदारी , कर्तव्य पालन, देशभक्ति की भावना विकसित करने का प्रयास किया जाएगा|
- बस्ते का बोझ कम करने के उद्देश्य से विद्यालय में ऐसी व्यवस्था की जा रही हैं कि विद्यार्थियों के द्वारा उनकी पाठ्य पुस्तक कक्षावार एवं विषयवार विद्यालय के कक्षा-कक्ष में ही सुरक्षित रखी जाए और विद्यालय आने पर उनका उपयोग किया जाए इससे विद्यार्थी तनाव मुक्त होंगे|

**श्रीमती श्यामा सिंह**
**प्रधानाध्यापक**
**शासकीय माध्यमिक विद्यालय,भलमुड़**
**विकासखंड -कोतमा ,जिला-अनुपपुर मध्यप्रदेश**

आयाम-2 कहानी क्रमांक-3

# ज़िद से ज़िद तक
## शासकीय माध्यमिक विद्यालय मिन्डलाखेड़ा
## विकासखंड मल्हारगढ़ जिला- मंदसौर, मध्यप्रदेश
## यू डाईस कोड - 2319047801

ग्राम मिन्डलाखेडा जिला मुख्यालय से 15 कि.मी. दूर सड़क मार्ग से 7 कि.मी. अन्दर ग्राम पलेवना और ग्राम देवरी होते हुवे मिन्डलाखेडा आता हैं| शाला मार्ग तक पक्की सड़क हैं| ग्राम मिन्डलाखेडा में सुविधाओं के नाम पर मात्र शा.प्रा.वि. मिन्डलाखेडा हैं| गाँव में अधिकतम अनुसूचितजाति व अनुसूचित जनजाति के लोग निवास करते हैं | गाँव के अधिकांश लोग मजदूरी व कृषि पर निर्भर हैं| डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी ने कहा था कि "महान सपने देखने वालों के सपने हमेशा पूरे होते हैं|" विद्यालय के मैदान में घास का अम्बार लगा हुआ हैं| विद्यालय भवन जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हैं|

| | |
|---|---|
|   |   |
| **पूर्व में शाला परिसर** | **वर्तमान में शाला परिसर** |

शिक्षक ने देखा की विद्यार्थी बहुत ज्यादा भयभीत और डरे हुए हैं| विद्यार्थियों को डरा हुआ देख शिक्षक बहुत दु:खी हुआ| शिक्षक यही सोचता रहा कि विद्यार्थियों के मन से डर और भय कैसे दूर किया जाए| क्योंकि जब विद्यार्थियों की झिझक दूर नहीं होगी तब तक वे शिक्षा से नहीं जुड़ पाएंगे और इस स्थिति में अध्यापन कार्य कैसे कराया जा सकता हैं| इस समस्या के समाधान के लिए शिक्षक द्वारा पालकों व ग्रामीणों से चर्चा करने हेतु गाँव का भ्रमण किया|

जब शिक्षक ने गाँव में पहुँचकर पालकों और ग्रामवासियों से चर्चा की तो पता चला कि कोई भी ग्रामवासी विद्यालय के बारे में बात नहीं करना चाहता- शिक्षक के प्रति कोई मान सम्मान नहीं देखा गया| यह देखकर शिक्षक एक बार फिर दुःखी हुआ तथा विद्यार्थियों को कुछ भी नहीं आता हैं शिक्षक ने इसे चुनौती के रूप में लिया जब प्रधानाध्यापक ने,विद्यार्थियों की यूनिफार्म के बारे में पूछा कि विद्यार्थी यूनिफार्म में क्यों नहीं आते हैं ?जबकी सरकार विद्यार्थियों के लिए यूनिफार्म के पैसे देती हैं जबकि माता पिता अपने निजी कार्यो में प्राप्त राशि का उपयोग कर लेते हैं|

विद्यालय में चुनौतियाँ कम नहीं थी

- विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति अरूचि |
- विद्यार्थियों की विद्यालय में बहुत कम उपस्थिति |
- विद्यार्थियों का भयभीत व तनावग्रस्त होना |
- समुदाय को विद्यालय से जोड़ना |

शिक्षक के लिए चुनौती ,वे बच्चे थे जो की बहुत ज्यादा डरे हुए थे| उनकी झिझक दूर करने के लिए शिक्षक ने विद्यार्थियों के साथ खेलना शुरू किया जैसे - क्रिकेट, फुटबाल, बेटमिन्टन आदि| कुछ दिन तक तो उनकी झिझक रही लेकिन धीरे-धीरे वे ही विद्यार्थी शिक्षक के साथ जुड़ते गए| जब विद्यार्थी शिक्षक से जुड़ जाए तो उन्हें आसानी से सिखाया जा सकता हैं| विद्यार्थियों को भयमुक्त वातावरण में सिखाने के लिए शिक्षक ने खेल का सहारा लिया, क्योंकि विद्यार्थी जीवन में खेल का बहुत महत्व होता हैं और विद्यार्थियों को खेलना बहुत पसंद होता हैं, शिक्षक ने खेल-खेल में और विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को अंक पहचान हेतु कार्ड का खेल, कार्ड उठाओ अंक बताओ आदि गतिविधियां करवाई |

जोड़ सिखाने हेतु कंकड़ मिलाओ गतिविधि से जोड़ व घटाव सिखाया गया | कंकड़ फैंको और जोड़ो, कार्ड उठाओ अपनी जगह बनाओ, संख्या पट्टी से जोड़ना - घटाना, कितना बचा, आओ पेटर्न बनाये, हिसाब आदि कई गतिविधियों से विद्यार्थियों को अंक पहचान, जोड़ना, घटाना सिखाया अब विद्यार्थियों को शिक्षक से जुडाव हो गया था| विद्यार्थियों का बौद्धिक स्तर बढ़ाने के लिए शिक्षक ने प्रतिदिन एक कहानी सुनाना शुरू किया| विद्यार्थियों को कहानी सुनने में मजा आने लगा तो शिक्षक ने कहा की हम विद्यालय में एक बाल पुस्तकालय खोलेंगे| जिसमें विभिन्न कहानियों की पुस्तकें होंगी तो विद्यार्थी बहुत खुश हुए|

एक चुनौती यह थी कि जब विद्यार्थियों को हिंदी पढ़ना नहीं आता हैं तो वे कहानी कैसे पढेंगे ? इस चुनौती को स्वीकार करते हुए विद्यार्थियों से पूछा कि आप कहानी कैसे पढ़ोगे जब आपको हिंदी ही पढ़ना नहीं आती हैं| तो विद्यार्थियों ने कहा गया कि आप हमें पढना सिखांयेगे तो हम सभी सीख जायेंगे | विद्यार्थियों की यह बात शिक्षक के दिल को छू गई | अब शिक्षक के सामने सवाल यह था

कि हिंदी पढना सिखाया कैसे जाए ? इसके लिए शिक्षक ने कुछ आकर्षक TLM बनाये जिन्हें देखकर विद्यार्थी बहुत ख़ुश हुए और धीरे-धीरे लगभग तीन माह में ही विद्यार्थी शब्द व वाक्य पढने लगे| लगभग 8 माह में अधिकांश विद्यार्थी कहानी पढ़ने लगे|

जब विद्यार्थी कहानी स्तर तक आने लगे तो विद्यार्थियों में उत्साह था कि अब वे खुद पुस्तकालय से कहानियों की पुस्तकें लेकर पढ़ेंगे| शिक्षक ने दूसरे दिन ही पुस्तकालय के कमरे में आकर्षक पेंटिंग करवाई व बाल कहानियों की पुस्तकें (बरखा सीरिज) डोरी के माध्यम से लटकाई व विद्यार्थियों से विभिन्न चित्र प्रतियोगिताएँ करवाकर उन चित्रों को बाल-पुस्तकालय के चारो ओर डोरी के माध्यम से लगाया गया| साथ ही पढ़ी गई कहानी को प्रत्येक शनिवार के दिन विद्यार्थियों द्वारा बाल-सभा में सुनाना शुरू किया|

इन गतिविधियों से विद्यार्थी उत्साहित हुए और यही मौका था समुदाय (ग्रामीणों) का दिल जीतने का प्रधानाध्यापक ने सभी विद्यार्थियों के माता-पिता को शनिवार के दिन बाल-सभा में आमंत्रित किया| लेकिन प्रधानाध्यापक को इसमें निराशा हाथ लगी क्योंकि केवल पांच पालक ही विद्यालय पहुँच पाए| शिक्षक ने हार नहीं मानी और केवल पांच पालको के सामने विद्यार्थियों ने खुद पढ़ी गई कहानियाँ सुनाई| जो पाँच पालक बाल-सभा में उपस्थित थे, उन्होंने पहली बार विद्यार्थियों के साथ-साथ शिक्षकों की बहुत तारीफ़ की| प्रधानाध्यापक को अपना सपना पूरा होता दिख रहा था|

| | |
|---|---|
|  बाल पुस्तकालय में कहानियों का आनंद लेते हुए बच्चे । |  भय मुक्त व आनंदमय वातावरण बनाने हेतु बच्चो के साथ खेलते हुये |
| **पुस्तकालय में कहानियों का आनंद लेते हुए विद्यार्थी** | **खेल गतिविधि आनंदायी वातावरण बनाने के लिए** |

इस बार 25-30 पालक विद्यालय में PTM में आये| विद्यार्थियों द्वारा पालकों के समक्ष अंग्रेजी में दिए गए परिचय को उन्होंने बहुत सराहा तथा पूरे गावँ में यह चर्चा चलने लगी कि शासकीय विद्यालय के विद्यार्थी अंग्रेजी में बात करने लगे हैं| अब गाँव में शिक्षकों के प्रति सम्मान की भावना जागृत होने लगी थी| शिक्षक की लगन और मेहनत से प्रभावित होकर सत्र 2017-18 में 10 विद्यार्थियों ने निजी विद्यालयों से नाम कटवाकर शा.प्रा.वि. मिन्डलाखेडा में दाखिला लिया|

इसके बाद ग्राम के एक समाजसेवी ने शाला को एक घंटी भेंट की| गाँव के एक अन्य व्यक्ति ने बच्चों के पेयजल हेतु 500 लीटर की टंकी भेंट की| लेकिन अभी और भी चुनौतियाँ थीं जैसे- विद्यार्थियों का यूनिफार्म में न आना क्योंकि यूनिफार्म के पैसे पालक अपने निजी कामो में खर्च कर देते थे| इसके लिए शिक्षक ने पालकों से संपर्क किया , लगातार प्रयासों से करीब 8 पालको ने बच्चे की यूनिफार्म सिलवाई| शिक्षक ने अन्य विद्यार्थियों के पालकों को प्रोत्साहित करने के लिए जो विद्यार्थी यूनिफार्म में आने लगे थे उनको टाई व आई.डी कार्ड दिया| जिससे अन्य विद्यार्थियों ने भी अपने माता-पिता से यूनिफार्म देने की जिद की , लगभग दो वर्षो के लगातार प्रयास के बाद, अधिकतर विद्यार्थी यूनिफार्म में विद्यालय आ रहे हैं| यही नहीं गुरुवार व शनिवार और अन्य दिनों के लिए अलग-अलग रंग की यूनिफार्म हैं| शिक्षक द्वारा प्रतिवर्ष प्रत्येक विद्यार्थी को टाई व आई.डी. कार्ड दिए जा रहे हैं| अब विद्यालय की तस्वीर काफी बदल चुकी हैं

अब विद्यालय का समुदाय से और समुदाय का विद्यालय से जुड़ाव हो गया हैं| जो ग्रामवासी विद्यालय के बारे में बात करना पसंद नहीं करते थे आज वही ग्रामवासी शिक्षक व विद्यालय की तारीफ़ करते नहीं थकते हैं| बाल पुस्तकालय में माध्यम से विद्यार्थियों का बौद्धिक विकास हो रहा हैं, विद्यार्थी भयमुक्त वातावरण में सीखने- सिखाने की प्रक्रिया में जुड़ गए हैं| जिस गाँव में कोई भी सामाजिक कार्यकर्ता व सामाजिक संस्था आना पसंद नहीं करती थी उस विद्यालय में आज कई समाज सेवियों द्वारा आर्थिक मदद के साथ ही विद्यार्थियों को कपड़े, क़िताब-कापियाँ, पेन, बर्तन, बिस्किट- चॉकलेट व अन्य सामग्री समय-समय पर दी जाती हैं|

शाला में पदस्थ शिक्षकों द्वारा किये गए प्रयासों से प्रभावित होकर राज्य शिक्षा केंद्र भोपाल से शिक्षक को एक्सपोजर विजिट हेतु पंचगनी, महाराष्ट्र भेजा गया| राज्य शिक्षा केंद्र भोपाल द्वारा वॉल ऑफ फेम 2018-19 के लिए सिल्वर अवार्ड देकर सम्मानित किया गया| ब्लाक स्तर पर भी तत्कालीन एस.डी.एम. महोदय व माननीय विधायक महोदय ने 26 जनवरी गणतन्त्र दिवस पर सम्मानित किया |

**आगामी योजना**

- आने वाले समय में शिक्षक शाला में विद्यार्थियों के लिए फर्नीचर की व्यवस्था करेंगे|
- स्मार्ट क्लास बनाने हेतु LED की व्यवस्था भी करेंगे

**मोहम्मद उमर शेख**

**शिक्षक**

**शासकीय माध्यमिक विद्यालय ,मिन्डलाखेड़ा**

**विकासखंड -मल्हारगढ़ मंदसौर -जिला ,मध्यप्रदेश**

आयाम-2 कहानी क्रमांक-4

# एक कदम समृद्ध विद्यालय की ओर
# शासकीय माध्यमिक विद्यालय कुमरयाना मवई,
# विकासखंड - टीकमगढ़ ,जिला- टीकमगढ़ मध्यप्रदेश
# यू- डाईस कोड - 23080603906

यह विद्यालय टीकमगढ़ से 15 किलोमीटर की दूरी पर मउरानीपुर रोड पर स्थित हैं। मवई ग्राम पंचायत मुख्यालय हैं| यहां से संकुल केन्द्र की दूरी 500 मीटर हैं। इस ग्राम में प्राकृतिक एवं धार्मिक स्थल के रूप में बैजनाथ शंकर जी का मंदिर पहाड़ी के बीचों बीच एक गुफा में स्थित हैं| प्राचीन मंदिर प्राकृतिक सुषमा से परिपूर्ण हैं| ''शालासिद्धि'' में यह विद्यालय चैम्पियन शाला हैं। विद्यालय में कार्यरत शिक्षक संख्या 02 एवं छात्र संख्या 54 हैं। मवई ग्राम में 80 प्रतिशत जनसंख्या अन्य पिछड़ा वर्ग एवं 20 प्रतिशत सामान्य जाति के व्यक्ति निवासरत हैं। ग्राम की कुल आबादी लगभग 10,600 हैं| ग्राम में बैंक सुविधा , 01 उच्चतर माध्यमिक स्कूल ,02 माध्यमिक एवं 04 प्राथमिक विद्यालय तथा आंगनबाड़ी केन्द्र एवं स्वास्थ्य केन्द्र संचालित हैं|

**विद्यालय में समस्या** -

- विद्यालय के परम्परागत/तात्कालीन परिवेश में बदलाव कैसे लाया जाए|
- ग्रामीण पालकों/अभिभावकों एवं समाज के लोगों का ध्यान विद्यालय के सशक्त एवं प्रभावी प्रबंधन में कैसे जोड़ा जाए|
- विद्यार्थियों के पारिवारिक एवं कृषि कार्यों में संलग्न रहने पर अनियमित छात्र उपस्थिति एक समस्या।
- अभिभावकों का ध्यान हमारे बच्चे क्या सीख रहे हैं की ओर जोड़ना।
- छात्र उपस्तिथि में कमी ।
- पालकगण शाला प्रबन्ध समिति एवं समुदाय के व्यक्तियों में विद्यालय के प्रति उदासीनता।

- विद्यालय परिसर में स्वच्छता का अभाव।
- प्रभावी अध्यापन हेतु आवश्यक TLM का अभाव।

**विद्यालय में सार्थक बदलाव-**

- विद्यार्थी अधिगम वृद्धि हेतु आकर्षक एवं प्रेरणादायी कक्षा कक्ष का सृजन।
- विद्यालय को ''सबसे सुन्दर शाला परिसर'' के रूप में विकसित किया गया हैं। समूदाय को विद्यालय के प्रति सजग बनाया गया हैं।
- प्रधानाध्यापक नेतृत्व द्वारा विद्यालय का श्रेष्ठ प्रबंधन आकर्षण प्रेरणादायी कक्षा- कक्ष निर्माण।
- विद्यार्थी अधिगम में पालक, समुदाय में चेतना विकास एवं बेहतर समन्वय।

किसी विद्यालय में शिक्षक की स्थिति एक उपवन के माली की भांति होती हैं अर्थात जिस प्रकार उपवन का माली उद्यान को हरा-भरा रखने के लिए समर्पण भाव से पौधों को संरक्षित एवं पल्लवित करता हैं ठीक उसी भांति शिक्षक अपने कुशल नेतृत्व द्वारा विद्यालय को एक नई दिशा प्रदान करता हैं।

अत: शाला में बदलाव का क्षेत्र की प्राथमिकताएं तय की गई एवं शाला नेतृत्व और बेहतर शाला प्रबन्धन पर पूर्ण मनोयोग से जुटकर कार्य करना प्रारम्भ किया। यहीं से शुरू होती हैं संघर्ष यात्रा- "एक कदम समृद्ध विद्यालय की ओर''

स्वच्छ विद्यालय-सुन्दर विद्यालय' की कल्पना की और इसे मूर्त रूप देने के लिए शाला के कोने-कोने से अनुपयोगी सामग्री अलग करते हुए शाला को व्यवस्थित रूप दिया| शाला अभिलेख का उचित रख-रखाव किया| विद्यालय के साथी शिक्षक एवं बाल कैबिनेट को प्रेरित कर सक्रिय किया। शाला प्रबंधन समिति की बैठक आमंत्रित कर विद्यालय में बदलाव की योजना पर चर्चा कि गई। सदस्यगण हमारी कार्य योजना से प्रभावित हुए और उन्होंने हमारा मनोबल बढ़ाया तथा हर संभव सहयोग प्रदान करने की तत्परता दिखाई।




| समूह में अभ्यास करते विद्यार्थी | विद्यालय में चित्रकला प्रतियोगता |
|---|---|

कार्य योजना में सुंदर विद्यालय अंतर्गत क्लासरूम को आकर्षक एवं TLM से सुसज्जित बनाने की योजना अंतर्गत रोचक TLM तैयार किये गये| विद्यालय में उपयोगी पुस्तक लर्निंगकॉर्नर बनाया गया| छात्र-छात्राएं अपने मनपसंद की पुस्तकें उठाते चित्रों पर विद्यार्थियों के बीच चर्चा होती| परस्पर विद्यार्थियों में पुस्तकों पर अपने विचार अपनी बात कहने स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्ति का मंच छात्रों को प्राप्त हो गया। विद्यालय में पढ़ने की गतिविधियां कराने में पुस्तक लर्निंगकॉर्नर सहायक सिद्ध हुआ।

बाल केंद्रित क्रियाकलापों को गति प्रदान करते हुए बालचित्र कला मंच तैयार किया गया| समय-समय पर विद्यार्थियों के बीच रंग, स्केच पेन ,कलर सैट बिखेरते हुए '' चित्र बनाओ रंगों से सजाओं" प्रतिस्पर्धा का भाव विकसित कराने का अभ्यास कार्य शुरू किया गया।

छात्रों में रूचि बढ़ने लगी| छात्रों की सुलेख में सुधार होने लगा| वह अच्छे चित्रों को पटल पर चस्पा करने लगे| चित्रों पर अपना नाम लिखते ऐसा करने से उनका उत्साह दोगुना होता गया।

भाषा गणित एवं अंग्रेजी विषय की रोचकता बढ़ाने हेतु खेल-खेल में शिक्षण गतिविधियां कराए जाने के उदेश्य से पॉकेट बोर्ड तैयार किया गया।

संबंधित विषय पर पर्याप्त मात्रा में शब्द कार्ड भाषा-गणित तथा अंग्रेजी के तैयार किए गए| रंग-बिरंगे आकर्षक लुभावने कार्डों का प्रयोग छात्र-छात्रा सीखने के अभ्यास के रूप में करते हैं| कोई छात्र इन कार्डों से सम अंक का क्रम सजाता तो कोई छात्र विषम का। छात्र-छात्रा इन कार्डों को ऐसे सजाते कि वाक्य पट्टिका बन जाती। समूह अभ्यास भी कराया जाता| बालक समूह और बालिका समूह में प्रतिस्पर्धा के रूप में कार्डों का रोचक अवसर देखने को मिलता हैं| विद्यार्थियों के लिए ऐसी गतिविधियां अत्यंत रोचक-जॉयफ़ुल लर्निंग के रूप में लुभावनी सिद्ध हुई।

चूंकि प्राथमिक विद्यालय सड़क के किनारे स्थित हैं अतः सीमित स्थान होने से,खेल मैदान उपलब्ध न होने से शाला कक्षा में इन्डोर गेम्स कराना ही संभव था। अत:ऐसे ही रोचक दक्षता विकास पर केंद्रित खेल क्रियाओं का आयोजन विद्यालय में कराया जाता हैं| विद्यार्थी समूह बनाकर खेल गतिविधियों में भाग लेते हैं संख्या  पहचान, रीडर चुनो, अंक पहचानों आदि खेल में वह पांरगत होते और आनंद की अनुभूति प्राप्त करते।

छात्रों में नेतृत्व क्षमता के विकास हेतु उनमें कार्य करने की ललक पैदा करने तथा शाला प्रबंधन में छात्रों की भागीदारी बढ़ाने हेतु बाल कैबिनेट का गठन किया गया।

बाल कैबिनेट में विद्यार्थियों को प्रधानमंत्री, शिक्षा मंत्री ,स्वास्थ्य मंत्री  जल संरक्षण ,बालिका सशक्तिकरण शाला स्वच्छता का प्रभार दिया गया हैं| सभी छात्र टीम भावना के रूप में कार्य का निष्पादन करते हैं।




**बाल केबिनेट ,TLM सामग्री निर्माण, आनंदायी शिक्षण इत्यादि से शिक्षण को रोचक बनाना**

छात्रों की शैक्षणिक गतिविधियों के दौरान प्रतिमाह उनका समग्र मूल्यांकन भी किया जाता हैं| उनके परिणाम पालकों में साझा किए जाते हैं| प्रत्येक छात्र-छात्रा का मूल्यांकन अभिलेख जांच उपरांत सुरक्षित रखा गया हैं।

विद्यालयीन शैक्षणिक क्रियाकलापों जैसे दक्षता उन्नयन कार्यक्रमए प्रतिभापर्व का आयोजन हाथ धुलाई कार्यक्रम मिल बांचे कार्यक्रम शिक्षक पालक मीटिंग स्कूल चले कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित होने वाली जयंतियां  आदि सभी का रोचक आयोजन विद्यालय में किया जाता हैं।

दक्षता उन्न्यन अंतर्गत विद्यालय में छात्रों के स्तर में सुधार हेतु छात्रों के अंकुर समूह एवं तरूण समूह बनाए गए| समूह में अभ्यास पुस्तकाओं पर कार्य करवाया गया| कमजोर छात्रों को अधिक सीखने का अवसर प्राप्त हो| ऐसी गतिविधियों को चिन्हित किया गया।

लर्निंगआउटक्रम/सीखने के प्रतिफल पर आधारित भाषा एवं गणित की कक्षागत गतिविधियां कराई गई जिनमें उत्साहजनक परिणाम प्राप्त हुए| छात्रों के अभ्यास कार्य में पायी गयी त्रुटियों को चिन्हित किया जाता हैं| उन्हें सुधार के अवसर प्रदान किए जाते हैं| अतिरिक्त समय प्रदान कर विद्यार्थियों को उपचारात्मक शिक्षण अभ्यास कराया जाता हैं।

| | |
|---|---|
|  |  |
| **गतिविधि के माध्यम से आनंदायी शिक्षण** | **खेल गतिविधि आनंदायी वातावरण बनाने के लिए** |

**कक्षा 4 व 5 में सरल प्रोजेक्ट कार्यों से छात्रों की समझ का विकास -**

सरल ढंग से सीखने में नवीन प्रयोग खोजना (प्रभावी गतिविधियां) शाला में गतिविधि कारपेट का निर्माण किया गया। इसका उपयोग भाषा गणित एवं अंग्रेजी बैसिक क्रियाओं/अवधारणा को सरल रूप से समझने में, प्ले लर्निंग के रूप में किया जाता हैं यह मल्टीपर्पज गतिविधियों के आयोजन के लिए प्रभावशील हैं।

- पर्यावरण पुस्तक ''आसपास'' को प्रयोग से जोड़ना।

**पर्यावरण को जानने के लिए छात्रों में कौशल विकास:**

सरल प्रोजेक्ट कार्य-कक्षा-5

- ग्राम में जल के स्रोतों की सूची बनाना। किन-किन स्रोतों से घर में पानी आता हैं|
- कक्षा में सरल प्रयोग-जैसे पारदर्शी पात्रों में शुद्ध-अशुद्ध जल की परख।

- ग्राम भ्रमण कर स्वच्छ स्थान कॉपी में लिखना एवं दूषित स्थान खोजना| उनमें परस्पर तुलना करना।
- घर में अवशिष्ठ पदार्थों की सूची बनाना| उनका निदान कैसे किया जाए कॉपी पर लिखना,रद्दी बेकार सामग्री का निदान।
- हाट बाजार का भ्रमण कर खुली खाद्य सामग्री एवं ढकी सामग्री की सूची बनानाए उनमें अंतर समझना। वाह्य खाद्य सामग्री से संबंधित क्रियाकलाप, स्वास्थ्य , जागृति पर आधारित
- रेलियों का आयोजन आदि।
- बालसभा में कॉपी पर लिखे अनुभव को छात्रों द्वारा पढ़वाना एवं उनका उत्साहबर्धन करना।
- TLM क्लासरूम अभिलेख-छात्रों का पोर्टफोलियों- दक्षता उन्नयन अंतर्गत ट्रेकर पंजी |

मूल्यांकन अभिलेख, स्टूडेंट वर्कबुक, छात्र उत्तर पुस्तिका आदि का बारीकी से अवलोकन किया। शाला में आए बदलाव, छात्र उपस्थिति एवं शाला प्रबंधन पर बातचीत कर पालकगण, समुदाय को प्रेरित किया।

तत्कालीन माननीय कलैक्टर महोदय ने भी विद्यालय का आकास्मिक निरीक्षण किया , विधिवत शाला संचालन को देखा| इससे प्रभावित होकर आगे अधिक प्रयास करने की प्रेरणा दी एवं सम्मान पत्र प्रदान कर शिक्षकों का मनोबल बढ़ाया।

**बदलाव:**

विद्यालय में रोचक टी0एल0एम0 कक्ष की उपलब्धता का प्रभाव निम्न क्षेत्रों में देखने को मिला-

- छात्रों की उपस्थिति में सुधार हुआ।
- शाला का वातावरण आनंददायी हुआ| बच्चे स्वतंत्र रूप से गतिविधियों में भाग लेते और परस्पर सीखते हैं|
- छात्रों के अधिगम स्तर में वृद्धि का अनुकूल वातावरण निर्मित हुआ।
- बाल कैबिनेट पालकगण एवं समुदाय में ''हमारी शाला सुंदर शाला'' के प्रति सकारात्मक सोच एवं आकर्षण उत्पन्न हुआ।
- विद्यालय का यह बदलाव निरंतर प्रभावशील एवं विकासोन्मुखी हैं। समृद्ध शाला के क्षेत्र में अभी बहुत कुछ किया जाना शेष हैं।

**विद्यार्थी अधिगम में पालक, समुदाय में चेतना विकास हेतु बेहतर समन्वय-**

शाला की दशा और दिशा में बदलाव लाने हेतु आयाम चिन्हित किये गये थे| उनमें पहली प्राथमिकता यह थी कि शाला का वर्तमान परिदृश्य कैसे बदला जावे ? पालकों अभिभावकों को ध्यान शाला की ओर कैसे जोड़ा जाए? उन्हें कैसे प्रेरित किया जाए? विद्यालय की भूमिका की वह समझें-परखें वह अपने विचार रखें| शिक्षकों से सहज भाव से खुलकर शाला के परिवेश के बदलाव पर बात करें आदि।

तब मन में विचार आया कि प्रत्येक शनिवार बाल कैबिनेट को साथ लेकर 10-15 परिवार के घर पहुंचकर सीधे पालकों से सम्पर्क किया जावे| इसके बाद पालकों से हर सप्ताह में एक दिन उनके घर पहुंचकर सम्पर्क किया| उन्हें प्रेरणा दी उन्हें अपने काम-काजी समय में से समय निकालकर विद्यालय आने, शिक्षकों से सम्पर्क करते रहने की बात कही।

विद्यालय में कक्षा शिक्षण में मित्रवत व्यवहार उनके समूह बनाकर सरल शैक्षिक रूचिकर एवं आनंददायी क्रियाकलापों से अध्यापन कार्य जारी रखा| विद्यालय के पठन-पाठन खेल-खेल में शिक्षण की चर्चा विद्यार्थियों ने अपने माता-पिता,भाई-बहन, परिवार के सदस्यों के साथ की । धीरे-धीरे विद्यालयीन दिनचर्या को पालक समझने लगे उन्हें लगने लगा कि शाला में अब शैक्षिक वातावरण बदलने लगा हैं।

विद्यालय प्रबंध समिति अध्यक्ष एवं अन्य सदस्यों को समय-समय पर शाला की गतिविधियों में बुलाया| अब तक किए गए शाला सुसज्जित कक्ष, TLM ,स्वनिर्मित सामग्री का शिक्षण में प्रयोग किस प्रकार किया जाता हैं| विद्यार्थी समूह में किस प्रकार आसानी से सीखते हैं बताया गया।

समिति सदस्यों एवं पालकों ने इन क्रियाकलापों को देखा एवं प्रसन्नता जाहिर की। अब तक के प्रयासों से ग्राम में पालकों की सोच सकारात्मक दिशा की ओर आगे बढ़ी| सदस्यों का सक्रिय सहयोग छात्र उपस्थिति के रूप में सुधार में दिखाई देने लगा।

बाल कैबिनेट के द्वारा शाला प्रबंधन में उनका सहयोग देख पालकगण प्रभावित हुए| पालकों के समय-समय पर विद्यालय आने से मिड-डे-मील का क्रियान्वयन एवं संतोषजनक वितरण आदि व्यवस्था में सार्थक बदलाव नजर आने लगा।

छात्र उपस्थिति सुधार समूह बनाकर शिक्षण पालकों की सहभागिता छात्रों के शैक्षिक क्रियाकलापों एवं प्रबंध समिति की जागरूकता, शाला सौंदर्यीकरण शाला स्वच्छता आदि के समाचार समय-समय पर समाचार पत्रों में सचित्र प्रकाशित हुए| अभिभावक, शिक्षक बैठक जिसमें महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा शाला विकास की रूपरेखा , कार्य योजना निर्माण में अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर संकुल प्राचार्या की उपस्थिति में बैठक का आयोजन किया गया| बैठक

में शाला की प्रगति रिपोर्ट का वाचन किया गया। बैठक में पालकों ने शाला स्तर पर किए गए शाला उन्नयन के प्रयासों की सराहना की।




**विद्यालय में सार्थक बदलाव:-**

- विद्यालय की गतिविधियों को पालकगण एवं समुदाय के लोग समझने लगे हैं।
- विद्यार्थी अधिगम स्तर उनके दैनिक अभ्यास कार्य ,होमवर्क, दैनिक कक्षागत समूह शिक्षण का समय-समय पर पालक अवलोकन करते हैं।
- नियमित छात्र उपस्थिति में अपेक्षित सुधार हुआ हैं।
- स्वयंसेवी संस्था के सदस्यों ने 15 दिवसीय कैंप के दौरान ग्राम में जनसंपर्क किया एवं शाला की गतिविधियों पर पालकों के विचार जाने एवं पालकों द्वारा उत्साहजनक अनुभव साझा किये गये।
- विद्यालय में विद्यार्थियों के बीच शैक्षिक गतिविधियां के संचालन से विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में वृद्धि हुई।

**विद्यालय के सार्थक बदलाव में सभी का सहयोग :**

विद्यालय के उन्नयन में सार्थक बदलाव में टीम वर्क के रूप में सभी का सहयोग प्राप्त हुआ। विद्यालय के शिक्षक, एस0एम0सी0 अध्यक्ष, सदस्यगण, बाल कैबिनेट, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, मध्यान्ह भोजन संचालित करने वाले स्व सहायता समूह, प्राचार्य, जनशिक्षक जिला शिक्षा केंद्र से APC, प्राध्यापक कनिष्ठ व्याख्यात आदि सभी का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ हैं।

**स्थिरता**

विद्यालय का यह बदलाव निरंतर प्रभावशील एवं विकासोन्मुखी हैं। समृद्ध शाला के क्षेत्र में अभी बहुत कुछ किया जाना शेष हैं।

**विद्यालय उन्नयन की आगामी कार्य योजना:**

- स्कूल पुनर्निर्माण का उदेश्य विद्यालय को विकास पथ पर अग्रसर करना हैं|
- प्रधानाध्यापक नेतृत्व के द्वारा विद्यालय प्रबन्धन को और अधिक कारगर एवं प्रभावी बनाया जायेगा।
- विद्यार्थी अधिगम वृद्धि हेतु विद्यालय को जॉयफुल लर्निंग केन्द्र के रूप में विकसित किया जाएगा।
- महिला जागृति समिति का गठन-

  बालिका शिक्षा नामांकन ठहराव एवं उपलब्धि स्तर बढ़ाने हेतु ग्रामीण महिलाओं को जागरूक कर सशक्त एवं संवेदनशील बनाया जाएगा| इस क्षेत्र को मजबूत बनाने के लिए ग्राम में एक महिला जागृति समिति का गठन किया जाएगा एवं शिक्षा के कार्यक्रमों से जोड़ा जाएगा।
- विद्यालय की मूलभूत सुविधाओं में सुधार-

  विद्यालय में पेयजल व्यवस्था, शौचालय सुविधा शाला परिसर में लघु वाटिका आदि को सुगमता के अनुरूप संचालित किया गया हैं, ताकि विद्यार्थी सकारात्मक वातावरण में शिक्षा ग्रहण कर सकें।

**शफ़ी मुहम्मद**
**शिक्षक**
**शासकीय माध्यमिक विद्यालय कुमरयाना मवई,**
**विकासखंड . टीकमगढ़, जिला-टीकमगढ़, मध्यप्रदेश**

## विद्यार्थी सकेंद्रित शिक्षा : आयाम- 3

बाल केंद्रित शिक्षा से अभिप्राय यह हैं कि शैक्षिक प्रक्रियाओं का संचालन बालक को केंद्र में रखकर किया जाए। प्राचीन मान्यता यह भी रही हैं कि बालक का मस्तिष्क कोरी स्लेट के समान होता हैं जिस पर हम जैसा चाहे वह लिख सकते हैं या बालक गीली मिट्टी के समान होता हैं जिसे शिक्षक जैसा चाहे आकार दे सकता हैं। विद्यालय में विद्यार्थी केंद्रित ऐसे वातावरण निर्माण पर ध्यान केंद्रित करने की बात कही गई हैं जिसमें विद्यार्थी किसी तनाव के बिना हैं। सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों के मद्देनजर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में स्कूली शिक्षा के लिए निम्नलिखित उद्देश्यों को पहचाना गया हैं।

- बच्चों को उनके विचार और कार्य में स्वतंत्र होना और दूसरों के प्रति ओर उनकी भावनाओं के प्रति संवेदनशील बनाना।
- बच्चों को एक लचीली और रचनात्मक तरीके से नई स्थितियों का सामना करने और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेने के लिए सशक्त बनाना।
- बच्चों में विकास की दिशा में काम करने और आर्थिक प्रक्रियाओं और सामाजिक परिवर्तन में योगदान करने की क्षमता का विकास करना। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए स्कूलों को समानताए गुणवत्ता और लचीलेपन पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता हैं।
- पाठ्यचर्या को समृद्ध बनाना ताकि वह पाठ्य पुस्तकों पर केंद्रित ना रहकर बच्चों का सर्वांगीण विकास कर सके।
- परीक्षाओं को अधिक लचीला और कक्षा कक्ष के जीवन के साथ समेकित करना।
- देश की लोकतांत्रिक नीति के अंदर सरोकारों का ध्यान रखते हुए निर्णायक पहचान को पोषण देना।

यहां पर कुछ ऐसे ही विद्यालयों की कहानी हैं जिन्होंने विद्यार्थी केंद्रित शिक्षा के मामले में नए पैमाने गड़े हैं व मध्यप्रदेश में उत्कृष्ट कार्य कर अपने विद्यालय को नए क्षितिज पर पहुंचाया हैं।

आयाम-3 कहानी क्रमांक-1

# शासकीय माध्यमिक विद्यालय मेवासा
## विकासखंड - शाजापुर, जिला- शाजापुर मध्यप्रदेश
## यू - डाइस कोड - 23220620003

शासकीय माध्यमिक विद्यालय मेवासा जिला मुख्यालय से 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं गांव आधुनिक खेती बाड़ी एवं उन्नत कृषि कार्यों के लिए जाना जाता हैं लेकिन विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के लगभग 70ः पालक खेतिहर मजदूर हैं| बाकी छात्रों के पालकों के पास बहुत थोड़ी जमीन हैं| गांव में सभी वर्गों के लोग निवासरत हैं| ग्राम प्राचीन संस्कृति एवं त्योहारों को मनाने में समृद्ध हैं|

शासकीय माध्यमिक विद्यालय मेवासा, गांव के एक कोने पर स्थित हैं, जिसका अपना स्वयं का अच्छा भवन हैं| जिसमें लगभग 10 कमरे हैं और यहां 113 छात्र संख्या हैं| यहां के छात्रों की औसत उपस्थिति 80% हैं| छात्र स्व - अनुशासन का पालन कर विद्यालय को बेहतर संचालन में सहयोग प्रदान करते हैं| यहां पालक, शाला प्रबंधन समिति और शिक्षकों का एक बेहतर ताल-मेल देखने को मिलता हैं| यहां विद्यालय के समकक्ष एक अन्य अशासकीय विद्यालय भी स्थित हैं और छात्रों को आगे पढ़ने के लिए नजदीक ही हाई स्कूल भी हैं| जहां तक इस विद्यालय में उपलब्ध सुविधाओं की बात करें तो यहां छात्रों को पीने के लिए शुद्ध पेयजल (आर ओ वाटर), सेनेटरी इन्सिनिरेटर, सेनेटरी डिस्पोजल रूम, विद्युत सुविधा, फर्नीचर सुविधा, सुरक्षित खेल का मैदान, वृक्षारोपण द्वारा पर्याप्त हरियाली, व्यवस्थित कक्षाएं, वर्मी कंपोस्ट इकाई, सहयोगी स्टाफ एवं दिव्यांग शौचालय भी उपलब्ध हैं| यद्यपि इस विद्यालय में कोई दिव्यांग छात्र या स्टाफ सदस्य नहीं हैं, लेकिन फिर भी यदि यहां कोई दिव्यांग छात्र या शिक्षक स्टाफ में आता हैं तो उन्हें भी कोई असुविधा न हो, इसे ध्यान रख कर इस सुविधा को पहले ही तैयार करवाया हैं|

उपरोक्त समस्त संसाधनों को जुटाना और उनका उचित प्रबंधन एक बेहतर टीम वर्क का परिणाम हैं| इन सभी व्यवस्थाओं का प्रबंधन व संचालन का केंद्र बिंदु विद्यालय की बाल कैबिनेट हैं| बाल कैबिनेट के द्वारा विद्यालय के संचालन में सहयोग का एक उम्दा उदाहरण यह विद्यालय प्रस्तुत करता हैं| शिक्षकों के मार्गदर्शन में विद्यालय की बाल कैबिनेट के सभी मंत्री अपनी - अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करते हैं| इन सभी कार्यों में नेतृत्व के रूप में बाल कैबिनेट के प्रधानमंत्री के

साथ मिलकर विद्यालय के शिक्षकों के मार्गदर्शन एवं विद्यालय प्रबंधन समिति के साथ योजनाओं के बनाने और उसके क्रियान्वयन में भी सहभागी रहते हैं|

**समस्या :-**

विद्यालय को इस स्तर तक लाने में विद्यालय ने कई चुनौतियों का सामना किया हैं| विद्यालय में जो प्रमुख समस्या जो रही वे इस प्रकार हैं :-

- विद्यार्थियों की अनियमित उपस्थिति, कम नामांकन|
- अपेक्षित शैक्षणिक स्तर का ना मिलना|
- पालकों का विद्यालय से जुड़ाव न होना|




**विद्यालय परिसर में स्वछता अभियान**

इन सभी समस्याओं से कोई भी प्रधानाध्यापक अकेले नहीं दूर कर सकते थे| अपितु यह एक टीम वर्क के रूप में किए जाने वाले कार्य हैं| यह बात विद्यालय प्रधानाध्यापक प्रशिक्षण में हुई एक बातचीत से ज्यादा स्पष्ट हुई थी, जहां टीम व भीड़ में अंतर को स्पष्ट किया गया था|

इसे जानकर मुझे यह महसूस हुआ कि इस कार्य को पूरा करने के लिए एक सशक्त टीम की आवश्यकता हैं| उपरोक्त समस्याओं के संदर्भ में हमने सबसे पहले विद्यालय स्टाफ से चर्चा की| यद्यपि प्रधानाध्यापक का दृष्टिकोण यह रहा हैं कि केवल साथ में कार्य करने वाले ही टीम का हिस्सा नहीं होते अपितु शाला प्रबंधन समिति, बाल कैबिनेट, विद्यालय में अध्ययनरत छात्र-छात्राएं और उनके पालक भी टीम का हिस्सा हैं| जिनको लेकर हम एक अच्छा प्रयास कर सकते हैं, जो कि हमारे लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक होंगे| विद्यालय द्वारा उपरोक्त समस्याओं की पहचान करने के पश्चात अब शाला प्रबंधन समिति, बाल कैबिनेट, शिक्षक स्टाफ एवं पालकगण को एक सशक्त

टीम में बदलने का काम शुरू किया| जिसमें सभी के साथ लगातार बातचीत करना, उनके सुझावों को प्राथमिकता देना और प्रोत्साहित करना शामिल था| अब एक सशक्त टीम तैयार हो चुकी थी| हमारी टीम ने जब एक-एक कर समस्याओं को पहचाना तब हमने पाया|

कि जो वर्तमान में दर्ज संख्या  हैं उन छात्र-छात्राओं में अनियमित विद्यार्थियों की संख्या  ज्यादा हैं| उसमें भी छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की अनियमितता अधिक हैं| कुल अनियमित उपस्थिति में 55 % छात्राएं हैं और 45%: छात्र हैं| जब महिला शिक्षकों को साथ इसकी जानकारी जुटाई गई तो कुछ पारिवारिक समस्याओं के अतिरिक्त यह तथ्य सामने आया कि छात्राओं के लिए पृथक शौचालय की सुविधा एवं मासिक माहवारी की समस्याओं के चलते भी अनियमितता होती हैं तथा छात्रों को भी शौचालय एवं विभिन्न खेल सामग्रियों के अभाव में अनियमित बना रखा हैं|

विद्यालय समस्या की पहचान कर उसे क्रमबद्ध रूप से हल करने का प्रयास पूरी टीम ने प्रारंभ किया| जिसमें सबसे पहले जो बच्चे विद्यालय में दर्ज हैं उनकी नियमित उपस्थिति हो इसके लिए विद्यालय के वातावरण को बेहतर बनाने, खेल के मैदान को सुधार एवं खेल के लिए एक सुरक्षित परिसर निर्मित किया और सभी आवश्यक न्यूनतम खेल सामग्री विद्यालय को उपलब्ध कराई| इसके साथ ही छात्र-छात्राओं के लिए पृथक - पृथक क्रियाशील शौचालय की व्यवस्था की| छात्राओं को ध्यान में रखते हुए विद्यालय में सेनेटरी इंसिनिरेटर और सेनेटरी डिस्पोजल रूम की व्यवस्था की| यह सभी काम जब एक टीम के रूप में किया तो यह सभी कार्य बेहद आसानी से हो गए | सारी व्यवस्थाओं को जोड़ने के साथ बाल कैबिनेट को भी सभी योजनाओं के निर्माण में और उन योजनाओं के क्रियान्वयन में महत्व देना प्रारंभ किया|

इसके बाद कैबिनेट के छात्रों में उत्साह बढ़ा और उस उत्साह का संचार अन्य क्षेत्रों में भी होने लगा| धीरे-धीरे छात्रों की उपस्थिति में सुधार होने लगा और यह क्रम निरंतर बढ़ने लगा| छात्राएं भी अब नियमित उपस्थित होने लगी और छात्र-छात्राओं के नियमित उपस्थित होने से उनके शैक्षणिक स्तर में भी सुधार होने लगा|

अब वे विभिन्न क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन करते हुए उपलब्धि प्राप्त करने लगे और उनकी उपलब्धियों ने उनके पालकों और समाज का ध्यान भी आकर्षित किया| जिसके चलते हमारी अन्य समस्याओं में स्वतः सुधार होने लगा और अन्य अशासकीय विद्यालय के छात्र भी इस विद्यालय में प्रवेश लेने लगे| छात्रों के पालक जो पहले विद्यालय की तरफ नहीं आते थे अब वह भी विद्यालय में जब भी उन्हें विद्यालय में बुलाया जाता हैं सदैव उपस्थित होने का प्रयास करते हैं|

| | |
|---|---|
|  |  |
| **खेल गतिविधियों द्वारा आनंदायी वातावरण बनाना** | **समुदाय संपर्क** |

उन्हें यह विश्वास होने लगा कि शासकीय विद्यालय भी हमारे विद्यार्थियों को बेहतर शिक्षा प्रदान करते हुए उनके अच्छे भविष्य को निर्मित कर सकते हैं| इसी तरह कम नामांकन की समस्या भी हल होने लगी| अब विद्यालय का नामांकन भी धीरे-धीरे बढ़ने लगा|



**विज्ञान प्रयोगशाला में प्रयोग करते विद्यार्थी**

विद्यालय प्रधानाध्यापक के रूप में छात्रों को प्रेरित करते हुए उनकी छोटी-छोटी सफलताओं पर उनका उत्साहवर्धन किया तथा यदि वे असफल भी हुए तो उन्हें पुनः प्रयास के लिए प्रेरित किया| उनकी असफलताओं को उन पर हावी नहीं होने दिया| छात्रों की प्रगति एवं उनके बेहतर भविष्य के लिए उनके पालकों को भी विद्यालय के प्रति जोड़ने का प्रयास किया इस तरह से शिक्षकों की पूरी टीम ने समाज, छात्रों और पालकों के बीच एक महत्वपूर्ण संयोजक की भूमिका का निर्वहन किया जो विद्यालय की प्रगति में बेहद महत्वपूर्ण रही|

जहां तक विद्यालय की सफलता की बात करें तो उसमें बेहद महत्वपूर्ण सुधार हुआ| मतलब छात्रों की औसत उपस्थिति 80% तक पहुंच गई| सबसे बड़ा उत्साह का परिणाम “बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ”

स्लोगन को चरितार्थ किया, अर्थात बालिकाओं के नामांकन में वृद्धि के साथ उनक विभिन्न प्रतिस्पर्धा में भाग लेकर सफलताओं को प्राप्त करने के रूप में दिखाई देने लगा|

विद्यालय का वॉल ऑफ फेम में चयन, चैंपियन शाला , बेहतर परीक्षा परिणाम, छात्रों के शैक्षणिक स्तर में उत्तरोत्तर उन्नति होने के साथ -साथ, छात्र विविध क्षेत्रों में अच्छा प्रदर्शन करने लगे| इनमें कहानी उत्सव में राज्य स्तर पर छात्रों का चयन, हिंदी ओलंपियाड, गणित ओलंपियाड, मीन्स-कम-मेरिट में चयन, उत्कृष्ट चयन परीक्षा में सफलता, इंस्पायर अवार्ड में छात्रों का राज्य स्तर तक पहुंचना, इको क्लब की विभिन्न गतिविधियों में सहभागी होना, संस्कृत एवं अन्य क्रियाकलापों में बढ़-चढ़कर भाग लेना, उनके मानसिक और शारीरिक क्षेत्रों में विकास होना आदि के साथ विद्यालय ने एक बड़ी सफलता टीम के सामूहिक प्रयास से वर्ष 2017 में प्राप्त की|

इसमें विद्यालय अपने प्रथम प्रयास में ही “स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार ” के लिए प्रदेश स्तर पर ऑलओवर केटेगरी में 100 अंकों के साथ राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचा| छात्रों में स्वच्छता के प्रति एक महत्वपूर्ण बदलाव देखने को आया जिसमें छात्रों की व्यक्तिगत स्वच्छता पर बेहद उत्साहजनक परिणाम दिखाई देने लगे| जिसका अप्रत्यक्ष रूप से उनके शरीर पर भी प्रभाव दिखाई देने लगा| वे अपना प्रदर्शन और बेहतर करने लगे|

छात्रों के लिए हमारा दृष्टिकोण हैं कि छात्र में सीखने का माध्यम केवल किताबें ही नहीं होती, उसकी चारों ओर का वातावरण भी उसके सम्पूर्ण विकास में बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं| इसी के चलते छात्रों को पर्यावरण जैसे क्षेत्रों में जोड़ने के लिए विद्यालय परिसर में वर्मी कंपोस्ट इकाई का निर्माण कर, उसका संचालन उन्हीं छात्रों के माध्यम से किया जाने लगा| वर्मी कंपोस्ट इकाई में ऑर्गेनिक खाद बनाकर विद्यालय परिसर में खाद का उपयोग करने लगे| यह कार्य उनके व्यवहारिक ज्ञान में वृद्धि कर पर्यावरण से जोड़ने में भी सहायक हुआ|

**आगामी योजना :-**

- यद्यपि विद्यालय ने अपनी बहुत सी समस्याओं पर काम किया परंतु अभी भी विद्यार्थियों को न सिर्फ विभिन्न प्रतियोगिताओं में खुद को सफल बनाने के लिए तैयार करना हैं, बल्कि उनमें स्वविवेक के कौशल को भी विकसित करना हैं|
- प्रतिस्पर्धा में खुद को सफल बनाने के साथ ही वर्मी कंपोस्ट इकाई को और समृद्ध बनाकर विद्यालय में किचन गार्डन तैयार करना आगामी योजना का हिस्सा हैं| जिससे विद्यार्थियों के मध्यान भोजन के लिए विद्यालय में हरी सब्जियां तैयार की जा सके और पोषक तत्वों की पूर्ति हो सके|

- छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करने के लिए प्रयोगविद्यालय विकसित करना, वचनालय विकसित करना, खेलों के क्षेत्र में विभिन्न प्रतियोगिताओं के लिए छात्र- छात्राओं को तैयार करना भी आगामी योजना में शामिल हैं|

**ललित तिवारी**
**प्रभारी अध्यापक**
**शासकीय माध्यमिक विद्यालय, मेवासा**
**विकासखंड - शाजापुर, जिला-शाजापुर ,मध्यप्रदेश**

आयाम-3 कहानी क्रमांक-2

# शासकीय माध्यमिक विद्यालय बरहा
## विकासखंड - गौरिहार, जिला - छतरपुर ,मध्यप्रदेश
## यू-डाईस कोड - 23390105502

निजीकरण की ओर बढ़ते आधुनिक युग में जहाँ एक ओर सरकारी विद्यालयों में सुविधाओं व संसाधनों की कमी के चलते, विद्यार्थियों एवं अभिभावकों का रूझान घटता जा रहा हैं| वहीं मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले के गौरिहार ब्लॉक के बरहा गांव में स्थित शासकीय माध्यमिक विद्यालय एक ऐसा विद्यालय हैं, जहाँ आस.पास के सभी विद्यार्थी प्राइवेट स्कूलों में प्रवेश लेने की बजाय बरहा गांव के सरकारी विद्यालय में प्रवेश लेते हैं।

वर्ष 2004 से अबतक एक साधारण सरकारी विद्यालय से आदर्श विद्यालय तक का सफर बहुत लम्बा व संघर्ष से भरा रहा हैं। यह विद्यालय ब्लॉक गौरिहार से 10 किलो मीटर और जिला मुख्यालय से 80 किलो मीटर दूर हैं। विद्यालय तक पहुँचने के लिए सभी साधन उपलब्ध हैं। विद्यालय से करीब 60 कि. मी. दूर "विश्व प्रसिद्ध खजुराहो मंदिर" हैं। गाँव बरहा में सभी जाति, धर्म, समुदाय के लोग रहते हैं| अधिकतर लोग कृषि व मजदूरी पर आश्रित हैं। आबादी के अनुसार विद्यालय में क्रमश: पिछड़ा वर्ग (ओ बी सी) अनुसूचित जाति (एस सी) सामान्य वर्ग के विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। बालक - बालिका लगभग 55:45, सामान्य : एस.सी 1:2, एस.सी: ओवीसी 1:2 ।

वर्तमान में "एक परिसर - एक शाला" हो जाने से विद्यालय में आठ शिक्षक एवं पाँच अतिथि शिक्षक (गेस्ट टीचर) अपनी सेवायें दे रहे हैं। विद्यालय को बेहतर बनाये रखने के लिए कई बार हमें कई विषम परिस्थितियों से संघर्ष करना पड़ा। जिसमें स्कूल के विद्यार्थियों की दर्ज संख्या को बढ़ाना और उनकी नियमित उपस्थिति बनाये रखना एक बड़ी चुनौती थी| यह तब और ज्यादा समझ में आया जब 2006-07 व 07-08 में हमारे कैचमेंट एरिया के कुछ गाँव में नवीन मिडिल स्कूलों को खोला गया और अचानक विद्यार्थियों की संख्या कम हो गई। उस दौरान विद्यालय परिवेश को सुंदर एवं आकर्षक बनाने का काम शुरू किया|

शुरूआत में विद्यालय को कई सारी सुविधाएं नहीं मिली थी, लेकिन जैसे- जैसे हमने काम शुरू कियाए धीरे-धीरे सभी सुविधाएं जुटती गईं। पूर्व में विद्यालय में पर्याप्त कमरे न होने से विद्यार्थियों

को बाहर बैठकर अध्ययन करना पड़ता था। शिक्षकों के अभाव, संसाधन व सुविधाओं की कमी के चलते हुए लोगों की मानसिकता सरकारी स्कूलों के प्रति गिरती जा रही थी। यदि बेहतर शिक्षा विद्यार्थियों को दी जानी हो तो आवश्यक हो जाता हैं कि विद्यालय में बेहतर शिक्षण माहौल एवं आकर्षक परिवेश बनाया जाए। जिसे प्रधानाध्यापक ने पहचाना, शिक्षक और समुदाय के साथ मिलकर इस पर प्रयास किया। परन्तु अचानक छात्र संख्या घटने लगी व लगातार विद्यार्थियों की अनुपस्थिति बढ़ने लगी। तब हमें लगा कि हमें विद्यालय में अन्य विद्यालयों से बेहतर सुविधाएं जुटानी ही होंगी। इसी उद्देश्य से हमारे विद्यालय में हमने कई सारे प्रयास किये, सर्वप्रथम विद्यालय की भौतिक संरचना में बदलाव किया एवं अन्य सभी सुविधाएं जुटायीं।

विद्यालय में दर्ज छात्र संख्या  के अनुपात में बेहतर शिक्षण व्यवस्था करना भी हमारे लिए बहुत बड़ी चुनौती थी। शुरूवात में विद्यालय में बाउंड्रीवॉल नहीं था। विद्यालय के बीचों-बीच से एक आम रास्ता जाता था। जिससे मवेशी व अन्य असामाजिक तत्वों से विद्यालय का माहौल खराब होता था। विद्यालय के खेल मैदान एवं परिसर में गाँव  के ही प्रभावशाली दबंग लोगों ने कब्जा करने की कोशिश की, जिसकी लड़ाई तत्कालीन प्रभारी प्रधानाध्यापक (दृष्टिवाधित शिक्षक) ने लड़ी| उन्होंने न्यायालय में मुकदमा भी लड़ा और फैसला विद्यालय के पक्ष में हुआ| लेकिन विद्यालय का नाम खसरा में दर्ज कराने के लिए विद्यालय परिवार आज भी संघर्षरत हैं| जिसमें जोखिम का सामना करना पड़ रहा हैं|

स्टाफ में शिक्षकों की कमी के बावजूद बेहतर शिक्षण व्यवस्था व विद्यालय मैनेजमैंट एक बड़ी चुनौती थी। अन्य विद्यालयों की अपेक्षा जनसमुदाय के सामने अपने आप को बेहतर साबित करना एवं अभिभावकों को जागरूक करना, लोगों की सोच को बदलना कि सरकारी विद्यालयों में भी अच्छी पढ़ाई होती हैं एक बड़ी चुनौती थी।

इन सभी चुनौतियों से संघर्ष करते हुए हमने अपने विद्यालय को सीमित सुविधाओं व संसाधनों के बावजूद बेहतर बनाने का प्रयास किया, क्योंकि विद्यार्थी भी तभी बेहतर सीख पाते हैं जब उनके आस-पास का वातावरणए परिवेश आकर्षक एवं प्रेरणादायी हो।

आनंदमय एवं वैज्ञानिक तरीके से विभिन्न नवाचारों का प्रयोग कर, प्रायोगिक एवं बाल केन्द्रित सी विद्यालय में विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सके एवं उनकी शारीरिक प्रतिभाएं उभर सकेंद्य इसके लिए विद्यालय में खेल सामाग्री जुटाई गई। विद्यालय के आसपास के विभिन्न गांवों के खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं| ताकि विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं के माध्यम से विद्यार्थियों का शारीरिक एवं बौद्धिक विकास हो सके। सीखने की विधियों से शिक्षण कराने का प्रयास किया गया|




समूह गतिविधि द्वारा शिक्षण



खेल विधि से शिक्षण

विद्यालय में बाल - मेले का आयोजन किया गया| जिसमें बच्चों ने खुद से उत्पाद बनाकर प्रदर्शित किए| जिससे उनके रचनात्मक कौशल के विकास के भरपूर अवसर मिले| इसके अलावा समय-समय पर विद्यालय में वाद-विवाद, मीटिंग एवं अन्य शिक्षण अधिगम पर आधारित प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं |





बाल मेले में विद्यार्थियों द्वारा स्वयं तेयार की गयी सामग्री का विक्रय

विद्यालय में बेहतर शिक्षण आकर्षक परिवेश बानाने में सफल हुए| जिससे आस-पास के विद्यालय से हमारे विद्यालय में 50-60 विद्यार्थी पढ़ने आने लगे|जिससे दर्ज छात्र संख्या 193 हो गई।"प्रधानाध्यापक क्षमता विकास प्रशिक्षण" में सहभागिता करके हमने जाना कि एक प्रधानाध्यापक को अपनी विद्यालय व उससे संबंधित संस्थाओं के बारे में जानकारी रखना चाहिए| जिसके बाद प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय के आपसी सहयोग तथा सूझ-बुझ से बच्चों का नामांकन

लगातार बढ़ता गया| परिणामस्वरूप वर्ष 2013 में 245 विद्यार्थी विद्यालय में पढ़ने आने लगे। उनका विद्यालय में ठहराव बढ़ा हैं और बालिकाओं की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ी हैं।

अब गांव के अधिकांश विद्यार्थी अशासकीय विद्यालय में दाखिला नहीं लेते| विद्यार्थी ख़ुशी - ख़ुशी शासकीय विद्यालय बरहा में प्रवेश लेते हैं। गर्मियों में नि:शुल्क भाव से शिक्षक और विद्यार्थी मिलकर विद्यालय के पेड़-पौधों की सिंचाई एवं देखभाल करते हैं।

**आगामी योजना**

- कक्षा अनुरूप विद्यार्थियों में सीखने के प्रतिफल (लर्निंग आउटकम्स) सुनिश्चित करनाए
- विद्यालय में पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में सामंजस्य बैठाना जिससे वे प्राथमिक कक्षों में बैठना सीखें |
- विद्यार्थियों के लिए एक बेहतर पुस्तकालय संचालित करना भी आगामी योजना का हिस्सा हैं।

हमारे विद्यालय ने अब तक कई उपलब्धियां भी हासिल की हैं। हमारे विद्यालय से प्रत्येक वर्ष कई विद्यार्थी मॉडल एवं उत्कृष्ट विद्यालयों में चयनित होते हैंए इसके अलावा श्रमोदय विद्यालय भोपाल में भी 4 विद्यार्थी चयनित होकर अध्ययनरत हैं। राष्ट्रीय मीन्स - कम - मेरिट प्रतियोगिता परीक्षा में भी विद्यार्थी चयनित होते हैं। हमारे विद्यालय के कुछ विद्यार्थी शासकीय सेवाओं में भी सेवारत हैं।

**राजकुमार कुशवाहा**
**प्रधानाध्यापक (प्रभारी)**
**शासकीय माध्यमिक विद्यालय बरहा**
**विकासखंड - गौरिहार, जिला छतरपुर मध्यप्रदेश**

आयाम-3 कहानी क्रमांक-3

# शासकीय माध्यमिक विद्यालय बेरजा
## विकासखण्ड - मुरार ग्रामीण, जिला - ग्वालियर, मध्यप्रदेश
## यू डाईस कोड - 23040410202

प्रधानाध्यापक, शासकीय माध्यमिक विद्यालय बेरजा मुरार ग्रामीण, जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश में वर्ष 2013 से पदस्थ् हुए हैं| ग्राम बेरजा की आबादी लगभग 1916 हैं| ऐसे तो ग्राम में सभी जाति-धर्म के लोग निवास करते हैं पर यह ग्राम पिछड़ा वर्ग बाहुल्य क्षेत्र हैं| यहाँ अधिकांश लोग कृषि एवं मजदूरी करते हैं। ग्राम का विद्यालय रेल्वे स्टेशन एवं बस स्टैण्ड शहरी क्षेत्र से लगभग 25 कि.मी.दूर प्राचीन दंदरौआ हनुमान जी मंदिर मार्ग चितौरा हाईवे रोड़पर स्थित हैं। ग्राम में प्राथमिक स्कूल, माध्यमिक स्कूल, हायर सेकेण्डरी स्कूल, बैंक, अस्पताल, आंगनबाड़ी, हाटबाजार आदि मूलभूत महत्वपूर्ण सुविधायें उपलब्ध हैं। ग्राम के सभी निवासी सामाजिक तीज त्यौहारों को हर्ष-उल्लास के साथ आपस में मिलजुल कर मनाते हैं।

प्रधानाध्यापक ने ग्राम पंचायत सरपंच एवं ग्रामवासियों के समक्ष विद्यालय परिसर की कुछ खाली पड़ी भूमि में मध्यान्ह भोजन हेतु किचिन गार्डन तैयार कर उसमें जैविक खेती की जाने संबंधित चर्चा की| योजना से प्रेरित होकर ग्रामवासियों के द्वारा विद्यालय परिसर में मध्यान्ह भोजन हेतु किचिन गार्डन बनाने में सहयोग प्रदान कर परिसर में लगे कटीले पेड़-पौधों, बड़े-बड़े सूखे पेड़ एवं पत्थरों आदि को जे.सी.बी. मशीन के द्वारा साफ कराये जाने की आपसी सहमति बनाई। परिसर के साफ होने से विद्यार्थियों के खेलने एवं किचिन गार्डन हेतु अतिरिक्त पर्याप्त उपयोगी भूमि प्राप्त हुई।



किचिन गार्डन में बीजों की बुवाई करते हुए विद्यार्थी



किचिन गार्डन में निरीक्षण करते हुए विद्यार्थी

ग्रामवासियों के द्वारा बीज, पौधे एवं गोबर की खाद आदि को भी प्रदाय किया और अपने अनुभवों से भी अवगत कराया कि कब कौन-सा बीज एवं पौधे लगाना लाभप्रद होगा। ग्राम पंचायत एवं ग्रामवासियों का यह कार्य अत्यन्त ही सराहनीय रहा।

हमें अपने विद्यालय परिसर में किचिन गार्डन के लिये रूपरेखा तैयार करनी थी इस कार्य हेतु सर्वप्रथम हमने ग्राम के खेतों का शैक्षणिक भ्रमण किया। भ्रमण से प्रेरित होकर विद्यार्थियों के द्वारा ही विद्यालय परिसर में किचिन गार्डन लगाने का विचार रखा गया और इस ओर विशेष ध्यान देकर विद्यालय परिसर में किचिन गार्डन लगाने का प्रयास किया गया। यह प्रयास शिक्षक और विद्यार्थियों की साझे पहल का प्रमाण हैं |

सर्वप्रथम परिसर की जुताई उपरान्त क्यारियों को तैयार किया गया। जिसमें समुदाय के सहयोग से प्राप्त बीज एवं पौधों आदि को रोपा गया। चूँकि विद्यालय परिसर में ही विद्यार्थियों के द्वारा बीजों एवं पौधों को रोपा जाना था इसलिए यह कार्य विद्यार्थियों को काफी रूचिकर लगा।

**बीज एवं पौधे लगाने से पूर्व क्यारियों की तैयारी:**

किचिन गार्डनिंग से विद्यार्थियों को यह व्यवाहरिक जानकारी प्राप्त हो रही थी कि कौन-कौन से बीज किस-किस समय लगाये जाते हैं। बीजों की पहचान, फसलों में किस समय पानी दिया जाना हैं, कब-कब खाद डाली जानी हैं और पेड़-पौधे में कीट लगने पर किस प्रकार किटनाशक रहित उपचार किया जाना हैं आदि का व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त हो रहा था ।

| | |
|---|---|
|  |  |
| **तैयार जैविक खाद** | **गार्डन में तैयार जैविक गोभी** |

किचिन गार्डनिंग का यह व्यहारिक ज्ञान भविष्य में बड़े स्तर पर व्यवसाय के रूप में अपनाने पर यह महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान कर सकता हैं। आज के समय में अधिक लाभ प्राप्त करने के लिये

हमारे द्वारा सब्जियों में अत्यधिक रासायनिक खाद का उपयोग किया जा रहा हैं| रासायनिक खाद के उपयोग से उत्पादन तो अधिक हो रहा हैं| किन्तु सब्जियों एवं अन्य फसलों की गुणवत्ता में गिरावट आ रही हैं। गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुये विद्यालय परिसर के किचिन गार्डन में रासायनिक खाद का उपयोग न करते हुये गोबर की खाद आदि का उपयोग कर हरी-भरी जैविक सब्जियाँ उगाई जा रही हैं। तथा इन सब्जियों का उपयोग मध्यान्ह भोजन में किया जा रहा हैं। किचिन गार्डन के द्वारा विद्यार्थी जैविक खेती के महत्व को भी समझ रहे हैं तथा भविष्य में वे जैविक खेती को व्यवसाय के रूप में भी अपना सकते हैं।

विद्यालय परिसर में ही किचिन गार्डन लगे होने के कारण हम विद्यार्थियों को प्रकृति का भ्रमण करा रहे हैं हम दिखा रहे हैं कि कुछ पौधे छोटे हैं और कुछ विशालकाय, कुछ पौधों की पत्तियॉ हरी, कुछ की पत्तियॉ पीली आदि प्रकार की होती हैं। कुछ पौधों के फूल बड़े एवं लाल हैं, कुछ नीले तथा कुछ पौधों के पुष्प ही नहीं होते। विभिन्न प्रकार के पौधों के बीच अन्तर समझ रहे हैं, पौधे के तने, शाखाओं, जड़, पत्तियों इत्यादि को समझाकर नामांकित कर रहे हैं।

विभिन्न प्रकार के पौधे ,पेड़-पौधों में कब-कब सिंचाई की जानी हैं व सिंचाई की विभिन्न विधियों को बताया जा रहा हैं एवं पेड़-पौधे के लिये हानिकारक अन्य पौधे जो खरपतवार कहलाते हैं, को दिखाया जा रहा हैं तथा उन्हें कैसे खुरपी, फावड़ा, कुदाल आदि के द्वारा कैसे निकाला जाता हैं इसकि जानकारी प्राप्त कर रहे हैं।

किचिन गार्डनिंग एवं खेती में उपयोग किये जाने वाले उपकरणों जैसे- खुरपी, फावड़ा, गैती, हसिया, दराती, सब्बल आदि से अवगत हो रहे हैं, उन्हें कब और कैसे उपयोग किया जाना हैं आदि उपयोगी जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। किचिन गार्डन के माध्यम से हम रासायनिक कीटनाशक के स्थान पर राख एवं नीम की पत्ती आदि का उपयोग किये जाने पर अधिक जोर दिया जा रहा हैं। जिससे हमारे लाभकारी कीटों को कोई नुकसान नहीं पंहुचे और हम विभिन्न प्रकार की जैविक तरीके से सब्जियों को उगाने की विधि को भी जान पा रहे हैं।

वर्तमान में किचिन गार्डन से स्वसहायता समूह को काफी आर्थिक लाभ हो रहा हैं | समूह के द्वारा अधिकांश सब्जियॉ को बाजार से नहीं खरीदना पड़ रहा हैं साथ ही किचिन गार्डन से उन्हें जैविक सब्जियों प्राप्त हो रही हैं, जैसे-पालक, आलू, सेम, गोभी, मैथी, प्याज, लहसुन, धनियॉ आदि।बच्चे जैविक खेती के साथ-साथ फसल की निराई-गुड़ाई के बारे में भी जानकारी प्राप्त कर रहे हैं।

**किचिन गार्डन में निराई-गुड़ाई का प्रयोग :** सब्जियों की कटाई कब की जानी हैं एवं आलू को खोद कर कब निकाला जाता हैं आदि की विधि से भी बच्चे अवगत हो रहे हैं और भविष्य में इसका उपयोग वह जैविक खेती में कर सकते हैं।

**फसल को काटने एवं आलू खोदने की विधि:**

| | |
|---|---|
|  |  |
| **पोधों की देखभाल** | **वृक्षारोपण** |

किचिन गार्डन के साथ-साथ ग्राम व विद्यालय परिसर को हरा-भरा बनाने हेतु पौधों का भी रोपण किया गया| जिसमें विद्यार्थियों के द्वारा पानी की कमी को ध्यान में रखते हुये प्रत्येक पौधे के साथ एक-एक पानी की प्लास्टिक की बोतलों की तली में छेद करके पौधों की जड़ के साथ लगाया गया जिससे पानी बूंद-बूंद करके पौधे को प्राप्त होता रहता हैं| इस विधि के द्वारा पानी देने के कारण आज हम विद्यालय परिसर को हरा-भरा कर सके हैं।

| | |
|---|---|
|  |  |
| **आलू की खुदाई** | **पालक की कटाई** |

**पानी की कमी की पूर्ति हेतु प्लास्टिक की बोतलों का उपयोग:**

कुछ समस्याओं के कारण किचिन गार्डन के नियमित संचालन में कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। किचिन गार्डनिंग जैसे कार्य के लिये पर्याप्त मात्रा में पानी का होना अति-आवश्यक हैं। किन्तु विद्यालय परिसर में पर्याप्त मात्रा में पानी की व्यवस्था नहीं हैं, परिसर में एक हैंण्डपंप हैं, जिसके द्वारा विद्यार्थियों को ही पीने योग्य पानी प्राप्त हो रहा हैं। जबकि किचिन गार्डनिंग जैसा कार्य बिना बोरिंग के संभव नहीं हैं। किचिन गार्डन की सुरक्षा हेतु एक नियमित रात्रि कालीन चौकीदार की

व्यवस्था न होना भी एक बहुत बड़ी समस्या हैं क्योंकि रात्रि में विद्यालय परिसर पूर्णत: सूना रहता हैं| ऐसी स्थिति में विद्यालय परिसर की दीवार को लांघकर किचिन गार्डन को नुकसान पहुॅचाया जा सकता हैं। किचिन गार्डनिंग हेतु कुछ निधि की समस्या हमेंशा बनी रहेगी| क्योकि पेड़-पौधे, खाद, बीजों एवं परिसर की जुताई आदि कार्य हेतु कुछ न कुछ व्यय अवश्य ही होगा। अत: किचिन गार्डन के नियमित संचालन हेतु यह समस्याएं हमेशा ही बनी रही हैं।

समस्या के समाधान के लिये सर्वप्रथम विद्यालय परिसर के नजदीक की बोरिंग से पानी का कनेक्शन लेकर किचिन गार्डनिंग हेतु पर्याप्त पानी प्राप्त किया जा रहा हैं। किचिन गार्डन की सुरक्षा हेतु ग्रामीणों एवं मध्यान्ह भोजन स्व सहायता समूह सदस्यों के द्वारा स्वंय की सुविधानुसार बीच-बीच में किचिन गार्डन की निगरानी करने हेतु जाते हैं, इससे किचिन गार्डन के साथ-साथ विद्यालय की भी सुरक्षा हो रही हैं। विद्यालय परिसर के किचिन गार्डन के नियमित संचालन हेतु निधि आदि की व्यवस्था शाला प्रबंधन समिति एवं मध्यान्ह भोजन स्व- सहायता समूह आदि के सहयोग से किया जा रहा हैं व ग्रामवासियों द्वारा समय-समय पर पेड़-पौधे, खाद एवं बीज आदि की व्यवस्था भी की जा रही हैं।

मध्यान्ह भोजन के लिये विद्यालय परिसर में किचिन गार्डन को तैयार कर विद्यार्थियों में जैविक खेती के प्रति रूझान जाग्रत होना एक बहुत बड़ी उपलब्धि रही हैं। बच्चे जैविक खेती के महत्व को समझ रहे हैं और परिसर में तैयार जैविक सब्जियों का ही उपयोग मध्यान्ह भोजन में कर रहे हैं। बच्चे स्वंय ही अपने घर से कुछ गोबर की खाद एवं राख ला रहे हैं , जिसका उपयोग हम परिसर में लगाई गई सब्जियों में कर रहे हैं। विद्यार्थियों में हुआ यह बदलाव जैविक खेती के प्रति स्थिरता को प्रदर्शित करता हैं।

**आगामी योजना**

- विद्यालय परिसर के किचिन गार्डन के नियमित संचालन के साथ-साथ परिसर के खेल मैदान जिसमें वर्तमान में विद्यार्थियों के नियमित खेलने-कूदने के कारण धूल आदि अधिक हो गई हैं | इस धूल के कारण विद्यार्थियों के स्वास्थ्य पर विपरीत असर हो सकता हैं व विद्यार्थियों की गणवेश आदि जल्दी गन्दी हो जाने तथा खेलते समय विद्यार्थियों के अचानक गिर जाने से चोट लगने जैसी समस्याओं की संभावना बनी रहती हैं।
- इन समस्याओं को ध्यान में रखते हुये विद्यालय परिसर के खेल मैदान में हरी-हरी घास लगाकर उसे हरा-भरा करने की योजना हैं।
- वर्तमान में हमारे द्वारा पानी की अनुपयोगी प्लास्टिक की बोतलों का उपयोग पौधा लगाते समय किया जा रहा हैं जिससे प्लास्टिक की बोतलों का निपटान भी हो रहा हैं और पौधे की जड़ में पर्याप्त मात्रा में पानी भी पहुॅच रहा हैं।

- इस वर्ष भी पौधा रोपण के समय प्लास्टिक की बोतलों का उपयोग किया जावेगा तथा आगामी योजना में प्लास्टिक की बोतलों को सजावटी गमले के रूप में उपयोग करने की योजना हैं|

**कृपाल सिंह**
**प्रधानाध्यापक**
**शासकीय माध्यमिक विद्यालय बेरजा**
**विकासखंड-मुरार जिला-ग्वालियर, मध्यप्रदेश**

आयाम-3 कहानी क्रमांक-4

# शासकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय क्रमांक 1 हाथीखाना
## विकासखंड - दतिया , जिला - दतिया, मध्यप्रदेश
## यू डाईस कोड - 23050110802

सीखे हुए को व्यवहार में लाना सही मायने में शिक्षा कहलाती हैं" इसी पृष्ठभूमि के आधार पर विद्यालय के अनुभवों को प्रस्तुत किया जा रहा हैं।

प्रथम कालखण्ड के समाप्ति की सूचनात्मक बेल बज चुकी थी| शिक्षक समयचक्र के अनुसार कक्षायें छोड़कर अपने - अपने विषय शिक्षण के लिये गन्तव्य की ओर गमन कर चुके थे, लेकिन गणित शिक्षक ने अपना कक्ष सवाल पूरा हल न हो पाने के कारण नहीं छोड़ा था और कक्ष के बाहर अंग्रेजी के शिक्षक उनके निकलने का इंतजार बेसब्री से कर रहे थे।

यही थी समय पालन की समस्या,इसी का होना था समाधान " यदि प्रतिदिन ऐसा होगा तो काम कैसे चलेगा| रिक्त कालखण्ड में इस समस्या के समाधान की बात अंग्रेजी शिक्षक ने प्रधानाध्यापक और साथी शिक्षकों के सामने प्रस्तुत की , समाधान के लिये सभी के सुझाव लिये गये और सामूहिक रूप से निर्णय लेकर समाधान कर लिया गया।

1. विद्यालय में विषय-वार कक्षा - कक्ष विकिसित किए जाएँ| जिसमें विषय सम्बंधित शिक्षण सामग्री, सहायक शिक्षण सामग्री , गतिविधियों एवं प्रयोग से सम्बंधित सामग्री को सुव्यवस्थित तरीके से विद्यार्थियों के उपयोग हेतु उपलब्ध करवाया जाएगा|

2. विद्यार्थियों को समयचक्र के अनुसार जिस विषय का कालखंड हैं उसी समय उस विषय की कक्षा में अध्ययन करने जाना होगा, जहाँ विषय-शिक्षक पूर्व से उपस्थित रहेंगें|

   सनातन संस्कृति की पुरातन परम्परा के पालन में यह एक नया प्रयोग था और शिक्षा में स्थिर बदलाव की ओर बढ़ाया गया एक कदम था| जहाँ आपकी समस्यायें आपको रूकने का संकेत नहीं देती बल्कि वे लक्ष्य के रास्ते का मार्गदर्शक बनती हैं। जरुरत हैं उस पर विचार - विमर्श कर सही कदम उठाने की|

**बदलाव क्या हुआ -**

- विद्यालय में विषय कक्षा - कक्षों का निर्माण हुआ।
- कक्ष विषय - वार टी.एल.एम., सहायक सामग्री, नक्शे, चार्ट युक्त सुसज्जित एवं व्यवस्थित हो गये।
- कक्ष के मुख्य द्वार पर विषय का नाम लिखा गया।
- भाषाओं की कक्षाओं में संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी की डिक्शनरी (शब्द कोष) एवं अन्य चार्ट छात्राओं के मान से रखे गये।
- गणित कक्ष में शंकु, बेलन, त्रिभुज आदि ठोस रूप से और डायग्राम बनाकर लगाये गये हैं।
- सामाजिक विज्ञान की कक्षा में ग्लोब, नक्शे, चार्ट आदि रखे गये हैं।
- विज्ञान कक्ष में भौतिक, रसायन, जीवविज्ञान एवं वनस्पति विज्ञान से संबंधित सभी उपकरण लगाये गये हैं।

**समस्या समाधान की प्रक्रिया :-**

- बस्ते का बोझ कम करने के लिये बुक बैंक में पुरानी पुस्तकों को सिलकर कक्ष में रखा गया हैं। एक सैट घर पर पढ़ने के लिये दिया गया हैं।
- समय विभाजन - चक्र में बदलाव कर लघु एवं दीर्घ मध्यान्तर की व्यवस्था की गई हैं।
- प्रत्येक काल खण्ड के बीच लगने वाले समय को समय विभाजन - चक्र में समाहित करके विभाजित किया गया हैं।
- उपस्थिति बढ़ाने के लिये अभिभावकों से सतत संपर्क योजना का प्रस्ताव विद्यालय प्रबंधन समिति में पारित किया गया हैं।
- समय विभाजन - चक्र में प्रतिदिन पुस्तकालय के लिये समय विभाजित हैं।
- शारीरिक, नैतिक मानसिक विकास के लिये क्रमशः खेल, योग, कम्प्यूटर के कालखण्ड निर्धारित किये गये हैं।
- संस्कृत सम्भाषण एवं अंग्रेजी सम्भाषण के लिये सप्ताह में एक दिन बाल - सभा के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जाता हैं।

**विद्यालय में नियमित बदलाव के लिये दिनचर्या :**

1. नित्य संगीत मय प्रार्थना सभा का आयोजन होता हैं।

2. साप्ताहिक बाल - सभा का संचालन छात्राओं द्वारा किया जाता हैं।

3. पर्यावरण सुरक्षा हेतु दायित्व सौंपे गये हैं।

4. स्वच्छता और स्वास्थ्य संबंधी तथा मध्याह भोजन एवं दैनिक उपस्थिति आदि के लिये समितियां बनाकर विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों को दायित्व सौंपे गये हैं।

शासन की मंशा के अनुरूप विद्यालय के संचालन का समय विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिये कर्तव्य और दायित्व के अनुसार विभाजित किया गया हैं।

| पद | समय |
|---|---|
| प्रधानाध्यापक | पूर्णकालिक |
| शिक्षकों के लिये | 10 से 5:30 बजे तक, 7 घंटे का समय |
| विद्यार्थियों के लिये | 10:30 से 4:30बजे तक 6 घंटे का समय |

उपरोक्त का पालन समयानुसार शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा किया जा रहा हैं| अभिभावक भी प्रोत्साहित होकर अपना पूर्ण योगदान देने में तत्पर रहते हैं।

समय - समय पर शासन और प्रशासन एवं विभाग द्वारा किए गये निरीक्षण में विद्यालय की प्रशंसा की गई हैं।

**राघवेंद्र सिंह परमार**
**प्रधानाध्यापक**
**शासकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय क्रमांक 1 हाथीखाना**
**विकासखंड-दतियाजिला - दतिया ,मध्यप्रदेश**

आयाम-3 कहानी क्रमांक-5

# शासकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय कान्हीवाड़ा
## विकासखंड - सिवनी , जिला – सिवनी,मध्यप्रदेश
## यू डाईस कोड - 23440112713

| | |
|---|---|
|  |  |
| विद्यालय परिसर | हेण्डपंप के पास उचित व्यवस्था करते हुए प्रधानाध्यापक एवं विद्यार्थी |

यह वही कान्हीवाड़ा जहां के मिट्टी के मटके ;घड़े ठण्डे पानी के लिये दूर दूर तक प्रसिद्ध हैं। ग्राम के आस.-पास के क्षेत्रों में छीन्द के वृक्ष बहुतायत से पाये जाते हैं इनसे झाड़ू बनाने का काम आय का एक अच्छा साधन हैं। कान्हीवाड़ा जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान केवलारी से पश्चिम की ओर लगभग 30 किलोमीटर दूर केवलारी सिवनी मार्ग पर स्थित हैं

वहीं सिवनी जिला मुख्यालय से 26 किलोमीटर पूर्व की ओर सिवनी मंडला मार्ग पर स्थित हैं। यहां बस स्टैंड दुर्गाचौक होकर ग्राम कान्हीवाड़ा के छोर पर स्थित कन्या माध्यमिक विद्यालय पहुंचा जा सकता हैं। विद्यालय भवन के उत्तर की ओर आवासीय मकान एवं बड़ी रेललाईन, स्टेशन हैं, पश्चिम की ओर आवासीय मकान हैं, पूर्व की ओर नहर एवं कृषि भूमि, दक्षिण की ओर तालाब, कृषि भूमि एवं आवासीय कॉलोनी हैं। यह आदिवासी बाहुल्य ग्राम हैं यहां गौंड एवं बैगा विमुक्त घुमक्कड़ जाति, अधिकता में निवास करती हैं। इस ग्राम की कुल जनसंख्या 8616 हैं| जिसमें 4169 महिला 4447 पुरूष हैं।

इस ग्राम में अधिकांश गरीब तबके निम्न आय वर्ग के व्यक्ति निवास करते हैं| जिनकी आय 5 लाख रूपये प्रतिवर्ष से कम हैं। यहां के अधिकांश व्यक्तियों का व्यवसाय क्रमश कृषि, .व्यापार, मिट्टी के बर्तनों का निर्माण, मजदूरी अन्य व्यवसाय हैं। यहां राष्ट्रीयकृत बैंक, शासकीय अस्पताल, जवाहर नवोदय विद्यालय एक बालक शास.उ.मा. विद्यालय एक शास. कन्या हाई स्कूल ,तीन शास.

माध्यमिक विद्यालय शास. उर्दु विद्यालय,छह शास. प्राथमिक विद्यालय, पांच प्राईवेट माध्यमिक विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) संचालित हैं| यहां डाकघर एवं पुलिस थाना भी स्थित हैं।

इसी कान्हीवाड़ा के आस पास के क्षेत्रों का रूडयार्ड किपलिंग की विश्व प्रसिद्ध पुस्तक द जंगलबुक में मोगली, बघीरा, शेरखान, भालू ;बल्लू कॉ (अजगर) अमोदागढ़ जैव विविधता वन्य जीवन आदि की कहानी का मनोरम चित्रण वर्णित हैं|

इस विद्यालय का भवन निर्माण बहुत ही सुसंगत ढंग से हुआ था, जिसमें परिसर की स्वच्छता विद्यार्थियों में निजी स्वच्छता का बोध, शौचालय.मूत्रालय का समुचित रखरखाव, जल तथा भूमि का उचित प्रबंध शुद्ध पेय जल की उपलब्धता एवं विद्यालय के सौन्दर्यीकरण की दिशा में कार्य करने के पर्याप्त अवसर देख-भाल से, अजीब सा जुनून एवं उत्साह स्वयं से उत्पन्न होने लगा था|

विद्यालयीन एवं अन्य क्षेत्रीय शिक्षकों, पालकों, छात्राओं और ग्रामीणजनों के माध्यम से गाहे.बगाहे ये समस्यायें समय.बे समय स्कूल परिसर या राह चलते मुँह जबानी विद्यालय आने लगी थी। मानों प्रधानाध्यापक इसे जादूगर की तरह जादू का डंडा घुमाकर पल भर में गायब कर देंगे।

कक्षा की साफ सफाई, भृत्य का अभाव के साथ विद्यालय से लगी घास भूमि के लगभग 2 एकड़ रकबा जो भू-माफिया (कालोनाइजर्स) के अवैध कब्जे में अतिक्रमित था इस हेतु प्राचार्य शासकीय कन्या हाईस्कूल कान्हीवाड़ा द्वारा 11 फरवरी 2016 को प्रधानाध्यापक, शासकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय कान्हीवाड़ा को सीमांकन हेतु अधिकृत किया गया।

17 जून 2016 को प्रधानाध्यापक ने कलेक्टर महोदय के सहयोग से विकट परिस्थितियों में भी किए गए सार्थक पहल, अदम्य साहस सूझ-बूझ प्रशासनिक कुशलता एवं दूर दर्शिता से रकबा 0.02 हेक्टयर (गुमशुदा भूमि) का सीमांकन कराकर यह भूमि अतिक्रमण मुक्त कराकर, आवासीय प्लाट की रजिस्ट्री निरस्त कराई। यह अपने -आप में विद्यालय के लिए एक बड़ी उपलब्धि थी |

इस भूमि में की पहल के चलते ग्राम पंचायत कान्हीवाड़ा के सरपंच ने पंचायत निधि से समतलीकरण रोलर चलाकर खेल मैदान निर्माण में अभूतपूर्व योगदान किया।

उल्लेखनीय हैं कि 18 जून को पुनः सीमांकन प्रतिवेदन उपरांत इस भूमि में चारदीवारी निर्माण का कार्य आरंभ किया जाकर पूर्णता की ओर हैं, जिससे छात्राओं पालकों शिक्षकों आम नागरिकों में हर्ष व्याप्त हैं । इस हेतु 15 अगस्त 2019 और 05 सितम्बर 2019 को शिक्षक सम्मान समारोह में उत्कृष्ट शौचालय निर्माण खेल मैदान हेतु राशि जुटाने ए.एल.एम. शिक्षण हेतु जिला कलेक्टर द्वारा प्रशस्ति प्रदान कर सम्मानित किया जा चुका हैं।

विद्यालय परिसर के वर्षा जल के निस्तारण हेतु लगभग 60 फुट की नाली का निर्माण सीमेंट, कंक्रीट से किया गया जिससे प्रार्थना सभा स्थल में कीचड़ होना बंद हो गया हैं। हैंडपंप से निकलने वाले जल के निस्तारण हेतु वाटर हार्वेस्टिंग तकनीक का प्रयोग कर 70 फुट लम्बी छिद्रित नाली के निर्माण से नाली के दोनों ओर कक्षा वाटिकायें पुष्पित हो रहीं हैं और वातावरण भी सुगंधित एवं आकर्षक हो गया हैं। इसकी देखरेख विद्यार्थी स्वयं करती हैं। इसमें विद्यालय परिसर से बीनी गई गिट्टियों का उपयोग नाली का बेस तैयार करने में किया गया।

विद्यालय में संचालित गतिविधियों में छात्र.शिक्षक सहयोग परस्पर देखा जा सकता हैं जिसे वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा सराहा जा रहा हैं।

समस्या और उनके समाधान में छात्राओं का योगदान एवं महात्मा गांधी ने जैसे स्वच्छता को हथियार बना स्वतन्त्रता आंदोलन चलाया था ठीक उसी तरह इस विद्यालय में स्वच्छता के माध्यम से छात्राओं के व्यवहार में बदलाव की पूरी कहानी स्वच्छता के विभिन्न आयामों की यात्रा स्वयं तय करते हुए अपनी सफलता की कहानी स्वयं बया कर रही हैं।

इन्ही बातों को ध्यान में रखकर अतिशीघ्र विद्यालय की अन्य समस्याओं को छात्राओं शिक्षकों के परस्पर सहयोग से निपटाने की योजनायें बनाई और विभिन्न गतिविधियों का क्रियांन्वयन किया।

लगभग 3 वर्षों से यह स्वच्छता कार्यक्रम चल रहा हैं, शाम को प्रार्थना के बाद भी विद्यालय उतना ही साफ रहता हैं जितना प्रातः 11 बजे रहता था। छात्राओं ने अपने व्यवहार में बदलाव कर, चाकलेट के रैपर, नमकीन,बिस्किट के खाली पैकेट, आँवले, बेर की गुठलियाँ, मूंगफल्ली के छिल्के, लालीपॉप की डंडियाँ,कागज पॉलीथिन अन्य कचरा ग्राउण्ड खिड़कियों के फैंकना बंद कर दिया हैं जिसकी चर्चा सम्पूर्ण जिले एवं संभाग में हैं। विद्यालय की स्वच्छता राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल के ओआईसी द्वारा भी मुक्त कंठ से सराही गई हैं।

विद्यालय प्रशासन की लगातार सार्थक पहल मांगों मौखिक निवेदनों का परिणाम मिला और एक बालिका शौचालय इकाई हेतु राशि शाला प्रबंधन समिति के खाते में जमा हुई। समिति ने कुशल नेतृत्व एवं योजना से माध्यमिक विद्यालय स्तर पर एक आदर्श शौचालय बनाकर प्रदेश स्तर पर अपनी जगह बनाई हैं, जिसकी प्रशंसा समय-समय पर अधिकारियों द्वारा की जाती हैं।

बालिकाओं के सेनेटरी पेड के डिस्पोजल हेतु इन्सिनिरेटर का निर्माण भी किया गया हैं, जो कार्यरत हैं। उपलब्ध पेयजल की गुणवत्ता का परीक्षण जिला स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग से करायी जाकर उस पर

यूनीसेफ प्रतिनिधि जबलपुर की राय ली गई। वहीं जनसहयोग द्वारा विद्यालय में वाटर प्यूरीफायर प्रदान किया गया, जिससे बालिकाओं शिक्षकों को शुद्ध पेयजल प्राप्त हो रहा हैं।

छात्र-शिक्षक परस्पर सहयोग का ही प्रतिफल हैं कि यह विद्यालय प्रदेश स्तर चर्चा का विषय बना हुआ हैं। यहाँ की शैक्षिक प्रगति भी कमतर नहीं हैं। विगत वर्ष सत्र 2018-19 प्रतिभापर्व में विद्यालय 84 प्रतिशत अंक प्राप्त कर ए ग्रेड में रहा हैं। सत्र 2019-20 में 161 विद्यार्थी अध्ययनरत् हैं|

| | |
|---|---|
|  |  |
| **शुद्ध पेयजल लेते विद्यार्थी** | **परिसर की स्वच्छता करते शिक्षक एवं विद्यार्थी** |

इस विद्यालय के छात्र.शिक्षक का उत्साह और लगन देखते ही बनता हैं। मोगली उत्सव आस-पास की खोज, विज्ञान मित्र क्लब, हिन्दी ओलिम्पयाड, गणित ओलिम्पयाड में बढ़-चढ़ कर हिस्सेदारी का निर्वाह करते हैं। कहानी उत्सव में विद्यालय जिले में विशेष स्थान रखता हैं|

**आगामी योजना:-**

यह क्षेत्र रूडयार्ड किपलिंग की विश्व प्रसिद्ध पुस्तक द जंगल बुक में जल, जंगल, जानवर, जलवायु, जैवविवधता के लिये विश्व प्रसिद्ध हैं। इस क्षेत्र के दुर्लभ लुप्त प्राय: जड़ी-बूटियां, पौधों का छात्र-शिक्षक सहयोग एवं ग्राम के जानकार व्यक्तियों बैगा जाति के लोगों के सहयोग से विद्यालय की 22 बसाहटों के दायरे की जानकारी एकत्र कर संबंधित पौधों का लोक जैवविवधता दस्तावेज एवं छाया चित्र संकलित कर इन्हें विद्यालय परिसर में संरक्षित करने की योजना हैं।

क्षेत्रीय लोक कला, नृत्य, गीत-संगीत, चित्रकला, पकवान, लोकोक्ति, मुहावरे, माटी कला को विद्यालय परिसर में संरक्षित करने की योजना हैं।

विद्यालय में दर्ज शत-प्रतिशत छात्राओं की उपस्थिति शत-प्रतिशत होए परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत हो| विद्यालय का दक्षता परीक्षण में स्तर कांस्य पदक से क्रमश: रजत स्वर्ण पदक स्तर तक पहुंचाना एवं प्रतिभा पर्व में 84 प्रतिशत से बढ़ाकर 90 प्रतिशत से अधिक प्राप्त करना मुख्य ध्येय हैं।

**महेश कुमार साहू**
**प्रधानाध्यापक**
**शासकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय कान्हीवाड़ा**
**विकासखंड-सिवनी ,जिला - सिवनी, मध्यप्रदेश**

आयाम-3 कहानी क्रमांक-6

# शासकीय माध्यमिक विद्यालय बोरखेड़ी काँवल
## विकासखंड - सुसनेर, जिला- आगर- मालवा
## यू डाईस कोड -23510301302

शासकीय माध्यमिक विद्यालय बोरखेड़ी काँवल, सुसनेर तहसील से 10 किलोमीटर दूरी पर हैं | यहाँ का परिवेश ग्रामीण हैं, अधिकांश व्यक्ति कृषि पर आधारित हैं| 90: लोग सोंधिया समाज से हैं, इनकी वार्षिक आय पांच लाख से कम हैं। लोगों की धर्म में आस्था हैं| गांव के निकट 4 किलोमीटर दूरी पर पंचदेहरिया नामक पांडव कालीन प्रसिद्ध स्थान हैं | यहाँ पर वनवास के दौरान पांडव द्वारा यह शिव मंदिर बनाया गया हैं, ऐसी मान्यता हैं। गांव में एक अशासकीय विद्यालय, पूर्व प्राथमिक शिक्षण से कक्षा 5 तक संचालित हैं, साथ ही एक सरकारी विद्यालय कक्षा 1 से 8 तक संचालित होता हैं | गांव में आंगनवाड़ी केंद्र भी हैं।

गांव में आने-जाने का मार्ग कच्चा था, वर्षा के दिनों में बाहर से आने वाले विद्यार्थियों को कीचड़ भरे मार्ग से ही गुजर कर आना होता था| विद्यार्थियों के पढ़ने के लिए मात्र प्राथमिक विद्यालय में एक छोटा सा कमरा था| उस समय गांव में मात्र एक या दो व्यक्ति ही हायर सेकेंडरी पास थे | विद्यालय के पास लोगों का कम पढ़ा-लिखा होना ही सबसे बड़ी समस्या थी, लेकिन विद्यालय कहावत के परिपेक्ष में आगे चली कि "अगर आप तेजी से चलना चाहते हैं तो अकेले चलो, लेकिन दूर तक चलना चाहते हैं तो समुदाय को साथ लेकर चलो"|

**समस्या:**

1.पालकों की पढ़ाई - लिखाई की तरफ अरुचि ।

2. सीखना चार-दीवारी से बाहर संभव हैं , इसे लागू करना |

**समस्या समाधान की रणनीति एवं प्रक्रिया :**

विद्यालय में समुदाय की सहभागिता पर जोर दिया। इसके तहत गांव की जनता को विद्यालय के संपर्क में रहते हुए प्रत्येक गतिविधि में सहयोग के लिए कहा गया| उनको बताया गया कि विद्यालय का विकास गांव की जनता के दृष्टिकोण पर निर्भर करता हैं| यदि जनता जागरूक होगी तो वह विद्यालय की उपलब्धियों के लिए सहयोग कर सकेगी| साथ ही विद्यालय में बाल कैबिनेट का गठन

कर छात्रों को उनके कर्तव्यों के प्रति सजग रहने की समझाइश दी गई। प्रधानाध्यापक द्वारा विद्यालय में पौधों के लिए पानी व मिट्टी व अन्य काम के लिए गांव के समुदाय के लोगों से सहयोग लिया गया।

आनंददायी शिक्षण ऐसा  प्रक्रम हैं जो विद्यार्थी की रुचि अनुसार बिना मानसिक दबाव डालें, सहज तरीके से शिक्षण करवाकर, विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति बढ़ा सकते हैं| इन तरीकों को अपनाकर हमारा शिक्षण भी रोचक हो जाएगा। इसके लिए बाल कैबिनेट के सार्थक प्रयास से विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति बढ़ाने के लिए बाल कैबिनेट की भूमिका निर्णायक हैं| विद्यालय में इसका सही उपयोग हो इस हेतु बाल कैबिनेट के प्रधानमंत्री और अन्य मंत्रियों द्वारा अपने-अपने उत्तरदायित्व के अतिरिक्त विद्यालय में 3 या 4 दिन तक लगातार अनुपस्थित रहने वाले विद्यार्थियों को लेने शिक्षक-विद्यार्थी ढोल के माध्यम से हार-फूल की माला लेकर उनके घर जाते हैं और माला पहनाकर घर से विद्यालय लाते हैं| इससे छात्रों के पालकों को भी इस बात का पता चलता हैं की कौन सा विद्यार्थी लम्बे समय से अनुपस्थित हैं| और वे भविष्य में इस बात का ध्यान रखते हैं| साथ ही समुदाय के लोग जो विद्यार्थियों को देखते हैं वह भी पालकों एवं बालकों को समझाईश देते हैं।

| | |
|---|---|
|  |  |
| **अनुपस्थित विद्यार्थीयो को घर से विद्यालय लाते हुए** | **शैक्षणिक भ्रमण पर विद्यार्थी** |

विद्यार्थी एक स्थान पर लगातार कार्य करने से नीरसता महसूस करने लगते हैं| हमारे विद्यार्थी भी इस सहज प्रक्रिया से अछूते नहीं रह सकते| उनको इससे बचाने के लिए कुछ नयापन दिया जाता हैं| इन्हें खेत-खलिहान,  पुराने मंदिर,  तालाब आदि का अवलोकन करवाया जाता हैं इससे विद्यार्थियों का जैव विविधता,  परिवेश,  पर्यावरण,  पुरातत्व की जानकारी मिलती हैं एवं मन प्रसन्न रहता हैं

पढ़ाई के साथ-साथ अन्य गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को  विद्यालय से जोड़े रखने का प्रयास किया जाता हैं| जिस बच्चे का जन्मदिन जिस माह में आता हैं उसे विद्यार्थी और शिक्षक

साथ मिलकर विद्यालय में मनाते हैं| विद्यार्थी के अभिभावक को जन्मदिन पर आमंत्रित किया जाता हैं इससे विद्यार्थी को प्रोत्साहन मिलता हैं तथा विद्यालय द्वारा किए गए कार्यों को समुदाय तक पहुंचाने में मदद मिलती हैं। अभिभावकों से सतत संपर्क बनाकर तथा समुदाय के सक्रिय व्यक्तियों की पहचान कर उन्हें विद्यार्थियों से चर्चा करने हेतु आमंत्रित करते हैं| कई बार उनके द्वारा की जाने वाली चर्चा शिक्षा के क्षेत्र में योगदान देती हैं|

लाइब्रेरी की पुस्तकों के माध्यम से साहित्य, राजनीति, विज्ञान, नैतिक शिक्षा, समाज, धर्म आदि की जानकारी दी जाती हैं| विज्ञान,गणित के शिक्षण को और आधुनिक बनाने के लिए नए-नए उपकरणों का उपयोग किया जा रहा हैं, साथ ही विद्यार्थियों को विद्यालय में खिलौने बनाना, फ्लावर बनाना, पेंटिंग बनाना जैसे कार्य सिखाए जाते हैं। जो समय आने पर उनको स्वयं का रोजगार चलाने में मदद कर सकती हैं| इतना ही नहीं यह सारे काम सृजनात्मक तरीके से सोचने-समझने में बहुत मददगार साबित होते हैं|

कहा जाता हैं कि अगर इंसान में संघर्ष और कठिन मेहनत करने की क्षमता हो, तो दुनिया में ऐसा कोई मुकाम नहीं हैं जिसे हासिल न किया जा सके| कवि रामधारी सिंह दिनकर ने सही कहा हैं कि “मानव जब जोर लगाता हैं तो पत्थर पानी बन जाता हैं”, इसी तरह विद्यालय जब लगातार काम करेगा तो निश्चित तौर पर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक होगा , जोकि एक दिन मील का पत्थर साबित होगा।

**बदलाव क्या हुआ:**

1.विद्यार्थियों का नामांकन व उपस्थिति में वृद्धि।

2.अभिभावकों का विद्यालयी गतिविधियों में सहयोग करना |

**आगामी योजना :-**विद्यार्थियों के सोचने-समझने की क्षमता का विकास करने के लिए आधुनिक युग के अनुसार आगामी वर्षों में इंटरनेट की व्यवस्था की जा रही हैं, ताकि विद्यार्थी समाज के पटल पर अपनी पहचान बना सके।

**श्री सतीश उपाध्याय**
**प्रधानाध्यापक**
**शासकीय माध्यमिक विद्यालय बोरखेड़ी काँवल**
**विकासखंड - सुसनेर,जिला- आगर- मालवा, मध्यप्रदेश**

आयाम-3 कहानी क्रमांक-7

## शासकीय प्राथमिक विद्यालय सिगुड़ी
## विकासखण्ड - मानपुर,जिला - उमरिया, मध्यप्रदेश
## यू डाईस - 23150912206

मध्यप्रदेश राज्य में शहडोल संभाग के उमरिया जिले के मानपुर ब्लॉक में एक छोटा सा गाँव हैं सिगुड़ी| जिसकी जिला मुख्यालय से दूरी 46 किलोमीटर और ब्लॉक मुख्यालय से दूरी 10 किलोमीटर हैं| यहाँ शासकीय प्राथमिक विद्यालय सिगुड़ी हैं| हमारे विद्यालय से 10 कि.मी. दूरी पर बांधवगढ नेशनल पार्क भी हैं|

प्रधानाध्यापक लीडरशिप प्रशिक्षण के बाद विद्यालय को बेहतर कैसे बनाया जा सकता हैं, इसके लिए विद्यालय की प्रमुख आवश्यकताओं को चिन्हित करना जरुरी था| जिसके क्रम में विद्यालय परिवार ने विश्लेषण किया और कुछ आवश्यकताओं को चिन्हित किया जिन पर सबसे पहले काम करने की आवश्यकता थी, जैसे -

- दर्ज संख्या ज्यादा होने पर भी उपस्थिति का कम होना|
- विद्यार्थियों को सीखने - सिखाने में कठिनाई आना|
- विद्यार्थियों का पूर्णावकाश तक स्कूल में न रुकना|
- स्कूल में विद्यार्थियों का मन न लगना|

सत्र 2014-15 में हमारी विद्यालय में पहले विद्यार्थियों की दर्ज संख्या ज्यादा थी, मगर उपस्थिति कम रहती थ| जिससे विद्यार्थियों को सीखने - सिखाने में असफलता हाथ लगती थी|

अपने विद्यालय को एक आदर्श विद्यालय बनाने के लिए कई प्रयास किये एवं रणनीति बनाई, जैसे - विद्यार्थियों से घुलें - मिलें व उनके रुचि व स्तर के हिसाब से काम कराए| विद्यार्थियों से उनकी स्थानीय भाषा में बात की गई | विद्यालय की साज - सज्जा एवं सुंदरता की योजना बनाई| पढ़ने का कोना, बोलती दीवार, पुस्तकालय का निर्माण किया| दरी का उपयोग किया ताकि सभी विद्यार्थियों के बीच बैठकर उन्हें जाना व समझा जा सके| मध्यान्ह भोजन के समय सभी शिक्षक विद्यार्थियों के साथ भोजन करते थे ताकि उनकी दूरी कम हो सके। चार विषयों तक सीमित न रह

कर विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा, रामायण जैसे ग्रंथ के बारे में कहानियां सुनाई गई| खाली बचे समय में सभी शिक्षकों द्वारा समीक्षा की गई कि विद्यार्थियों ने आज क्या सीखा, उन्हें क्या सिखाया गया व कौन - सा विद्यार्थी कहाँ पर कठिनाई महसूस कर रहा हैं|

इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विद्यालय शिक्षकों ने विश्लेषण किया कि क्यों न हम अपने विद्यालय को विद्यार्थियों के मन के विद्यालय में बदलें, चूँकि हमारे विद्यालय से दो शिक्षक जिला स्रोत समूह के सदस्य (डी.आर.जी.) हैं| हमने राज्य शिक्षा केंन्द्र के प्रशिक्षणों और कार्यशालाओं में जो सीखा उसे अपने विद्यालय में लागू करना सुनिश्चित किया। जिसके लिए विद्यालय के द्वारा रणनीति बनाई गई, जिसमें विद्यार्थियों से उनकी स्थानीय भाषा में बात करना पहला कदम था| फिर क्या था धीरे - धीरे बच्चे हमसे अपनी बात कहने में सहजता महसूस करने लगे। इसी क्रम में मध्यान्ह भोजन के समय हमने विद्यार्थियों के संग खाना खाया, मिलकर खेल भी खेला एवं खिलाया भी।

कक्षा में कुर्सी व टाट - पट्टी हटाकर हमने दरी की व्यवस्था की जिसमें बच्चे व शिक्षक साथ बैठकर अध्ययन - अध्यापन कार्य करने लगे| इसके बाद धीमी गति से सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए आकर्षक चित्र, पोस्टर,टी.एल.एम. बनाये व उन्हे दीवारों में सजाया| जिससे हमारा विद्यालय सुंदर दिखने लगा| इसी के साथ हमारे विद्यालय के बच्चे दीवार पर लगी सामग्री से खेलना व गतिविधियाँ करना शुरू कर दिए जिससे दिवार बोलती दीवार बन गई| धीरे - धीरे विद्यालय में पुस्तकालय को समृद्ध किया और उसमें विद्यार्थियों के स्तर की लगभग 100 किताबों को एकत्र कर लिया|

हमारे द्वारा बनाई गई पुस्तकालय निर्माण की योजना कारगर साबित हुई और बच्चे अब पुस्तकालय में कुर्सी टेबिल में बैठकर अपने मन की पुस्तक को पढ़ते हैं| विद्यार्थियों को प्रतिदिन कहानी सुनाना विद्यार्थियों के मन को भा गया और अब बच्चें विद्यालय में पूरे समय तक रुकते हैं। शिक्षक का विद्यार्थियों के साथ मित्रवत व्यवहार विद्यार्थियों को स्वतः ही विद्यालय की गतिविधियों में जोड़ने लगा|

जिससे विद्यार्थियों का विश्वास शिक्षक के प्रति बढ़ा और वे किसी भी मुसीबत, शंका - समाधान हेतु शिक्षक से बात करने लगे| इससे विद्यार्थियों के मन में शिक्षक के प्रति अपनेपन का भाव विकसित हुआ|

जैसा हम सभी जानते हैं कि सभी बच्चे भिन्न होते हैं उनमें अलग - अलग विशेषताएं होती हैं । एक बच्ची शारदा नामदेव हैं वह हंसती - खेलती रहती थी, मगर शिक्षक के पूछने पर शान्त हो जाती थी| एक दिन हमने अपने विद्यालय में खेल सामग्री लाई तो वह उत्सह पूर्वक हमसे बोल पड़ी कि मुझे रस्सी कूदना हैं, उस दिन शिक्षक को पता चला कि हमारी यह खेल योजना भी विद्यार्थियों को हमसे जोडने में सफल रही।

अधिकांश विद्यार्थियों को चित्र बनाकर रंग भरना जैसे कार्यों में ज्यादा रुचि होती हैं, हमने इस बात को समझा और अपनी रणनीति के तहत प्रत्येक विद्यार्थी की पोर्टफोलियो फाइल तैयार की, जिसमें

विद्यार्थी अपने मनपसंद चित्र बनाकर फाइल में रखते हैं । सुबह की उपस्थिति हमने विद्यार्थियों को संभाग ,जिला, फल- फूल के नाम पर लेना चालू किया जिसका परिणाम यह रहा कि विद्यार्थियों को फल-फूल,जिला ,संभाग के नाम याद हो गये।

इस तरह से बनाई हुई रणनीति पर अमल करते - करते, आज हमारा विद्यालय एक आदर्श विद्यालय के नाम से जाना जाता हैं। इस प्रक्रिया से हमारे विद्यालय में मुख्यतः निम्न बदलाव हुये:-

- विद्यार्थियों की उपस्थिति 80 प्रतिशत से ज्यादा रहने लगी|
- विद्यार्थी पठन -पाठन में रुचि लेने लगे और उनके अकादमिक स्तर में भी बढ़ोत्तरी हुई|
- शिक्षक व विद्यार्थियों के बीच की दूरी कम हुई|
- विद्यार्थी अब स्वयं अपने विद्यालय को सजाते हैं |

| | |
|---|---|
|  |  |
| **टी.एल.म सामग्री का निर्माण** | **सुखी पत्तियों द्वारा चित्र निर्माण** |

हमारे विद्यालय में विद्यार्थियों को सीखने-सिखाने में कठिनाई महसूस हो रही थी| जिसके समाधान के लिए शिक्षकों ने विद्यार्थियों के साथ मिलकर कुछ टी. एल. एम. तैयार किये| जैसे - संख्या,चकरी, इकाई-दहाई चकरी, मात्रा खिड़की, मात्रा की चकरी,शब्द चकरी, कबाड़ से बना कैलेण्डर,दिनों की चकरी, मसालों का चार्ट ,रबी-खरीफ की फसल चार्ट, संख्या पट्टी,तराजू व बाट चित्रों के पोस्टर, अक्षर कार्ड, शब्द चार्ट, परिवार चार्ट, चलचित्र कहानी, लंबाई मापने का स्केल इकाई - दहाई खेल, मध्यप्रदेश की सामान्य जानकारी का बोर्ड, घड़ी का टी. एल. एम.चित्र सहित महापुरुषों की जीवनी रंगो की पहचान चार्ट संख्या निर्माण डिब्बा इत्यादि टी. एल. एम. तैयार किए| इन सभी

सहायक शिक्षण सामग्री का उपयोग विभिन्न गतिविधियों में शिक्षक और बच्चों द्वारा किया गया| जिसके परिणाम स्वरुप बच्चों के सिखने के स्तर में वृद्धि हुई|

शिक्षक और विद्यार्थी दोनों मिलकर कक्षा - कक्ष और पुस्तकालय की दीवारों को आकर्षक और उपयोगी बनाने के लिए साज - सज्जा का काम भी करने लगे| कई बार कक्षा की बाहरी दिवार को भी सजाते हैं| पुस्तकालय में जिन कहानियों को वे पढ़ते हैं, उन पर वे विभिन्न गतिविधियाँ भी करते हैं जैसे - कहानी को अपने शब्दों में सुनाना, कहानियों पर चित्रों को बनाना और उनपर अभिनय करना| अभिनय करने के कारण विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ा हैं, साथ मिलकर काम करने की भावना का विकास हुआ हैं, किस पात्र हेतु किसका चयन करना चाहिए इसका निर्णय लेने की क्षमता का भी विकास हुआ हैं|

विद्यालय में पढ़ने - पढ़ाने के साथ ही खेल गतिविधियाँ भी करवाई जाती हैं, जिससे विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, निर्णय लेने की क्षमता, समस्या समाधान, आत्मविश्वास, हम की भावना, जिम्मेदारी लेना, झिझक दूर होना, अपनी बात को कह पाना जैसे अलग - अलग कौशलों का विकास हुआ हैं |

इसके साथ ही प्रत्येक शनिवार को होने वाली बाल सभा में भी विद्यार्थी और शिक्षक साथ मिलकर विद्यालय की प्रगति के बारे में बात करते हैं




**खेल गतिविधियों के माध्यम से शिक्षण**

विद्यालय में हुए सकारत्मक बदलावों के कारण अब दो-दो किलोमीटर दूर से भी विद्यार्थी विद्यालय में आने लगे हैं| इतना ही नहीं आस - पास के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थी भी अब हमारे विद्यालय में आने लगे हैं| इस प्रकार से हम अपने विद्यालय को एक आदर्श विद्यालय बनाने में सफल हुये हैं।

हमारे विद्यालय का अपना यू-टूयूब चैनल भी हैं जिसे प्रदीप कुमार त्रिपाठी के नाम से देखा जा सकता हैं, जिसमें हमारे विद्यालय की समस्त गतिविधियां खेल व नवाचार अपलोड किये हुए हैं |

**प्रदीप कुमार त्रिपाठी**
**अध्यापक**
**शासकीय प्राथमिक विद्यालय सिगुड़ी**
**विकासखंड-मानपुर जिला उमरिया, मध्यप्रदेश**

आयाम-3 कहानी क्रमांक-8

**शासकीय प्राथमिक विद्यालय चम्पी**
**विकासखंड - नीमच , जिला - नीमच,मध्यप्रदेश**
**यू - डाईस कोड - 23180703801**

| | |
|---|---|
|   |  |
| **छात्रों के साथ वृक्षारोपण** | **पोधों की देखभाल करते विद्यार्थी** |

पर्यावरण का हमारे जीवन में बहुत महत्व हैं। मनुष्य एक पल भी इसके बगैर नहीं रह सकता। ये हरे - भरे पेड़ पौधे हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं। प्रकृति के बिना मानव जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती हैं। जल, थल, वायु, अग्नि और आकाश इन पाँच तत्वों से ही मनुष्य का जीवन हैं एवं जीवन समाप्त होने पर वह इन्हीं पाँच में विलीन हो जाता हैं।

यह एक तरह से मानव जीवन का सहचर हैं। वृक्षारोपण से प्रकृति का संतुलन बना रहता हैं। अगर वृक्ष न हों तो,न ही सरोवर, नदियाँ जल से भरी रहेंगी और न ही, सरिता कल-कल ध्वनि से प्रवाहित होंगी। वृक्षों की जड़ों से वर्षा ऋतु का जल धरती के तल में पहुंचता हैं।यही जल स्रोतों में गमन करके हमें अपार जल राशि प्रदान करता हैं वृक्षारोपण हमारे जीवन को सुखी और संतुलित बनाए रखता हैं। वृक्ष हमारे जीवन में राहत, खुशियाँ, ताजगी और सुख-चैन प्रदान करते हैं। पीपल के वृक्ष का हमारे लिए आध्यात्मिक महत्व तो हैं ही, साथ ही साथ यह अत्यन्त गुणकारी भी हैं, क्योंकि यह प्रचुर मात्रा में ऑक्सीजन  देकर मानव मात्र का कल्याण करता हैं।

वैसे तो सभी वृक्ष दिन के समय ऑक्सीजन छोड़ते हैं जो जीवन के लिए आवश्यक तत्व हैं परन्तु पीपल के वृक्ष में ऑक्सीजन प्रदान करने का अनुपात अन्य वृक्षों की तुलना में अधिक होता हैं।

इसके अतिरिक्त नीम, बबूल, तुलसी, आंवला व शमी आदि वृक्षों का औषधि के रूप में विशेष महत्व हैं।

| | |
|---|---|
|  |  |
| **पौधारोपण करते छात्र-छात्राये** | **हरियाली से आच्छादित विद्यालय** |

मनुष्य की भी स्वार्थ, लोलुपता एवं असंतोष की प्रवृत्ति से दिन प्रतिदिन वृक्षों की संख्या के असंतुलन की संभावना उत्पन्न हो गई हैं। यही कारण हैं कि भूमि का कटाव बढ़ रहा हैं, जिससे जलाशय दिन- प्रतिदिन सूखते जा रहे हैं। पानी की इस निरंतर कमी से जलीय जंतुओं का अस्तित्व भी खतरे में पड़ रहा हैं।

बी. आर. सी कार्यालय से स्कूल की दूरी 12 कि.मी हैं। हमारे स्कूल परिसर में प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय एवं आंगनवाड़ी स्थित हैं। वर्तमान में हमारे विद्यालय का चयन "एक परिसर एक शाला" योजना में हो गया हैं, जिसके तहत हमारे विद्यालय में कक्षा 1 से 8 तक के सभी बच्चे पढ़ाई, खेलकूद व अन्य गतिविधियों में भाग लेते हैं।

सर्वप्रथम विद्यालय के सभी विद्यार्थियों में पेड़-पौधों के प्रति रूचि जागृत की गई। विद्यार्थियों को हरियाली का महत्व बताया और विद्यार्थियों और समस्त स्टाफ को साथ लेकर हमारा सफर शुरू हुआ। विद्यालय परिसर में उपलब्ध कुएं पर लोहे की जाली लगाई गई और कुएं से पानी की टंकियों तक पाईप लाईन डाली गई। जिससे पेड़-पौधों को आसानी से पानी पिलाया जा सके।

विद्यालय में विद्यार्थियों की अलग-अलग टीमें बनाकर उनको पेड़-पौधों की देखभाल और सुरक्षा की जिम्मेदारी दी गई, जिसे विद्यार्थियों ने बखूबी निभाया। पेड़-पौधों की देखभाल के लिए ट्री-गार्ड बनवाये गए, जिससे पौधों का विकास हो सके। इस प्रकार धीरे-धीरे निरंतर पेड़ों की माला बन गई और विद्यालय में हरियाली बढ़ती गई।

पूरी टीम ने प्रतिवर्ष 5 नए पौधे लगाए गए, जिनकी पूरे वर्ष देखभाल की गई। इस प्रकार धीरे-धीरे निरंतर पेड़ों की माला बनती गई और विद्यालय में हरियाली बढ़ती गई।

आज हमारे विद्यालय में कुल छोटे-बड़े सभी मिलाकर 48 पेड़-पौधे हैं| जिसमें नीम, पीपल, रातरानी, कनेर, बटरफ्लाय, गुलमोहर, अनार, गुडहल, हजारी आदि लगे हुए हैं। यह सफलता सिर्फ विद्यार्थियों व स्टाफ के सहयोग से ही प्राप्त हुई। हमारे सफर में हमारे विद्यालय के इको क्लब, जिसका नाम "अरावली इको क्लब" हैं का विशेष  योगदान रहा।

इको क्लब शिक्षा में गुणवत्ता लाने, संस्कार तथा समाज-सेवा, स्वच्छता व पर्यावरण से सम्बंधित क्रियाकलापों व जागरूकता लाने में बहुत सहायक सिद्ध होंगे। जिले के सभी स्कूलों को इस सम्बंध में बजट भी जारी किये गये हैं।

हमने सभी पेड़-पौधों को अपने विद्यार्थियों की तरह ही विकसित किया हैं। प्रारंभ से अंत तक यह कार्य हमें नई ऊर्जा और स्फूर्ति देता गया। हाँलाकि अंत नहीं क्योंकि हम पेड़-पौधों के बिना कुछ नहीं हैं। हमारे कई विद्यार्थियों ने यहां बहुत कुछ सीखा। वे अब प्रकृति के महत्व को समझते जा रहे हैं। सदियों से प्रकृति के लिए हमारी संस्कृति और परम्परा समर्पित हैं। कहते हैं 1 पेड़ 10 बच्चों के समान हैं।

**आगामी योजना**

- पानी के खेत कुएं का गहरीकरण कर भविष्य के लिए जल स्त्रोत का पुख्ता इंतजाम।
- विद्यार्थियों को अन्य औषधि पौधों के साथ-साथ फलदार पेड़  लताओं को लगवाकर छोटे-छोटे जागरूकता कार्यक्रम उत्सव के रूप में मनवाना।
- भूमि को देसी खाद से उसमें उपजाऊ क्षमताएं बढ़ाना |
- स्कूल के आसपास स्वच्छता और वृक्षों से हरियाली रहे |

**श्रीमति शालिनी**
**प्रधानाध्यापक**
**शासकीय प्राथमिक विद्यालय चम्पी**
**विकासखंड- नीमच ,जिला- नीमच ,मध्यप्रदेश**

## अधिगम के लिए समाज व विद्यालय का सहसंबंध : आयाम - 4

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शाला को समुदाय के सक्रिय सहयोग की आवश्यकता होती हैं ,समुदाय में शामिल हैं -शाला प्रबंधन समिति के सदस्य , शिक्षक , विद्यार्थी , माता पिता , पालक , स्थानीय निवासी , स्थानीय निकायों के प्रतिनिधि , सांस्कृतिक संगठनों और गैर सरकारी संगठनों के सदस्य , आदि ।

शिक्षा में समुदाय की सार्थक व प्रभावी सहभागिता के लिए आवश्यक हैं कि एसएमसी की बैठक नियमित व आवश्यक रूप से आयोजित की जाएं , मीटिंग का समय व स्थान समुदाय की सुविधा व सहमति के आधार पर तय हो , बैठक के मुद्दों की जानकारी , समाधान की रणनीति , क्रियान्वयन की निगरानी समुदाय की आपसी सहमति से तय हो , समुदाय बच्चों के नामांकन व ठहराव के साथ-साथ शाला की मूल्यांकन प्रक्रिया में भी भाग ले , शाला व समुदाय मिलकर शाला की विकास की योजना बनाएं एवं आवश्यकताओं को पहचान कर एवं प्राथमिकता के आधार पर उन्हें हासिल करने में सहयोग करें , शाला एवं समुदाय द्वारा मिलकर स्थानीय समुदाय के ज्ञान और कौशल को शाला के विषयों के साथ जोड़ने के प्रयास किए जाएं , इसके अंतर्गत स्थानीय संस्कृति , इतिहास ,परंपरागत ज्ञान - जिनमें लोकगीत ,कला, शिल्प ,कृषि आदि से संबंधित के बारे में विद्यार्थियों की समझ को विकसित करने में सहायता करें।

**आयाम-4 कहानी क्रमांक-1**

# समुदाय की विद्यालय में सहभागिता
## शासकीय कन्या माध्यमिक शाला, माधवगंज शेरपुरा
## विकासखंड - विदिशा, जिला- विदिशा, मध्यप्रदेश
## यू-डाईस कोड-23310722523

शासकीय कन्या माध्यमिक शाला, माधवगंज शेरपुरा , विकासखंड - विदिशा, जिला -विदिशा के अन्तर्गत् स्थित हैं। विद्यालय के एक ओर सरकारी आवास एवं दूसरी ओर गरीब वर्ग के निवास हैं, पीछे की ओर रेल पटरी के आस-पास मजदूर वर्ग के आवास हैं। अत: अधिकांश क्षेत्र में निम्न आय प्राप्त करने वाले लोगों का निवास हैं। यह मजदूर वर्ग सब्जी के ठेले, महिलाऐं घरों में कामकाज करके अपना जीवन यापन करती हैं। यही कारण हैं कि छात्राओं के माता-पिता शिक्षा के प्रति जागरूक नहीं थे। माता-पिता काम पर जाते थे तो छात्राऐं छोटे भाई बहनों की देखभाल में व्यस्त रहती थी अथवा माता-पिता के काम पर जाने पर , अब उनसे शाला में जाने के लिए कोई कहने वाला नहीं होता था।

विद्यालय में छात्राओं की संख्या 180 थी। आज यह संख्या बढ़कर 264 हो गई हैं। पूर्व में छात्राओं की उपस्थिति बहुत कम रहती थी, जो छात्राऐं विद्यालय आती थीं उनमे मध्यान्ह भोजन में रूचि रखने वाली छात्राओं की संख्या अधिक रहती थी। शाला प्रमुख ने छात्राओं की कम उपस्थिति का कारण जानना चाहा एवं पालकों के साथ संपर्क किया। विद्यालय का स्तर ठीक किया किन्तु उपस्थिति में बहुत कम सुधार हुआ जिससे शाला प्रमुख बहुत व्यथित हुईं| ऐसा लगता था कि छात्राऐं बेमन से विद्यालय में समय व्यतीत करती हैं। उनमें ''हमारा विद्यालय'' भावना का अभाव था। विद्यालय का वातावरण उन्हें स्वत: शाला आने के लिए प्रेरित नहीं करता था|

इसके बाद प्रधानाध्यापक क्षमता विकास प्रशिक्षण डाइट द्वारा विद्यालय के विकास शिक्षा की गुणवत्ता, नामांकन, ठहराव , वातावरण पर प्रशिक्षण दिया गया। शाला प्रमुख द्वारा इन सभी बिन्दुओं पर चिंतन किया एवं शाला परिवार के शिक्षकों के साथ निरन्तर कार्य करना शुरू किया । हर कार्य का मापन और मूल्यांकन शुरू किया| शाला प्रमुख के अनुसार आयामों को पूर्ण करने के लिए एक लिस्ट बनाई।

लेकिन अभी भी संसाधनों की कमी, वंचित वर्ग की छात्राओं की समस्याऐं, शैक्षणिक स्तर में सुधार, उपस्थिति, ठहराव प्राइवेट शालाओं में 25% आरक्षण के कारण पालकों का प्राइवेट विद्यालयों की ओर रूझान बहुत बड़ी चुनौती थी।

इन चुनौतियों से निपटने में शाला प्रमुख ने एक योजना बनाई कि क्यों न जनसहभागिता हेतु विद्यालय में समाजसेवी व्यक्तियों, संगठनों को आमंत्रित करना शुरू किया जाये। योजनाबद्ध तरीके से यह प्रयास किया गया। जिसके अच्छे परिणाम आने लगे ,शाला विकास के लिए शाला निधि से खेलकूद सामग्री सभी कक्षों में पंखों की व्यवस्था, वंचित एवं निर्धन वर्ग की छात्राओं की समस्या, पुस्तकालय एवं अन्य संसाधनों में बढ़ौत्तरी कठिन थी।

अतः योजनावद्ध तरीके से प्रवेश उत्सव, गणवेश वितरण, शिक्षक दिवस, गांधी जयंती, गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, हाथ धुलाई दिवस, मिल-वांचे कार्यक्रम, आनन्द उत्सव, बालसभा में शहर के प्रतिष्ठित समाजसेवी एवं महानुभावों को आमंत्रित किया गया। उन्हें शाला प्रमुख द्वारा विद्यालय की समस्याओं से अवगत कराया गया| समाजसेवियों द्वारा निःशुल्क उत्तर पुस्तिका वितरण किया गया |

<table>
<tr>
<td>  </td>
<td> 
</td>
</tr>
<tr>
<td>समाजसेवियों द्वारा निःशुल्क उत्तर पुस्तिका वितरण</td>
<td>समाचार पत्र में प्राकशित प्रधानाचार्य के सराहनीय कार्य</td>
</tr>
</table>

इससे जो छात्रायें सिर्फ इसलिए शाला में नहीं आती थीं कि उनके पास लिखने के लिए उत्तर पुस्तिकायें नहीं हैं, की समस्यायें दूर हुईं| खेलकूद की सामग्री नियमित छात्राओं को उपलब्ध कराई गईं, जिससे शाला में उपस्थिति बढ़ी हैं। शाला में इस वर्ष प्राइवेट शालाओं से 25 छात्राओं ने विद्यालय में अध्ययन हेतु प्रवेश लिया हैं। विद्यालय के लिए यह एक आदर्श स्थिति हैं कि प्राइवेट विद्यालय से छात्रायें शासकीय विद्यालय की ओर आकर्षित हो रही हैं।

छात्राओं को जनसहभागिता से भौतिक संसाधन ही उपलब्ध कराना हमारा उद्देश्य नहीं हैं। वरन सर्वांगीण विकास  हेतु विद्यालय में योग दिवस पर योगाचार्य जी द्वारा योगासन सिखाना, पोषण की पाठशाला, बालिका शिक्षा पर महिला बाल विकास विभाग द्वारा छात्राओं को महत्वपूर्ण जानकारी देना, वृक्षारोपण एवं पर्यावरण पर प्रेणास्पद मार्गदर्शन का लाभ दिया गया।

विद्यालय में विभिन्न अवसरों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं जिससे छात्राओं को अपनी प्रतिभा दिखाने का भरपूर अवसर मिलते हैं| छात्राओं को पुरस्कार मिलने से आत्मविश्वास बढ़ता हैं। छात्रायें नृत्य, भाषण, कविता, वाद-विवाद, क्विज प्रतियोगिता इत्यादि में पारंगत होती हैं और शाला का वातावरण आनन्ददायी बन जाता हैं। अतिथियों के शाला में आने से शाला व्यवस्थित रहती हैं। शिक्षक शैक्षणिक स्तर का भी ध्यान रखते हैं। संसाधनों की पूर्ति से प्रार्थना सभा, बालसभा, खेलकूद,  होने से प्रथम आयाम (शाला में उपलब्ध संसाधन) की पूर्ति होती हैं|

शिक्षकों के सहयोग से छात्रायें आई.सी.टी. , टेबलेट एवं स्मार्ट रूम का उपयोग करती हैं जिससे आयाम दो (विद्यार्थियों का सीखना -सिखाना ओर आकंलन) की पूर्ति होती हैं। वंचित वर्ग की छात्राओं को उत्तर पुस्तिका, गर्म स्वेटर, मोजे, मध्यान्ह भोजन वितरण से आयाम तीन (विद्यार्थियों की प्रगति उपलब्धि एवं विकास) की पूर्ति होती हैं। दिव्यांग छात्राओं का भी विशेष ध्यान रखा जाता हैं। छात्रायें विद्यालय से बाहर जाकर भी प्रतिभा का प्रदर्शन करती हैं। 150वीं गांधी जयंती के अवसर पर चार छात्राओं को भोपाल में राज्य बाल संरक्षण आयोग द्वारा चित्रकला एवं निबंध प्रतियोगिता के लिए पुरूस्कृत किया। अन्तर्राष्ट्रीय बाल महोत्सव विदिशा में आयोजित किया गया| जिसमें छात्राओं ने कई प्रतियोगिताओं में प्रस्तुति दी।

विद्यालय की एक छात्रा राष्ट्रीय मेरिट कम मीन्स परीक्षा में चयन हुआ। छात्राओं के आगे बढ़ते कदम एवं विद्यालय के वातावरण में सार्थक बदलाव शाला प्रमुख एवं शाला परिवार को गौरवान्वित करता हैं और नई ऊर्जा का संचार करता हैं।

विद्यालय में छात्राओं को दिये गये अधिगम अवसरों से उनमें नेतृत्व क्षमता, आत्म विश्वास, सहभागिता करना , पुरस्कार प्राप्त करने की ललक एवं ''अपना विद्यालय'' एक भाव जागृत हुआ हैं, जिससे छात्रायें विद्यालय से जुड़ती हैं। शिक्षा पूर्ण करने के उपरान्त कई स्मृतियां अपने साथ ले जाती हैं| शाला का प्रचार प्रसार करती हैं। कई अवसरों पर पालकों भी विद्यालय में आमंत्रित किया जाता हैं एवं छात्राओं की अधिगम समस्याओं का निराकरण किया जाता हैं। अभिभावक विद्यालय का अवलोकन करते हैं, अन्य विद्यालय से तुलना एवं आकंलन करते हैं एवं इस विद्यालय  का प्रचार-प्रसार करते हैं। विद्यालय  प्रमुख की नजर में यही प्रचार-प्रसार आज की विषम परिस्थितियों में भी विद्यालय में छात्राओं की उपस्थिति बनाये रखता हैं सामुदायिक सहभागिता इस दिशा में एक सकारात्मक एवं रचनात्मक कदम हैं।

**आगामी योजना:**

- विद्यालय में कम्प्यूटर लेब, प्रयोगशाला, व्यवस्थित पुस्तकालय , छात्राओं को संगीत सिखाने की सुविधा, आत्मरक्षा के लिए जूडो करांटे सिखाना इत्यादि हैं।

**डॉ साधना श्रीवास्तव**
**प्रधानध्यापक**
**शासकीय कन्या माध्यमिक शाला, माधवगंज शेरपुरा**
**विकासखंड - विदिशा, जिला- विदिशा, मध्यप्रदेश**

आयाम-4 कहानी क्रमांक-2

# अधिगम के लिए विद्यालय व समुदाय का सम्बन्ध
## शासकीय माध्यमिक शाला खमरिया
## विकासखंड- नरसिंहपुर, जिला - नरसिंहपुर, मध्यप्रदेश
## यू डाईस कोड- 23400121802

वर्तमान में अभिभावकों की मानसकिता कुछ इस तरह बदली हैं कि अधिकांश अभिभावक अपने बच्चें को सरकारी विद्यालय में पढ़ाना नहीं चाहते हैं। वहीं मध्यप्रदेश के एक गाँव के सरकारी विद्यालय में अपने विद्यार्थियों को दाखिला दिलाने अभिभावकों में होड़ मची हैं। कक्षा 1 से लेकर 8 तक की शिक्षा देने वाले इस शासकीय माध्यमिक शाला खमरिया ,का नाम गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिये नरसिंहपुर जिले के कोने- कोने में गूंज रहा हैं। जिला मुख्यालय नरसिंहपुर से 45 कि. मी. दूर जिले के अंतिम छोर पर स्थित ग्राम खमरिया के माध्यमिक विद्यालय में पदस्थ शिक्षकों की लगन और मेहनत ने सरकारी स्कूलों की तस्वीर बदली हैं। गुजरात के गिजुभाई की भांति प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में किये गये शिक्षकों के नवाचारों ने विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति अलख तो जगाई ही हैं साथ ही पढाई के प्रति उनकी रूचि भी जागृत की हैं।

ग्राम खमरिया (झांसीघाट) में 1913 में प्राथमिक स्तर से प्रारंभ हुये इस विद्यालय की नींव ही जनभागीदारी से हुई थी। 1952 में गांव के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ने लगभग 2.5 एकड़ का भूखंड विद्यालय के लिये उपलब्ध कराया था। तब से लेकर आज तक इस विद्यालय में जनभागीदारी सन केवल आधुनिक संसाधन जुटाये ,बल्कि अभिभावकों एवं विद्यार्थियों को भी अपनी ओर आकर्षित किया हैं।

विद्यालय के प्राचीन परिवेश में 1968 में ग्रामीण जनों ने अपने संसाधन से तीन कक्षों का भवन बनवाया था। जिसमें लगातार 2009 तक शाला संचालित होती रही, उस समय तक शाला परिसर में बाउंड्रीबाल, ग्राउंड, पेयजल एवं शौचालय की व्यवस्थायें नहीं थी। विद्यालय की इन्ही मूलभूत आवश्यकताओं को देखते हुये ग्रामवासियों एवं जनप्रतिनिधियों ने शाला के परिवेश को बदलने हेतु दृढ़ निश्चय किया।

शाला के प्राचीन भवन की अनुपयोगी सामग्री को शाला प्रबंधन समिति और ग्रामवासियों ने नीलाम करवाया और उससे प्राप्त राशि एवं जनभागीदारी से इकट्ठा की गई राशि से नवीन भवन का निर्माण करवाया गया। विद्यालय परिसर में छात्र -छात्राओं के लिये पृथक-पृथक शौचालय हैं| जिनमें 24 घंटे रनिंग वाटर की सुविधा उपलब्ध हैं। इसके साथ ही बालिकाओं की हाईजीन को ध्यान में रखते हुये शौचालय में इंसीनेटर तक बनाये गये हैं। शाला के शौचालयों की समुचित साफ- सफाई के लिये सफाईकर्मी की व्यवस्था हैं, जो नियमित रूप से शाला में आकर साफ-सफाई करते हैं| विद्यालय में गठित बाल कैबिनेट के सदस्य साफ सफाई व्यवस्था में अपना योगदान देते हैं।

विद्यालय परिसर में पेयजल सुविधा हेतु ओवर हैंड टैंक से सबमर्सिबल पंप की व्यवस्था की गई हैं। शाला में हाथ घुलाई यूनिट और वाटर कूलर की सुविधा भी विद्यार्थियों के लिये उपलब्ध हैं । जिससे हर समय विद्यार्थियों को साफ - स्वच्छ पानी पीने के लिये मिलता हैं। विद्यालय में विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु पुस्तकालय हैं, जिसमें बैठकर विभिन्न प्रकार की ज्ञानवर्धक पुस्तकें और दैनिक अखबार विधार्थी पढ़ सकते हैं।



**गणतन्त्र दिवस समारोह**

विद्यालय का मेन गेट को देखकर ही उसकी अंदरूनी व्यवस्थाओं का अनुमान लगाया जा सकता हैं। अंदर पहुंचते ही पूरे ग्राउंड में लगभग 12,000 वर्गफुट के क्षेत्रफल में लगे टाइल्स के साथ पूरे परिसर की साफ सफाई मन मोह लेती हैं। अलग- अलग कोने में कचरे के लिये कूड़ेदान रखे गये हैं।

प्रार्थना स्थल पर साउंड सिस्टम के साथ होने वाली प्रार्थना विद्यार्थियों को नैतिक बल प्रदान करती हैं। प्रार्थना सभा में प्रतिदिन राष्ट्रगीत, राष्ट्रगान के साथ कैलेण्डर, सूक्ति -वाचन, दैनिक समाचार वाचन के साथ विद्यार्थियों के जन्मदिन मनाकर उपहार देने की परम्परा हैं। विद्यालय में विद्यार्थियों की साईकिलों को रखने के लिये सुव्यवस्थित साईकिल स्टेण्ड भी बना हुआ हैं, जहां पर वे अपनी साईकिल खड़ी करते हैं।

विद्यालय आधुनिक तकनीक के उपयोग में भी पीछे नहीं हैं। विद्यालय में स्मार्ट क्लास हैं जिनमें एलसीडी प्रोजेक्टर और स्मार्ट टीवी के माध्यम से मनोरंजक ढंग से कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम के कठिन अंशों को शिक्षकों के द्वारा समझाया जाता हैं। सभी विद्यार्थियों को प्रोजेक्टर की सुविधा का उपयोग सुनिश्चित करने के लिये सप्ताह में एक दिन प्रत्येक कक्षा को स्मार्ट क्लास में शिक्षण प्रदान किया जाता हैं। शाला में ब्राडबैंड वाई-फाई, फोटोकापी मशीन, पूरे परिसर में साउंड सिस्टम के अलावा मॉनिटरिंग के लिये सीसीटीवी कैमरा भी लगे हुये हैं। सीसीटीवी कैमरों की मदद से शाला के हर कक्ष में होने वाली गतिविधि पर नजर रहने से अनुशासन भी बना रहता हैं और छात्राएं अपने आपको सुरक्षित महसूस भी करती हैं।

| | |
|---|---|
|  |  |
| **ICT का उपयोग करते हुए अध्ययन** | **ICT का उपयोग करते हुए मानिटरिंग** |

विद्यालय में प्राचार्य कक्ष , शिक्षक कक्ष और अतिथि कक्ष भी सुसज्जित तरीके से बनाये गये हैं पालक-शिक्षक मीटिंग आदि अवसरों के लिये अभिभावकों के बैठने के लिये सोफासेट और पर्याप्त संख्या में कुर्सियों की व्यवस्था हैं। पालक - शिक्षक संघ की मीटिंग में उपस्थित पालक , गणमान्य नागरिक उत्साहपूर्वक भाग लेकर शाला की उन्नति के लिये सुझाव देते हैं, उन्हे पूरा करने का भी प्रयास करते हैं।

शिक्षकों ने अपनी सूझबूझ से जन समुदाय को विद्यालय से जोड़ा तथा जनसहयोग से एकत्रित की गई राशि से क्रमशः विद्यालय की आवश्कताओं का घ्यान रखते हुये आवश्यक संसाधनों की पूर्ति की गई। विद्यालय में पर्याप्त क्लास रूम , प्रयोगशाला , पुस्तकालय , स्मार्ट क्लास , भंडार गृह के अलावा पर्याप्त संख्या में शौचालय हैं जहां पर सुविधाओं का उपयोग विद्यार्थियों द्वारा किया जा रहा हैं।

विद्यालय प्रधानाध्यापक ने डाइट नरसिंहपुर में लीडरशिप का प्रशिक्षण लिया, जिसमें सामुदायिक सहभागिता वाले सत्र में गहन विचार-विमर्श से नए-नए तरीके समझने व सीखने को मिले | इस सत्र की खासियत यह थी पहले अपने काम को समुदाय को दिखाईए, फिर उनसे सहयोग लीजिए| इस प्रशिक्षण में एक नई चीज और सीखने को मिली| कि समुदाय को विद्यालय में आमंत्रित करके उन्हें अपने कामों को दिखाया और बताया जाए तो उनके सहयोग से चुनौतियों को दूर किया जा सकता हैं| बैंक द्वारा विद्यालय को कम्प्यूटर सेट ,वाटर फिल्टर, पंखे आदि उपहार स्वरूप् दिये गये हैं।

स्वच्छ भारत अभियान की झलक शाला में बखूबी दिखाई देती हैं| विद्यालय का पूरा परिसर खुबसूरती के साथ स्वच्छता की मिसाल पेश करता हैं। शाला में बनाई गई हैंडवाश यूनिट में छात्र मध्यान्ह भोजन के पूर्व अपने हाथ धोते हैं। शाला परिसर की स्वच्छता के लिये कूड़ादान रखा गया हैं, जिसमें विधार्थी कक्ष एवं शाला परिसर का कूड़ा स्वयं उठाकर कूडा़दान में डालते हैं विद्यालय में बने आकर्षक शौचालय की साफ-सफाई के लिये ग्राम पंचायत के सहयोग से एक सफाईकर्मी की नियुक्ति भी की गई हैं, जो नियमित रूप से शौचालय की साफ-सफाई करता हैं। मध्यान्ह भोजन बनाने वाले किचिन शेड को साफ एवं स्वच्छ रखा जाता हैं। विद्यालय में स्काउट, गाइड एवं रेडक्रास के अलावा राष्ट्रीय सेवा योजना के दल भी बनाये गये हैं जो विभिन्न राष्ट्रीय पर्व एवं महापुरूषों की जयंती पर स्काउट बैंड के साथ रैली एवं अन्य जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से गांव में जन जागृति फैलाने की दिशा में काम कर रहे हैं।

विद्यालय में किये गये इन नवाचारों की वजह से ही विद्यालय के नामांकन में वृद्धि हुई हैं। विद्यालय में प्रवेश हेतु प्रोत्साहित करने के लिये शिक्षकों द्वारा पालकों से सतत संपर्क किया जाता हैं । यहां पर होने वाली गुणवत्तापूर्ण पढ़ाई के कारण विद्यालय का परीक्षा परिणाम भी सराहनीय रहता हैं। शाला में राष्ट्रीय पर्व और विभिन्न अवसरों पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता हैं। इसके अलावा विद्यार्थियों के मानसिक विकास हेतु निबंध, वाद-विवाद, भाषण ,चित्रकला आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन कर विद्यार्थियों को पुरुस्कृत भी किया जाता हैं।

विद्यालय में सह-शैक्षिक क्रियाकलाप के अंतर्गत खेलकूद में लगातार हर वर्ष विद्यालय से तैराकी व कबड्डी में 5 से 7 छात्र- छात्रा जिला, राज्य स्तर पर खेल प्रतियोगिता हेतु चुने गए हैं जिससे उनका शारीरिक एवं मानसिक विकास हुआ हैं|

छात्राओं को कुशल प्रशिक्षक के द्वारा आत्मरक्षा प्रशिक्षण दिया जाता हैं ,जिसमें ब्लैक-बेल्ट प्रमाण पत्र मिलता हैं। आत्मरक्षा प्रशिक्षण का सुखद परिणाम यह रहा कि 15 किलोमीटर की परिधि के आसपास के गांवों से छात्रायें निडर होकर सायकिल से विद्यालय आती-जाती हैं। बालिकाओं के प्रोत्साहन के लिये मेंहदी ,रंगोली, व्यंजन मेला जैसे आयोजन भी विद्यालय में होते रहते हैं। विद्यालय में व्यवसायिक शिक्षा से विद्यार्थियों को जोड़ने के लिये हेल्थ केयर तथा शारीरिक शिक्षा और खेलकूद के दो ट्रेड प्रारंभ किये गये हैं। प्रत्येक ट्रेड में 50-50 छात्र छात्राओं को इसमें प्रवेश दिया जाता हैं। जिसके परिणामस्वरूप विद्यालय में नामांकन में बढ़ोत्तरी हो रही हैं।

विद्यालय के शिक्षकों और पालकों के इस तरह के सम्मिलित प्रयास पूरे प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था के ढांचे को बदलने के लिये एक मिसाल बनकर उभरे हैं।

**आगामी योजना:**

विद्यालय प्रमुख की आगामी योजना शासन द्वारा निर्धारित कक्षावार, विषयवार लर्निंग-आउटकम्स हर बच्चा सीख जाए, इस हेतु निरंतर प्रयास करना हैं|

**नारायण गुप्ता**
**प्रधानाध्यापक**
**शासकीय माध्यमिक शाला खमरिया**
**विकासखंड- नरसिंहपुर जिला- नरसिंहपुर ,मध्यप्रदेश**

आयाम-4 कहानी क्रमांक-3

# विद्यालय प्रबंधन समिति एवं समुदाय की सहभागिता

## शासकीय संजय माध्यमिक विद्यालय, पुलिस लाइन नरसिंहपुर

## विकासखंड- नरसिंहपुर,जिला - नरसिंहपुर,मध्यप्रदेश

## यू-डाइस कोड - 2340012182

यह कहानी शासकीय संजय माध्यमिक विद्यालय, पुलिस लाइन नरसिंहपुर की हैं। जहाँ पर प्रधानाध्यापक ने मध्यान्ह भोजन नहीं करने की चुनौती को सहज स्वीकार किया और उस पर काम करना शुरू किया। जिसके क्रमिक प्रयासों का वर्णन आगे लिखा गया हैं।

विद्यालय में विद्यार्थियों को एक बड़ा वर्ग प्रायः मध्यान्ह भोजन ग्रहण करने से बचता था, जबकि विद्यालय में भोजन मेनू अनुसार स्वादिष्ट और पौष्टिक बन रहा था। प्रधानाध्यापक ने विद्यालय के शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों से विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय में भोजन नहीं करने पर विस्तार से चर्चा करना शुरु किया तो दो मुख्य कारण निकल कर सामने आये - पहला गम्भीर व संवेदनशील कारण पाया कि कुछ विधार्थी और उनके परिवार जातिगत भेद-भाव व ऊँच - नीच की भावना से ग्रसित हैं जिसके कारण विद्यार्थी मध्यान्ह भोजन ग्रहण नहीं करते हैं और प्रायः मध्यान्ह भोजन के समय से विद्यालय से भाग जाते हैं।

जिसका असर उनकी पढ़ाई पर भी पड़ रहा था। दूसरा कारण यह हैं कि अधिकांश विद्यार्थियों में व्यक्तिगत स्वास्थ्य एवं साफ-सफाई के प्रति जागरुकता का अभाव हैं जिसके कारण कुछ विधार्थी प्रायः उल्टी, दस्त, सरदर्द, पेटदर्द, चक्कर आना, कमजोरी, चिड़चिड़ापन, तनाव जैसे कारणों से अस्वस्थ रहते थे।

हमारे सामने अब तीन बड़ी चुनौतियां थीं। पहली चुनौती विद्यार्थियों के अंदर से जातिगत भेदभाव व ऊँच - नीच की भावना को जड़ से समाप्त कर सभी के प्रति समभाव जागृत करना, जिसके लिये वे बातचीत व समझने को तैयार नहीं थे। दूसरी चुनौती विद्यार्थियों में व्यक्तिगत स्वच्छता एवं साफ-सफाई की आदत डालकर स्वास्थ्य के प्रति जागरुक करना तथा उनको अपने आसपास के परिवेश को भी साफ रखने के लिये प्रेरित करना।

तीसरी चुनौती स्वास्थ्यगत् कारणों से विद्यालय नहीं आ रहे और भोजन ग्रहण करने से बचने के लिये विद्यालय से भाग रहे विद्यार्थियों की विद्यालय में नियमित एवं पूर्णकालिक उपस्तिथि बनाये रखना। अधिकांश विधार्थी आर्थिक रुप से कमजोर, गरीब एवं अशिक्षित मजदूर

परिवारों से आते हैं। तो कुछ विधार्थी शिक्षित अथवा अल्पशिक्षित मध्यम वर्गीय परिवारों से भी हैं। जिनमें एक ओर ऐंसे कुछ मध्यमवर्गीय शिक्षित / अल्पशिक्षित परिवार अभी भी रुढ़िवादी मान्यताओं के चलते धर्म, जाति, ऊँच - नीच की बेड़ियों से जकड़े हुये हैं और इन बेड़ियों को तोड़ने तैयार नहीं हैं।

दूसरी ओर मजदूर वर्ग के परिवारों में स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के प्रति अरुचि रहती हैं। जिससे अधिकतर विद्यार्थियों में पेटदर्द, सरदर्द, बुखार, उल्टी, दस्त जैसी बीमारियों की शिकायतें भी आम तौर पर बनी रहती हैं । इन दोनों ही कारणों से विद्यार्थियों की विद्यालय मे उपस्तिथि भी प्रभावित हो रही थी और विद्यार्थी भोजन में रुचि भी नहीं ले रहे थे।

विद्यालय में विभिन्न जाति वर्ग के कुल 252 छात्र - छात्रा दर्ज हैं - जिनकी संख्या इस प्रकार हैं - SC के बालक - 50, बालिका - 21 के बालक - 26, बालिका - 08, पिछड़ा वर्ग के बालक - 78, बालिका - 27 एवं सामान्य वर्ग के बालक - 28, बालिका - 14, इनमें से अल्पसंख्यक मुस्लिम बालक - 20, बालिका - 13 हैं। मध्यान्ह भोजन बनाने के लिये रसोईयों में 3 महिला अल्पसंख्यक वर्ग की हैं और 2 महिला पिछड़ा वर्ग की कार्यरत हैं ।

विद्यालय के शिक्षकों, एस.एम.सी. के सदस्यों एवं रसोईयों के साथ चर्चा कर सभी से इन दोनों ही समस्याओं को विद्यालय से खत्म करने के लिये सहयोग देने हेतु मानसिक रुप से तैयार किया। इसके समाधान के लिये दो प्रारुप तय किये । पहला जातिगत भेदभाव को खत्म करने के उपायों पर अमल करना एवं दूसरा स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के प्रति जागरुकता पर कार्य करना।

विद्यालय में इसकी शुरुआत प्रार्थना सभा से की गईं। प्रार्थना सभा आयोजित करवाने के लिए सभी जाति - धर्म के विद्यार्थियों को समान रुप से अवसर देना शुरु किया। फिर उनके साथ बैठना, खेलना, खाना, विद्यालय परिसर की सफाई करना और विद्यार्थियों से ज्यादा से ज्यादा बातचीत करना शुरु किया।

इन गतिविधियों में विशेषकर उन विद्यार्थियों को जरुर शामिल किया जो जातिगत भेदभाव व ऊँच - नीच की भावना के कारण दूर रहते थे। प्रार्थना सभा में जातिगत भेदभाव को दूर करने एवं सर्वधर्म समभाव जैसे विषयों पर उदाहरण, प्रसंग एवं कविता - कहानियों के माध्यम से समझाना शुरु किया, महापुरुषों के प्रेरक प्रसंगों को सुनाना शुरु किया।

शिक्षक सभी विद्यार्थियों के साथ मिलकर विद्यालय परिसर एवं कक्षा की साफ-सफाई में उनके साथ बराबरी से शामिल होने लगे। विद्यार्थियों के नाखून एवं बालों की कटाई, कपड़ों की सफाई एवं नियमित स्नान के बारे में पूछने लगे एवं उनको इसके लाभ बताते हुये नियमित साफ - सफाई करने के लिये प्रेरित करने लगे। सभी धर्म व जाति के त्यौहार व उत्सवों को विद्यालय में एक दूसरे के साथ साझा करना शुरु किया।

भोजन के पहले और बाद में विद्यार्थियों के साथ में खड़े होकर हाथ धुलाई करना शुरु किया। इसमें विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों, विद्यालय के शिक्षकों, अभिभावकों एवं बाल कैबिनेट के पदाधिकारियों को भी अपने साथ लिया। इस अवसर पर हाथ धुलाई एवं सफाई के महत्व एवं फायदे से विद्यार्थियों को अवगत करवाने लगे।

मध्यान्ह भोजन के रसोईयों को व्यक्तिगत साफ - सफाई के साथ ही स्वच्छता एवं शुद्धता से भोजन बनाने एवं परोसने के निर्देश दिये। भोजन में क्रमश: सलाद, मौसमी फल, पापड़, रायता, मिष्ठान आदि को भी शामिल किया। भोजन कक्ष की साफ - सफाई, खाद्य कचरा एवं अपशिष्ट पदार्थों का अलग - अलग डस्टबीन में निष्पादन, बर्तनों की नियमित एवं तरीके से साफ - सफाई, भोजन की गुणवत्ता आदि के बारे में स्पष्ट निर्देश दिये और शिक्षकों एवं बाल कैबिनेट को इसके अवलोकन की जवाबदारी सौंपी गईं। साथ ही विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों को भी समय-समय पर आकर अवलोकन करने का आग्रह किया।

विद्यालय में प्रतिदिन मध्यान्ह भोजन के समय  शिक्षक, अभिभावक, विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्य एवं बाल कैबिनेट ने पंक्ति में बैठकर विद्यार्थियों के साथ भोजन करना शुरु किया। इसमें  उन विद्यार्थियों को भी नियमित रुप से शामिल करने लगे जो पहले किन्हीं जातिगत भेदभाव के कारणों से भोजन करने से बचा करते थे। सभी विद्यार्थियों को भोजन परोसना एवं बारी - बारी से सबके साथ बैठकर भोजन करने के लिए प्रेरित किया

मध्यान्ह भोजन के दौरान भोजन से संबंधित कुछ रोचक, बालोपयोगी, ज्ञानवर्धक व मनोरंजक बातों पर भी चर्चा करना शुरु कर दिया। इससे भोजन करने वाले विद्यार्थियों की संख्या  और रुचि आश्चर्यजनक तरीके से बढ़ने लगी| पहले बहुत से विधार्थी अतिरिक्त भोजन लेकर उसे बाद में जूठन में फैंक दिया करते थे जो कि व्यर्थ जाता था। भोजन का एक भी दाना फेंका न जाये इस बात पर भी विशेष जोर दिया। भोजन पश्चात पुनः जूठी थालियों को एक डस्टबीन में रखवाना शुरु किया| जिससे अन्य स्थानों पर भी गंदगी न फैले, भोजन पश्चात पुनः साबुन से हाथ अच्छी तरह से धोने में शिक्षक भी विद्यार्थियों के साथ शामिल होने लगे। पहले विधार्थी किसी भी स्थान पर जूठा बचा हुआ भोजन फेंक दिया करते थे

जिससे कि विद्यालय परिसर में गंदगी हो जाया करती थी जिससे मक्खी एवं बदबू फैलने लगती थी। इससे भी बहुत से विद्यार्थियों को भोजन से अरुचि हो जाया करती थी। दूसरी ओर प्रार्थना सभा में रसोईयों द्वारा बरती जा रही स्वच्छता एवं शुद्धता की तारीफ करना शुरु किया। उनके कार्यो के लिये रसोईयों को सम्मानित किया। कक्षाओं में भी प्रतिदिन बैठक व्यवस्था ऐंसी बनाने लगे जिससे सभी धर्म - जाति के विद्यार्थियों को सभी के साथ बैठने का अवसर मिले। उनको बताया कि हाथों की नियमित साफ-सफ़ाई से जिन बीमारियों से बचा जा सकता हैं उनमें हैंजा, त्वचा रोग, नेत्र रोग, आंतो की बीमारी और संक्रमण से होने वाली अन्य बीमारियाँ शामिल हैं।

साबुन से हाथ धोने से हैंजा और न्यूमोनिया जैसी बीमारियों से बचा जा सकता हैं क्योंकि साबुन में ऐसे गुण होतें हैं कि वो इन बीमारियों से लड़ने में मदद करता हैं।

| | |
|---|---|
|  |  |
| **नियमित हाथ धुलाई कार्यक्रम** | **मध्यान्ह भोजन से पूर्व प्रार्थना करते हुए विद्यार्थी** |

विद्यालय द्वारा किये गये नियमित प्रयासों से विद्यार्थियों में अपेक्षित बदलाव आये। जब से विद्यालय में जातिगत ऊँच-नीच के भेदभाव की परेशानी दूर हुई हैं तब से विद्यार्थियों की दर्ज संख्या एवं नियमित उपस्तिथि में वृद्धि हुई हैं। इससे उनका शैक्षणिक स्तर पहले से बहुत अच्छा हो गया हैं। इसी का सुखद परिणाम हैं कि विद्यालय को जिला शिक्षा केन्द्र नरसिंहपुर के द्वारा समग्र शिक्षा के क्षेत्र में 75 प्रतिशत विद्यार्थियों के द्वारा दक्षता उन्नयन अन्तर्गत हिन्दी और गणित विषय में आवश्यक मूलभूत दक्षताओं को प्राप्त करने पर जिला स्तरीय " वाल आफ फेम " 2018 - 19 के लिये रजत पदक से सम्मानित किया गया।

विद्यालय से जातिगत भेदभाव की भावना अब विद्यार्थीयो के व्यवहार में खत्म हो गयी हैं। अब सभी विधार्थी एक दूसरे के साथ बिना किसी जातिगत ऊँच - नीच भेदभाव के मिलजुल कर रसोईयों के द्वारा भोजन प्राप्त कर भोजन ग्रहण करते हैं। जिससे अब उनकी पढ़ाई में भी नियमितता आ गयी हैं। वहीं विद्यार्थियों का व्यवहार सभी के प्रति भाईचारे व अपनेपन का हो गया हैं।

विद्यार्थी व्यक्तिगत साफ - सफाई, प्रतिदिन स्नान, भोजन के पहले व बाद में तथा शौच आदि के बाद साबुन से हाथ धोने पर ध्यान देने लगे हैं जिससे वो अब तनावमुक्त होकर अपेक्षाकृत ज्यादा स्वस्थ रहने लगे हैं। उन्हें पहले होने वाली आम बीमारियां अब खत्म हो गयी हैं। उनके चिडचिड़ेपन व झगड़ालू स्वभाव में सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं।

सभी विद्यार्थी शारीरिक स्वच्छता को अपनाने लगे हैं। संतुलित एवं पर्याप्त मध्यान्ह भोजन ग्रहण करने से विद्यार्थियों में दिन भर स्फूर्ति बनी रहती हैं। जिससे उनका पढ़ने में मन पहले की अपेक्षा अब कहीं ज्यादा लगने लगा हैं।

**आगामी योजना**

- शिक्षकों एवं शाला प्रबंधन समिति विद्यालय में एक उत्सव क्लब बनाने कि योजना हैं जिसमें सभी धर्म, जाति व सम्प्रदाय के त्यौहारों एवं उत्सवों को पारम्परिक तरीकों से विद्यालय में भी मनायें जांयेंगे जिससे सभी विद्यार्थी उत्सव में शामिल हों एवं एक दूसरे की संस्कृतियों से परिचित हों तथा उनमें मेलजोल व भाईचारा बढ़े।

**संजय कुमार चौबे**
**प्रधानाध्यापक**
**शासकीय संजय माध्यमिक विद्यालय, पुलिस लाइन**
**विकासखंड -नरसिंहपुर,जिला - नरसिंहपुर , मध्यप्रदेश**

आयाम-4 कहानी क्रमांक-4

# विद्यालय प्रधानाध्यापक नेतृत्व एवं समुदाय सहभागिता से शाला उन्नयन

## शासकीय माध्यमिक शाला सहजपुर,

## विकासखंड - शहपुरा ,जिला - जबलपुर, मध्यप्रदेश

## यू- डाईस कोड - 23390603302

| | |
|---|---|
|  |  |
| पालक संघ की बैठक | मध्यान्ह भोजन से पूर्व प्रार्थना करते हुए विद्यार्थी |

जबलपुर शहर के प्रसिद्ध जलप्रपात भेड़ाघाट के पास नर्मदा के पवित्र तट पर बसा एक छोटा सा ग्राम सहजपुर राष्ट्रीय राजमार्ग एन एच 7 के पास बरगद वृक्ष के नजदीक शासकीय माध्यमिक शाला सहजपुर स्थित हैं। यहां के समुदाय की सामाजिक स्थिति मिली--जुली हैं। गाँव में अधिकांश कुशवाहा, लढ़िया ,कोल जाति निवास करती हैं| ग्राम के व्यक्तियों का मुख्य व्यवसाय कृषि हैं। ग्राम में उप-डाकघर ,सेन्ट्रल बैंक ,सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र हैं।

प्रधानाध्यापक ने ग्राम सहजपुर के माध्यमिक विद्यालय की लचर व्यवस्था ,जीर्ण-शीर्ण विद्यालय भवन शिक्षकों एवं विद्यार्थी की अनियमित उपस्थिति देख कर दृढ संकल्प लिया कि इस विद्यालय में हर हाल में बदलाव लाकर एक आदर्श शाला बनाना हैं।

**शिक्षकों के साथ जनसंपर्क:**

ग्रामवासियों से चर्चा कर उन्हें विद्यालय में आमंत्रित किया। ग्रामवासियों एवं विद्यालय के शिक्षकों की बैठक आयोजित की और शाला में बदलाव लाने पर चर्चा की गईं। विद्यालय में कई चुनौतिया

थी विद्यार्थीयों की अनियमित एवं कम उपस्थिति थी| इन सबकों बदलने के लिए शिक्षकों के साथ मिलकर आत्म चिंतन किया और शाला विकास की योजना बनाई।

| | |
|---|---|
|  |  |
| **पालक संघ की बैठक** | **मध्यान्ह भोजन करते हुए विद्यार्थी** |

विद्यालय के शिक्षकों के सहयोग से भौतिक परिवेश में बदलाव की पहल की गई जिसमें विद्युत व्यवस्था हेतु जो कि जीर्ण-शीर्ण थी अधिकारियों से पत्र व्यवहार कर राशि जारी कराई और विद्युतीयकरण किया गया जिससे कक्षों में समुचित प्रकाश व्यवस्था हुई। शाला में जीर्ण-शीर्ण शौचालय थे जिनकी मरमम्त एवं बालक-बालिका हेतु पृथक--पृथक शौचालय बनाने के लिए अधिकारियों से संपर्क किया गया।

विद्यालय भवन खुला होने के कारण असामाजिक तत्वों द्वारा तोड-फोड एवं गंदगी की जाती थी। ग्रामवासियों से संपर्क एवं वरिष्ठ अधिकारियों से पत्र व्यवहार कर बाउण्ड्रीबाल की राशि स्वीकृत कराई फलस्वरूप बाउण्ड्रीबाल बनने से अब विद्यालय पूर्णतः व्यवस्थित एवं सुरक्षित हैं।

विद्यालय के सौन्दर्यीकरण के लिए विद्यार्थीयों द्वारा वृक्षारोपण किया गया जिसमें सभी ने पूर्ण जिम्मेदारी के साथ अपने उत्तरदायित्व निभाकर कार्य वृक्षों की सुरक्षा भी की। शाला विकास प्रक्रियाओं शाला प्रबंधन समिति की विशेष सहभागिता रहती हैं।

विद्यार्थियों को शुद्ध पेयजल मिल सकें इस हेतु शुद्ध पेयजल संयत्र लगवाया गया हैं। मध्यान्ह भोजन के पूर्व विद्यार्थी उचित तरीके से हाथ धोये इसका अवलोकन शिक्षको द्वारा प्रतिदिन किया जाता हैं। भौतिक परिवेश बदलने के बाद विद्यालय में विद्यार्थी की संख्या अधिक बढने लगी|

विद्यार्थियों की उपस्थिति बढानें के लिए शिक्षकों द्वारा सतत ग्राम संपर्क किया जा रहा हैं ताकि पालकों की शिक्षा के प्रति रूचि जागृत हो और अपने विद्यार्थियों को नियमित स्कूल भेजें।विद्यालय के क्षतिग्रस्त संपूर्ण अभिलेख संरक्षित किये गये।

**मध्यान्ह भोजन व्यवस्था में बदलाव:**

विद्यार्थियों का ठहराव होने पर स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया गया। शिक्षक विशेष ध्यान दे रहे हैं वर्तमान में सभी कक्षा कक्ष साफ रहते हैं| जिससे विद्यालय साफ लगने लगा। विद्यार्थी द्वारा शाला के विकास के लिए सत्त प्रयास किये जा रहे हैं। जैसे- शाला परिसर में वृक्षारोपण करना, सौन्दर्यीकरण करना आज शाला परिसर में हरे भरे वृक्ष हैं|

विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ लघु उद्योग से जोड़ा गया| जिसमें उनके भविष्य में काम आने वाले छोटे--छोटे लघु-उद्योगों की जानकारी कलश निर्माण,डस्टबिन निर्माण करने हेतु कार्यशला आयोजित की जाती हैं विद्यार्थीयों को लघु उद्योग में पारंगत किया जाता हैं।

| | |
|---|---|
|  |  |
| **विद्यार्थियों द्वारा डस्टबिन का निर्माण** | **लिखित मूल्यांकन** |

विद्यालय में विद्यार्थी के ठहराव से विद्यार्थी में शिक्षण के प्रति रूचि जागृत हो रही हैं। शिक्षक विभिन्न गतिविधि के माध्यम से शैक्षणिक गुणवत्ता बढाने का निरंतर प्रयास कर रहे हैं शैक्षणिक गुणवत्ता में वृद्धि हुई हैं हमारे द्वारा नियमित कक्षा अवलोकन किया जाता हैं और पन्द्रह दिवस में लिखित एवं मौखित मूल्यांकन लिया जाता हैं। विद्यार्थियों की लेखनी में सुधार के लिए घर से गृहकार्य करके लाने को दिया जाता हैं जिससे शब्दों एवं लेखनी में सुधार हो रहा हैं।

विद्यार्थियों को पृथक-पृथक प्रश्नों के उत्तर देने के लिए अवसर दिये जाते हैं। प्रभावी शिक्षण से विद्यार्थी शाला में ठहरने लगे हैं। जिससे उपस्थिति में वृद्धि हुई हैं। विद्यालय में बाल कैबिनेट टीम के द्वारा कमजोर विद्यार्थी को हिन्दी, गणित समूह में बैठकर सिखाया जाता हैं। मंच पर आने से झिझक दूर हो गई हैं। विद्यार्थीयों के शैक्षणिक विकास के अलावा अन्य गतिविधियां कराई जा रही हैं|

विद्यालय में दिव्यांग विद्यार्थी को भी आगे बढने के अवसर दिये जा रहे हैं और उन्हें विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु प्रेरित किया जा रहा हैं। जिसके साथ उनमें आत्मबल बढ रहा हैं। बाल सभा में समय पर क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा हैं सामान्य ज्ञान की जानकारी प्रार्थना सभा में विद्यार्थी को दी जा रही हैं।

इलेक्ट्रानिक मीडिया के माध्यम से विद्यार्थी पेंटिग कार्य में पारंगत हैं| विद्यार्थी वर्तमान में प्रेरणादायक पेंटिग कर रहे हैं। स्मार्ट क्लास के माध्यम से इलेक्ट्रानिक मीडिया में स्मार्ट क्लास का प्रभावी शिक्षण बनाने में उपयोग होता हैं। विद्यार्थी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से सीख रहे हैं। संपूर्ण विकास करने के लिए शिक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारी समय-समय पर मार्गदर्शन एवं दिशा निर्देश देते हैं|

**आगामी योजनाः**

- विद्यालय को आदर्श विद्यालय बनाने के लिए आगामी योजना हैं विद्यालय में समस्त विद्यालय को और आकर्षक बनाने के लिए प्रेरणादायक चित्रकारी करवाना। इन सभी कार्यो के लिए जनसमुदाय से सहयोग एवं वरिष्ठ अधिकारियों से पत्र व्यवहार करना। विद्यार्थियों के लिए फर्नीचर व्यवस्था उपलब्ध कराना खेल-कूद के लिए फिसल पट्टी, झूले लगवाना
- ग्राम के समस्त विधार्थी शासकीय माध्यमिक शाला में प्रवेश लें समुदाय को और सशक्त बनाया जायेगा। शाला का उन्नयन और बेहतर बनाया जायेगा। उपरोक्त कार्य निरंतर जारी रहेगें।

**श्रीमती लक्ष्मी पोर्ते**
**प्रधानाध्यापिका**
**शासकीय हाई विद्यालय सहजपुर**
**विकासखंड शहपुरा ,जिला- जबलपुर,मध्यप्रदेश**

आयाम-4 कहानी क्रमांक-5

# विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों का समुचित उपयोग

## शासकीय माध्यमिक विद्यालय ,अनुराधागली

## विकासखंड - गुना ,जिला - गुना, मध्यप्रदेश

## यू- डाईस कोड - 23070618544

| | |
|---|---|
|  |  |
| **शैक्षणिक भ्रमण** | **समुदाय में स्वछता जागरूकता अभियान** |

स्वतंत्रता के पूर्व ब्रिटिश सरकार का विश्राम गृह था सन 1935 शासकीय माध्यमिक विद्यालय के रूप में स्थापित हुआ संस्था शहर के बीच में स्थित हैं अधिकांश विद्यार्थी श्रमिक परिवार से आते हैं शिक्षकों ने मिलकर कार्ययोजना को पूर्ण करने के लिए प्राथमिकताओं का निर्धारण किया इसके लिए कार्यक्रम तैयार किया तथा सभी ने जिमेदारियो को पूर्ण करने का संकल्प लिया|

**समस्याएं:**

- विद्यालय का भवन प्राचीन एवं प्रांगण भी कच्चा था जो विद्यालय के वातावरण को दूषित कर रहे थे|
- कक्षों में विद्युत फिटिंग एवं शौचालय में पानी के व्यवस्था नहीं थी|

- रात के समय असामाजिक तत्वों का जमावड़ा एवं गली के लोग दिनभर पानी भरने के लिए परिसर में आते थे| विद्यालय प्रांगण पथरीला था जिससे खेलते समय विद्यार्थी को चोट लग जाती थी, बरसात के समय कक्षा तक पहुंचना मुश्किल था|

उपरोक्त समस्याओ का निराकरण कैसे किया जाये? शाला प्रबंधन समिति ,शिक्षकों ने कार्ययोजना बनाकर वरिष्ठ कार्यालय को समस्याओ से अवगत कराया तथा नगर पालिका से संपर्क किया| शासन द्वारा अतिरिक्त कक्ष के निर्माण हेतु राशि आबंटित की गयी और कक्षों का निर्माण हुआ जिससे विद्यार्थियों को बारिश और ठण्ड से निजात मिली|

विद्यालय में सफाईकर्मी का पद न होने के कारण प्रांगण के (शौचालय ) के नियमित सफाई नहीं हो पाती थी  बैठक में प्रस्ताव पारित कर सफाईकर्मी की व्यवस्था की गयी| समाजसेवी संस्थाओ के योगदान से सीलिंग फैन ,पानी की टंकी एवं नल फिटिंग की व्यवस्थाएं की गयी।

**व्यक्तिगत स्वछता** : छात्राएं महीने के विशेष दिनों में ड्रेस ख़राब हो जाने के कारण असहज महसूस करती थी वे उन दिनों विद्यालय आना बंद कर देती थी जिसके समाधान के लिए समाजसेवी संस्था के सहयोग से शिक्षकों ने विद्यार्थियों को गुड टच  और बेड टच एवं सेनेटरी नैपकिन के उपयोग एवं उन दिनों में व्यक्तिगत स्वछता पर जानकारी दी| जिसके परिणाम स्वरुप छात्राओं का उन दिनों में भी विद्यालय आना सहज हो गया। **भोजन एवं पेयजल स्वछता** : विद्यार्थियों की भोजन एवं पेयजल व्यवस्था सुव्यवस्थित नहीं थी|

**समाधान :**

भोजन के पहले बल कैबिनेट एवं सहयोगी शिक्षिका के मार्गदर्शन में विद्यार्थी पंक्ति में खड़े होकर साबुन से पांच चरणों में हाथ धोते हैं|

सामूहिक भोजन की उचित व्यवस्था की गयी| झूठा भोजन एक बाल्टी में इकट्ठा किया जाता हैं प्रत्येक विद्यार्थी को पानी पीने के लिए एक गिलास दिया जाता हैं|

उपरोक्त समस्या एक चुनौती लेकर सामने खड़ी थी क्योंकि विद्यार्थोयों को ही सबसे पहले जागरूक करना था जिसके लिए अनेक प्रयास किये गए जैसे- स्वछता पखवाडा , जागरूकता रैली , प्रार्थना सभा में गीत इत्यादि द्वारा शिक्षकों के मार्गदर्शन में विद्यार्थोयों को प्रेरित किया गया।

शिक्षकों  द्वारा विद्यार्थियों  को साथ लेकर स्लम एरिया में जाकर नागरिकों को स्वछता के सन्देश दिए। शाला प्रबंधन समिति के सदस्यों के माध्यम से अभिभावकों से संपर्क कर व्यक्तिगत साफ-

सफाई हेतु प्रेरित किया गया| शिक्षकों एवं शाला प्रबंधन समिति के सदस्यों के द्वारा गली -गली में जाकर स्वछता के पर्चे बांटे एवं दीवारों पर चिपकाये गये|

**आगामी योजना :**

- आगामी सत्रों में अधिक से अधिक विद्यार्थियों का प्रवेश विद्यालय में हो एवं शालात्यागी बच्चों को प्रवेश हेतु संकल्पित किया जाएगा हैं प्रत्येक कक्षा में फर्नीचर की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की जायेगी|

**श्रीमती रजनी गुप्ता**
**प्रधानाध्यापक**
**शासकीय माध्यमिक विद्यालय, अनुराधागली**
**विकासखंड - गुना ,जिला - गुना, मध्यप्रदेश**

आयाम-4 कहानी क्रमांक-6

# शैक्षणिक विकास में समुदाय का सहयोग
## शासकीय माध्यमिक विद्यालय आयपा,खपरिया
## विकासखंड - सिवनी मालवा ,जिला - होशंगाबाद , मध्यप्रदेश
## यू- डाईस कोड - 23370716102

| | |
|---|---|
|  |  |
| विद्यार्थियों द्वारा समूह गतिविधि में सीखना | शिक्षक सम्मान समारोह |

ग्राम का परिद्रश्य 1998 से पूर्व ग्राम आयपा जहॉ शाला स्थित हैं। विकासखण्ड सिवनी मालवा से 30 किलोमीटर दूर कच्ची रास्ता पर मॉ नर्मदा के किनारे बसा हुआ था। सन् 1998 से पूर्व यहाँ के लोगों की शिक्षा का औसत बालिका का कक्षा 5 वी तक 1 प्रतिशत एवं बालकों का 5 प्रतिशत हुआ करता था ग्राम की जनसंख्या लगभग 725 थी समुदाय का भाव शिक्षा के प्रति उदासीन एवं रूढीवादी विचार धारा वाला था। प्राथमिक शाला 1954 से संचालित थी जो प्रोन्नत होकर वर्ष 2008-09 में माध्यमिक शाला बनी।

शाला मे बदलाव लेन हेतु विभिन लक्ष्यों को सूचीबद्ध किया गया जोकि निम्नलिखित हैं|

- समुदाय का विश्वास जीतना।
- बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता लाना।
- 100 प्रतिशत विद्यार्थियों को शाला तक लाना।

- शिक्षा के प्रति उदासीन भाव को समाप्त करना।
- ग्राम में व्याप्त रूढिवादिता विचार धारा को बदलने का प्रयास करना।
- शाल भवन हेतु सामुदाय से सहयोग लेना।
- ग्रामवासियों, अभिभावकों में विद्यार्थियों को उच्च स्तर तक शिक्षा ग्रहण करवाने हेतु भावना जाग्रत करना।
- छात्र-छात्राओं में विद्यालय के प्रति लगाव जाग्रत कर उनके शैक्षणिक स्तर का विकास करना।

**बदलाव हेतु रणनीति -**

उक्त स्थिति में बदलाव की लालसा, कुछ अच्छा करने की मन में भाव और विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा तक ले जाने का संकल्प लिये अपने काम में लग गयाl अवश्यक संसाधनों के अभाव में इस डगर पर अकेला ही चल दिया, जो आसान न थी। पर बदलाव की स्थिति लाने का जुनून था, उसको समुदाय के सहयोग से करके दिखाया।

- सबसे पहले समुदाय से सतत् संपर्क।
- शिक्षक का समय पर शाला संचालन करना।
- अभिभावकों को शाला में नियमित आमंत्रित करना।
- छात्र-छात्राओं की उपलब्धियों को पालकों से साझा करना।

| | |
|---|---|
|  |  |
| **शारीरिक व्यायाम गतिविधि** | **शैक्षणिक भ्रमण** |

**शिक्षक की भूमिका** - समुदाय से सतत सम्पर्क करते हुये और शाला को समय पर संचालन कर विद्यार्थियों को शाला स्थल तक लाने में सफल रहा। और इसके बाद जो शाला विकास का कारंवा चला कि आज तक समुदाय से विद्यालय को जो मिला उसकी कल्पाना भी नहीं की थी। जहॉ 1998

के पूर्व शाला भवन बनाने के लिये जगह भी नहीं थी। आज समुदाय से ही 40 डिसमिल अपनी कीमती जगह दान में लेकर 04 भवन हैं जिनमें शाला संचालित हैं। विद्यार्थियों को बैठने हेतु सम्पूर्ण व्यवस्था समुदाय के ही जन सहयोग से प्राप्त कर निर्माण पक्की वाउन्ड्रीवाल 'जनपद निधि' से सम्मानीय जनपद सदस्य महोदय द्वारा कराई गई।

विद्यालय में अध्यापन कार्य अतिथि शिक्षको द्वारा शासन की व्यवस्था अनुसार कराया जाता हैं। फिर छात्र/छात्राओ का शैक्षणिक स्तर बहुत अच्छा होने के कारण माननीय कलेक्टर महोदय द्वारा "बाल ऑफ फेम" में गोल्ड चैम्पियन प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

**शाला की स्थिति -**

वर्तमान स्थिति में छात्र/छात्राओं की उपस्थिति लगभग 95 से 100 प्रतिशत रहती हैा शाला में सम्पूर्ण गतिविधियों में शिक्षण होता हैं| कक्षा 3 से 5 में कोई भी बच्चा अंकुर समूह में नही हैं। और कक्षा 6 से 8 में 90 प्रतिशत बच्चें उमंग समूह में हैं। ग्राम में शैक्षणिक स्तर वर्तमान में बालक एवं बालिका का स्नातक परा - स्नातक हैा और शासन के अधिकांश विभाग में अपनी सेवायें दें रहें हैं। जो कि ग्राम में 1998 से पूर्व मात्र 1 व्यक्ति सरकारी नौकरी में था और आज लगभग 10 सरकारी नौकरी में एवं अधिकांश शिक्षित होकर प्रायवेट सर्विस कर रहें हैं।

शाला प्रबंधन समिति के अध्यक्ष - उपाध्यक्ष हमेशा सहयोग हेतु तत्पर रहते हैं। बच्चों की रूचि पढाई के साथ शाला की समस्त गतिविधियों में सह भागी होती हैं। शाला प्रांगण में ही छोटा सा बगीचा बनाया हैं - जिसमे फूलदार पौधे में - चांदनी, गुलाब, गेंदे , मेंहदी, खुशबुदार जासौन के पेड - आवला, आम, अमरूद के पेड भी लगे हैं और जिसका संचालन बाल केबिनेट द्वारा किया जाता हैं। बाल केबिनेट ही पुस्तकालय का संचालन भी करते हैं। शाला को इस स्थिति तक लाने में सम्पूर्ण शाला परिवार, समुदाय विद्यार्थियों एवं शिक्षा विभाग के समस्त अधिकारीयों को सहभागी मानता हूॅ।

| | |
|---|---|
|  |  |
| **विद्यालय में खेल एवं योग गतिविधि आयोजन** | **योगाभ्यास** |

**आगामी योजना :**

- विद्यालय के बच्चों को शैक्षणिक स्तर में उच्च स्तर पर ले जाना।
- अधूरी बाउडरी बाल को पूरा करना|
- समुदाय द्वारा लगातार सहयोग लेने हेतु उनका विश्वास बनाये रखना।

**हरिओम सिंह यदुवंशी**
**प्रभारी प्रधानाध्यापक**
**शासकीय माध्यमिक शाला**
**विकासखण्ड - सिवनी - मालवा,जिला - होशंगाबाद, मध्यप्रदेश**

आयाम-4 कहानी क्रमांक-7

# विद्यालय नेतृत्व एवं विद्यार्थी अधिगम द्वारा विद्यालय विकास की योजना

## शासकीय पूर्वमाध्यमिक विद्यालय टिकुरी

## विकासखंड -रायपुर कर्चुलियान,जिला-रीवा ,मध्यप्रदेश

## यू- डाईस कोड - 23140201205

| | |
|---|---|
|  |  |
| प्रार्थना सभा | पी.टी.ए. बैठक |

विद्यालय रीवा शहर से 15 किलो मीटर दूर सिरमौर रोड में ग्रामीण अंचल टिकुरी ग्राम में स्थित हैं। ग्राम की 95 प्रतिशत आबादी का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं मजदूरी हैं। विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के माता-पिता की आर्थिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि कमजोर हैं। विद्यालय में सत प्रतिशत अध्ययनरत विद्यार्थी , अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन जाति एवं पिछड़ा एवं कमजोर वर्ग से हैं जिनके माता-पिता पढ़े लिखे नहीं हैं।

**समस्या एवं स्थिर बदलाव लाने में चुनौतियाँ:-**

विद्यालय में अधिकतर विद्यार्थी अनियमित आते हैं केवल 35 प्रतिशत विद्यार्थी ही नियमित विद्यालय आते हैं विद्यालय में आवश्यक संसाधनों की अत्यंन्त कमी थी शैक्षणिक गतिविधियाँ की दिशा में कार्य करने की आवश्यकता थी। प्रायोगिक उपकरणों का अभाव था। पुस्तकालय में पुस्तके कम थी एवं उनका सही उपयोग नही हो रहा था। विद्यालय में विद्यार्थी नामांकन की प्रभावशाली

वृद्धि नही हो पा रही थी। टिकुरी में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शत-प्रतिशत माता पिता मजदूरी करते हैं तथा पढ़े लिखे नहीं हैं। उनकी आर्थिक पृष्ठ-भूमि कमजोर हैं। वे शिक्षा के प्रति जागरूक नही हैं यह सबसे बड़ी चुनौती थी अधिकांश विद्यार्थीयों के माता-पिता ,बच्चों से घर का कार्य एवं मजदूरी करवाते थे| अभिभावक और शाला प्रबंधन समिति निष्क्रिय भूमिका में थे।

**समस्या समाधान की रणनीति एवं हल की प्रक्रिया का क्रमिक विवरण:-**

विद्यालय में शिक्षकों से विद्यार्थियों की उपस्थिति शत-प्रतिशत करने के लिये क्या उपाय किया जाये? समुदाय एवं शाला प्रबंधन समिति का विद्यालय से जुड़व हो एवं विद्यालय के विकास में अपनी अहम भूमिका का निर्वहन करे। गाँव के सरपंच एवं अभिभावकों तथा बाल कैबिनेट को सक्रिय किया जाये| विद्यालय के शिक्षकों एवं शाला प्रबंधन समिति के सदस्यों ने घर जाकर अभिभावकों को विद्यालय में बैठक के लिये आमंत्रित किया। भ्रमण कर अभिभावकों से यह आग्रह किया कि वे बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय में भेजे और यह कार्य विद्यालय समय के बाद किया जाये| अभिभावकों से आग्रह किया कि सभी अपने बच्चों को नियमित विद्यालय भेजें। जिससे विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति एवं ठहराव बढ़ता गया।

बाल कैबिनेट तथा अन्य नियमित विद्यालय आने वाले विद्यार्थियों को अपने पड़ोस के विद्यार्थियों को विद्यालय लाने के लिए प्रेरित किया| छात्रों में विद्यालय के प्रति लगाव एवं रूचि उपत्पन्न करने के लिये प्रार्थना के बाद विद्यार्थीयों के जन्मदिन पर ताली बजा कर उनका स्वागत करना एवं साप्ताहिक एक दिवस पर अनुशासन, पर्यावरण, स्वच्छता, धर्म निरपेक्षता एवं समाचार पत्रो का वाचन कार्यक्रम शुरू किया| जो स्थाई बदलाव में परिवर्तित हो गया।

साथ ही समय चक्र के अनुसार सभी कक्षाओं का नियमित संचालन किया गया| जिससे शिक्षक सक्रिय हो गये छात्र उपस्थिति एवं उनमें विद्यालय के प्रति रूचि उत्पन्न करने के लिये विद्यालय में पुस्तकालय कक्ष की व्यवस्था की गईं और विभिन्न प्रकार की पुस्तकों का संग्रह किया तथा प्रतिदिन पुस्तकालय में विद्यार्थियों को पुस्तक विद्यार्थियों को इसे करने की प्रक्रिया शूरू की गई परिणाम यह निकला की विधार्थी स्वयं पुस्तकालय में जाकर विभिन्न प्रकार की पुस्तके पढ़ने लगे। विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति बढ़ाने के लिये खेलकूद सामग्री की व्यवस्था की गई। विद्यालय में पर्यावरण को आकर्षक बानने के लिये विभिन्न प्रकार के पौधो का वृक्षारोपण करवाया गया।

प्रायोगिक उपकरणों की व्यवस्था करके पाठ्यक्रम के अनुसार प्रयोगिक कार्य विद्यार्थियों से शिक्षक करवाने लगे। विज्ञान क्लब का गठन करके विभिन्न वैज्ञानिक गतिविधियों को विद्यार्थियों द्वारा शिक्षकों के मार्गदर्शन में कार्य शुरू किया गया। आसपास की खोज में विद्यार्थियों ने काफी रूचि दिखाई एवं शैक्षिक भ्रमण अंर्तगत विद्यार्थियों को मुकुन्दपुर चिड़िया घर का भ्रमण कराया गया तथा वन जीव संरक्षण , वन्य प्राणियों वनस्पतियों के बारे में जानकारी दी गई।

| | |
|---|---|
|  |  |
| **अम्ल और क्षार का परिक्षण** | **विद्यार्थियों द्वारा बनाया गया सोलर कुकर** |

तात्कालीन मुख्य कार्यपालन अधिकारी रीवा को विद्यालय के प्रवेश उत्सव में आमंत्रित किया। उनके द्वारा विद्यालय के ग्राम पंचायत टिकुरी के सौजन्य से विद्यायल में तीन प्रकार के झूले लगवाये गये। जिससे विद्यार्थियों का विद्यालय से स्थाई जुड़ाव हुआ। एस एम सी बैठकों एवं पी टी ए बैठकों का आयोजन प्रत्येक माह नियमित रूप से होने लगा। जिससे अभिभावको का लगाव विद्यालय से बढ़ा और अभिभावक खुद अपने विद्यार्थियों को विद्यालय छोड़ने आने लगे जो उपस्थिति बढाने में मील का पत्थर साबित हुआ।

विद्यालय में बेहतर शैक्षणिक व्यवस्था पाठ्य सहगामी क्रियाओं के संचालन से एवं गतिविधि आधारित शिक्षण कार्य से प्रभावित हो कर ग्राम टिकुरी के अभिभावकों, आर्थिक रूप से संपन्न समाजसेवियों ने विद्यालय को उपहार देकर विद्यालय के संसाधनों को बढाने में अपना सहयोग दिया। जो विद्यालय समुदाय संबंध का अनुकरणीय उदाहरण हैं।

**बदलाव :**

विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्तिथि एवं ठहराव बहुत बड़ी चुनौती थी। नामांकित विद्यार्थियों की उपस्तिथि एवं ठहराव बढ़ाने के लिए विद्यालय के शिक्षकों के सहयोग से एवं गांव के बुद्धजीवियों के घर जाकर संपर्क करके उन्हें विद्यालय में आमंत्रित किया।

**विद्यालय में निम्नलिखित बदलाव हुए-**

- शाला प्रबंधन समिति की नियमित बैठक होने लगी, जिससे सदस्य नियमित बैठक में आ कर सहयोग देने लगे।
- गांव के समाजसेवी जिनकी आर्थिक पृष्ठ भूमि अच्छी थी| विद्यालय को आवश्यकतानुसार उपयोगी वस्तुएं (उपहार) देने लगे।

- शिक्षकों के सहयोग से विद्यार्थियों की  उपस्थिति में वृद्धि हुई।
- शिक्षकों के शिक्षण कौशल में बदलाव हुआ जिससे उत्कृष्ट अध्यापन कार्य करने लगे।
- प्रार्थना में विद्यार्थियों के जन्मदिन पर ताली बजाकर उनका स्वागत करने एवं प्रतिदिन (सप्ताह) में अनुशासन, पर्यावरण, स्वच्छता, धर्मनिपेक्षता इत्यादि विषयो पर जानकारी दी जाने लगी।
- विद्यालय में पाठ्य सहगामी क्रियाएं, खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, क्विज, रंगोली, सूर्यनमस्कार, योगा आदि नियमित होने लगी, जिससे विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि हुई।
- बाल कैबिनेट का गठन किया गया| जिससे छात्रों में नेतृत्व क्षमता का विकास हुआ।
- प्रयोगिक कार्य, विज्ञान क्लब, आसपास की खोज में विद्यार्थी रूच लेने लगे।
- पुस्तकालय से विद्यार्थियों को पुस्तक पढ़ने के लिए रूचि उत्पन्न हुई।
- पाठ्य योजना के अनुसार शिक्षक कक्षा में अध्यापन कार्य करने लगे एवं प्रतिदिन डायरी लिखने लगे।

| | |
|---|---|
|  |  |
| **अभिभावकों का सम्मान** | **विधार्थी द्वारा तेयार हारबेरियम** |

**निरंतरताः**

गुणवत्ता युक्त शिक्षा एवं नामांकन एवं उपस्थिति में लगातार वृद्धि हो रही हैं।

**आगामी योजनाएँ:**

- विद्यालय में अगले सत्र में विद्यार्थी के नामांकन में वृद्धि की जायेगी।
- शिक्षण व्यवस्था पूर्णतः क्रियाकलाप, गतिविधि आधारित होगी।
- पुस्तकालय में विभिन्न क्षेत्रो से सम्बन्धित पुस्तकों की व्यवस्था की जायेगी एवं पुस्तकों की संख्या  में वृद्धि की जायेगी।

- विद्यार्थियों को हाईटेक शिक्षण की व्यवस्था के लिए कम्प्यूटर की व्यवस्था की जायेगी एवं प्रोजेक्टर से अध्यापन की सुविधा प्रदान की जायेगी।
- राष्ट्रीय प्रतिभा खोज एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी और बेहतर तकनीक से की जायेगी।
- विद्यालय में बालिकाओं के लिए पृथक शौचालय की व्यवस्था की जायेगी।

समस्त विद्यालय परिवार जिला प्रशिक्षण संस्थान (डाईट) रीवा के प्राचार्य का आभारी हैं जिनके द्वारा समय समय पर विद्यालय को मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण दिया गया|

**महेन्द्र कुमार मिश्रा**
**प्रधानाध्यापक**
**शासकीय माध्यमिक शाला टिकुरी**
**विकासखंड -रायपुर कर्चुलियान, जिला-रीवा ,मध्यप्रदेश**

आयाम-4 कहानी क्रमांक-8

# उड़ान सफलता की
# शासकीय माध्यमिक विद्यालय, भोलहरा
# विकासखंड - ब्यौहारी,जिला-शहडोल,मध्यप्रदेश
# यू -डाइस कोड : 23160201601

| | |
|---|---|
|  |  |
| पालक संघ के सदस्यों के साथ भेंट | विद्यालय में सिलाई प्रशिक्षण |

**परिन्दों को मिलेगी मंजिल एक दिन**
**ये फैले हुए उनके पर बोलते हैं**
**वही लोग रहते हैं खामोश**
**जमाने में जिनके हुनर बोलते हैं**

**विद्यालय और उसके सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक संदर्भ :**

समुदाय की सामाजिक व आर्थिक स्थिति- इस ग्राम में एस.सी./एस.टी. व अन्य पिछडी जातियों की बहुलता हैं, जो आर्थिक व सामाजिक रूप से काफी कमजोर हैं। ग्रामीणों का मुख्य व्यवसाय मजदूरी व कृषि हैं। तथा कुछ ग्रामीण वनोपज पर भी आश्रित हैं।

**बदलाव क्या हुआ :**

- शैक्षणिक, सह शैक्षणिक व कौशल विकास।
- भौतिक संसाधन की पूर्ति व सामाजिक सहभागिता से बदलाव।

**समस्या :**

- विद्यार्थियों की संख्या के अनुपात में विषयवार शिक्षकों की कमी।
- सह शैक्षणिक गतिविधियों जैसे खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम व बागवानी का न होना।
- विद्यार्थियों के कौशल विकास कार्यक्रम का अभाव।

**समस्या समाधान की रणनीति एवं हल की प्रक्रिया का क्रमिक विवरण :-**

- प्रधानाध्यापक ने, समुदाय व वरिष्ठ अधिकारियों से समन्वय स्थापित कर आर.टी.ई. नियम अनुसार विषय शिक्षकों की पूर्ति की गईं।
- कमजोर विद्यार्थियों हेतु उपचारात्मक शिक्षण, गतिविधि आधारित, आओ करके सीखें, खेल-खेल में शिक्षा, आस-पास की खोज तथा अतिरिक्त समय देकर विद्यार्थियों की व्यक्तिगत शैक्षिक कमजोरियों को दूर करने का कार्य किया गया।
- विद्यालय में शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों के दक्षता स्तर अनुसार सहज, सरल गतिविधियों का संचालन कर उनके दक्षता स्तर में निरंतर सुधार हेतु प्रयास किया गया|
- विषय विशेषज्ञों के माध्यम से विज्ञान, गणित व मॉडल लैब के उपलब्ध संसाधनों का विषयवार विद्यार्थियों के हित में उपयोग सिखाया गया ।

- बाल कैबिनेट, शाला प्रबंधन समिति, पंचायत एवं समुदाय को सहभागी बनाकर मॉ-बेटी मेले का आयोजन कर छात्र उपस्तिथि बढ़ाने व विद्यार्थियों में नियमितता लाने का प्रयास किया गया ।
- खेलकूद व सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए खेल का मैदान, मंच एवं आवश्यक सामग्री की आपूर्ति की गई।
- विद्यार्थियों के कौशल विकास हेतु 3 सिलाई मशीन की व्यवस्था तथा बागवानी, वृक्षारोपण कार्यक्रम के माध्यम से कौशल विकास किया गया।

**शाला व्यवस्था : विद्यालय के विकास हेतु किये गये कार्य -**

**शैक्षणिक, सह-शैक्षणिक एवं कौशल विकास**

❖ **शैक्षणिक विकास** -

- शिक्षकों की कमी को दूर करने के लिए आर.टी.ई 35:1 अनुसार शिक्षकों के पदों की पूर्ति शाला प्रबंधन समिति, वरिष्ट अधिकारियों यथा संकुल प्राचार्य, जिला शिक्षा

अधिकारी से समन्वय स्थापित कर पर्याप्त विषयवार आवश्यक तानुसार अतिथि शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित की गई। तद्नुसार यह सम्पूर्ण विद्यालय विधिवत् बैठक व्यवस्था के साथ 14 शैक्षणिक कक्षों में संचालित किया गया। जिसका प्रतिफल यह रहा कि शत-प्रतिशत विद्यार्थियों ने सफलता अर्जित की।

**नवाचार :-**

- विज्ञान, गणित किट, मॉडल लैब, कम्प्यूटर आधारित शिक्षण की विशेष व्यवस्था व विषय विशेषज्ञों ने भी प्रभावी शिक्षण में मार्गदर्शन किया।
- मानचित्र, चित्रण व प्रस्तुतीकरण में सम्पूर्ण शालेय विद्यार्थियों की सहभागिता गतिविधि के माध्यम से कर सामाजिक विज्ञान विषय की कठिन अवधारणाओं को सहज, सरल व बोधगम्य बनाया गया।
- आसपास की खोज, विज्ञान मित्र क्लब एवं शैक्षिक भ्रमण के माध्यम से विभिन्न विषयों जैसे- विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, पर्यावरण एवं गणित की कठिन अवधारणाओं को सहज ढंग से स्पष्ट करने हेतु प्रत्येक विद्यार्थियों को गतिविधि से जोड़ा गया।

**शैक्षणिक विकास में नवाचारों से प्राप्त परिणाम** -

- राज्य शिक्षा केन्द्र के भ्रमण दल द्वारा विद्यालय नवाचारों की प्रस्तुति पर प्रसन्नता व्यक्त की गई एवं विद्यालय को जिला स्तर पर कलेक्टर महोदय द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।
- प्रधानाध्यापक को राज्य स्तरीय शाला सिद्धि चैम्पियन शालाओं के प्रस्तुतीकरण कार्यक्रम में सहभागिता का अवसर प्रदान कर सहभागिता प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।
- नेशनल मीन्स कम मेरिट स्कालरशिप प्रतियोगी परीक्षा में इस विद्यालय के 33 विद्यार्थियों ने सफलता अर्जित कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया हैं।
- इस विद्यालय के विद्यार्थियों ने अनवरत रूप से कहानी प्रतियोगिता में सहभागिता कर प्रतिवर्ष जिला स्तर तक अपना स्थान बनाया हैं।
- इस विद्यालय के विद्यार्थियों ने नवोदय प्रवेश परीक्षा, मॉडल व उत्कृष्ट विद्यालय प्रवेश परीक्षा में सतत् सफलता प्राप्त की हैं|

❖ सह शैक्षणिक विकास -

- विद्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रमों को श्रृंखलाबद्ध ढंग से सतत् चलाया जा रहा हैं जिसमें बाल कैबिनेट, एस.एम.सी. व समुदाय की सहभागिता रहती हैं। विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न राष्ट्रीय पर्वों, महापुरूषों की जयंतियों एवं वार्षिक कार्यक्रमों का भव्य

आयोजन किया जाता हैं, जिसमें शाला ग्राम के साथ ही आसपास के कई गांवों के लोगों, जन प्रतिनिधियों एवं अधिकारियों की उपस्थिति एवं मार्गदर्शन प्राप्त होता हैं।

इस विद्यालय का वार्षिकोत्सव मां-बेटी मेला की थीम पर भव्य आयोजन के साथ मनाया जाता हैं जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी की माताएँ, बहनें अनिवार्यत: सहभागिता करती हैं। इस आयोजन में विद्यालय के पूर्व विद्यार्थी बड़े उत्साह से सम्मिलित होते हैं। प्रतिवर्ष लगभग 1000 लोगों की सहभागिता रहती हैं। दूरस्थ ग्रामों दाल, मैर, खरहरा, चरका, भोलहरी, जमोड़ी, खुटेहरा, देवर्दा, कल्हारी, हनुमानपुर, पपोढ़ के विद्यार्थियों के माता व पिता सतत् रूप से मेले में आते हैं।

इसका प्रतिफल यह रहा हैं कि खरहरा जैसे शत-प्रतिशत आदिवासी जाति की सभी बालिकायें शिक्षित हो रही हैं, जो निश्चय ही बालिका शिक्षा के क्षेत्र में एक कीर्तिमान हैं । उक्त ग्राम की बालिकाओं ने नेशनल मीन्स कम मेरिट परीक्षा उत्तीर्ण की हैं व कई प्रतियोगिताओं में जिले में अपना स्थान बनाया हैं।

- खेलकूद गतिविधियों का संचालन प्रभावी ढंग से किया जाता हैं। इस हेतु बालीबाल, बैडमिंटन कोर्ट का निर्माण कराया गया हैं, जिसमें नियमित रूप से विद्यार्थियों द्वारा उक्त खेल खेले जाते हैं। इसके साथ ही खो-खो, कबड्डी, रिंगबाल, रस्सीकूद, ऊँची कूद, लम्बी कूद आदि खेल गतिविधियॉ नियमित हैं।

विद्यालय में नियमित पी.टी. एवं योग प्राणायाम कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। आर्ट आफ लिविंग विद्यालय द्वारा प्रत्येक विद्यार्थियों को सूर्य नमस्कार योग कार्यक्रम निर्धारित मापदण्डानुसार किये जाने पर प्रमाणपत्र प्रदान किया गया हैं।

❖ **कौशल विकास** - विद्यालय में अधिकांश विद्यार्थी बी.पी.एल. स्तर के तथा एस.सी./एस.टी. व ओ.बी.सी. हैं। इनके कौशल विकास हेतु सिलाई प्रशिक्षण विगत वर्षों से प्रदान किया जा रहा हैं ताकि यह अपने घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सिलाई, कढ़ाई व बुनाई सीखकर स्वाबलंबी बन सकें। इस कार्य में सम्पूर्ण बालिकाओं की रूचिपूर्ण सहभागिता रहती हैं। कक्षा 8 उत्तीर्ण होने तक उक्त कार्य में कुशल हो जाती हैं।

❖ **भौतिक संसाधन** -

- बालिका एवं बालक शौचालय,पानी की 24 घंटे उपलब्धता से युक्त हैं।
- विद्यालय पेयजल- पीने की टंकी जिसमें साफ पेयजल विद्यार्थियों के लिए सदैव उपलब्ध रहता हैं|
- हैंण्डवाश यूनिट- पानी की टंकी द्वारा हाथ धुलाई हेतु विद्यार्थियों को उपलब्धता सुनिश्चित की गई हैं।

**स्थिरता / सस्टेनेबिलिटी :**

- उपर्युक्त किए गये कार्य सतत् बने रहेंगे इसके लिए बाल कैबिनेट, एस.एम.सी. पंचायत एवं समुदाय का सहयोग लिया जाता रहेगा ।
- उपरोक्त कार्यों हेतु विद्यालय के पास पर्याप्त संसाधन हैं, जिससे ये सतत् चलते रहेंगे।

**आगामी योजना :**

- विद्यालय में सम्पूर्ण गतिविधियों का बाल कैबिनेट, एस.एम.सी. पंचायत एवं समुदाय के सहयोग से और भी प्रभावी संचालन किया जाना हैं।

**मंगलेश्वर सिंह**
**प्रधानाध्यापक**
**शासकीय माध्यमिक विद्यालय**
**विकासखंड - ब्यौहारी ,जिला-शहडोल,मध्यप्रदेश**



जिलों द्वारा राज्य स्तर पर सफलता की कहानियों पर तत्कालीन संचालक
राज्य शिक्षा केन्द्र के समक्ष प्रस्तुतिकरण के पश्चात कोर ग्रुप



जिलों द्वारा प्रस्तुत की गई कहानियों का चयन
करते हुए राज्य स्तरीय कोर ग्रुप